ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' ७९ म अंक ०१ अप्रैल २०११ (वर्ष ४ मास ४० अंक ७९)

वि दे ह *विदेह Videha*

विদেহ **http://www.videha.co.in** *विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly e Magazine*

नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA. Read in your own script Roman(Eng)Gujarati Bangla Oriya Gurmukhi Telugu Tamil Kannada Malayalam Hindi

ऐ अंकमे अछि:-

१. संपादकीय संदेश

२. गद्य

२.१.सुजीत कुमार झा- मैथिलीमे क्रिकेटक कमेन्ट्री

-

२.२. हम पुछैत छी: बेचन ठाकुरसँ मुन्नाजीक गपशप



२.३. *जगदीश प्रसाद मण्डल कम्प्रोमाइज नाटक आगाँ*



२.४. *मनोज कुमार मण्डल- "बाप भेल पित्ती" ओ "अधिकार" नाटक'क सफल मंचन*



२.५. *डॉ. कैलाश कुमार मिश्र-* मिथिला चित्रकला (पेटिंग): भूत, वर्त्तमान आ भविष्य

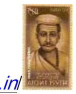
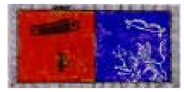
-

२.६.डॉ. कैलाश कुमार मिश्र कथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री

२.७.ज्योति सुनीत चौधरी शहरक होलिका दहन

-

२.८.डॉ. शेफालिका वर्मा रेखाचित्र ओ कत हेतीह

ISSN 2229-547X VIDEHA

३. पद्य

३.१.  शिवकुमार झा “टिल्लू” कविता रमा

३.२.  दुर्गानन्द मण्डल कविता हम देखलौं

३.३.  राजेश मोहन झा “गुंजन” कविता वसंत गीत

३.४.  ज्योति सुनीत चौधरी एकान्तक पुनरावृत्ति

३.५.  आशीष अनचिन्हार दू टा गद्य कविता

३.६.  नवीन कुमार आशा- तोहर गोर गोर गाल

-

३.७.  किशन कारीगर भिन भिनौज

३.८.  प्रभात राय भट्ट दूटा गीत

४. मिथिला कला-संगीत-१. श्वेता झा चौधरी

२. श्वेता झा (सिंगापुर)

-

५. गद्य-पद्य भारती: फूसि- वासुदेव सुनानी:ओड़ियासँ अंग्रेजी अनुवाद शैलेन राउत्रॉय आ अंग्रेजीसँ मैथिली गजेन्द्र ठाकुर द्वारा

-

भाषापाक रचना-लेखन -[मानक मैथिली], [विदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष (इंटरनेटपर पहिल बेर सर्च-डिक्शनरी) एम.एस. एस.क्यू.एल. सर्वर आधारित -Based on ms-sql server Maithili-English and English-Maithili Dictionary.]

VIDEHA FOR NON RESIDENTS

.Original Poem in Maithili by  Kalikant Jha "Buch" Translated into English by  Jyoti Jha Chaudhary

Maithili Novel Sahasrashirsha by  Gajendra Thakur translated into English by the author himself.

VIDEHA MAITHILI SAMSKRIT EDUCATION

(contd.)  बिपिन कुमार झा

लेटेक्सगणितीयटंकनशिक्षणपरिशीलनम्-2

विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक (ब्रेल, तिरहुता आ देवनागरी मे) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेल नीचाँक लिंकपर उपलब्ध अछि। All the old issues of Videha e journal (in Braille, Tirhuta and Devanagari versions) are available for pdf download at the following link.

विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक ब्रेल, तिरहुता आ देवनागरी रूपमे Videha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

विदेह ई-पत्रिकाक पहिल ५० अंक

विदेह ई-पत्रिकाक ५०म सँ आगाँक अंक

विदेह आर.एस.एस.फीड।

"विदेह" ई-पत्रिका ई-पत्रसँ प्राप्त करू।

अपन मित्रकेँ विदेहक विषयमे सूचित करू।

↑ विदेह आर.एस.एस.फीड एनीमेटरकेँ अपन साइट/ ब्लॉगपर लगाऊ।

ब्लॉग "लेआउट" पर "एड गाडजेट" मे "फीड" सेलेक्ट कए "फीड यू.आर.एल." मे http://www.videha.co.in/index.xml टाइप केलासँ सेहो विदेह फीड प्राप्त कए सकैत छी। गूगल रीडरमे पढ़बा लेल http://reader.google.com/ पर जा कऽ Add a Subscription बटन क्लिक करू आ खाली स्थानमे http://www.videha.co.in/index.xml पेस्ट करू आ Add बटन दबाउ।

मैथिली देवनागरी वा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ लिखि पाबि रहल छी, (cannot see/write Maithili in Devanagari/ Mithilakshara follow links below or contact at ggajendra@videha.com) तँ एहि हेतु नीचाँक लिंक सभ पर जाऊ। संगहि विदेहक स्तंभ मैथिली भाषापाक/ रचना लेखनक नव-पुरान अंक पढ़ू।

http://devanaagarii.net/

http://kaulonline.com/uninagari/ (एतए बॉक्समे ऑनलाइन देवनागरी टाइप करू, बॉक्ससँ कॉपी करू आ वर्ड डॉक्युमेन्टमे पेस्ट कए वर्ड फाइलकेँ सेव करू। विशेष जानकारीक लेल ggajendra@videha.com पर सम्पर्क करू।)(Use Firefox 4.0 (from WWW.MOZILLA.COM)/ Opera/ Safari/ Internet Explorer 8.0/ Flock 2.0/ Google Chrome for best view of 'Videha' Maithili e-journal at http://www.videha.co.in/ .)

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Book/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/

फोटो सभक फाइल सभ (उच्चारण, बड़ सुख सार आ दूर्वाक्षत मंत्र सहित) डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाऊ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव



भारतीय डाक विभाग द्वारा जारी कवि, नाटककार आ धर्मशास्त्री विद्यापतिक स्टाम्प। भारत आ नेपालक मटम पसरल मिथिलाक धरती प्राचीन कालहिसँ महान पुरुष ओ महिला लोकनिक कर्मभमि रहल अछि। मिथिलाक महान पुरुष ओ महिला लोकनिक चित्र **'मिथिला रत्न'** मे देखू।



गौरी-शंकरक पालवंश कालक मूर्त्ति, एहिमे मिथिलाक्षरमे (१२०० वर्ष पूर्वक) अभिलेख अंकित अछि। मिथिलाक भारत आ नेपालक

माटिमे पसरल एहि तरहक अन्यान्य प्राचीन आ नव स्थापत्य, चित्र, अभिलेख आ मूर्त्तिकलाक़ हेतु देखू **'मिथिलाक खोज'**

मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, सम्पर्क, अन्वेषण संगहि विदेहक सर्च-इंजन आ न्यूज सर्विस आ मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित वेबसाइट सभक समग्र संकलनक लेल देखू **"विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण"**

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाऊ।

"मैथिल आर मिथिला" (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जालवृत्त) पर जाऊ।

संपादकीय

रुबाइ : गजल

रुबाइक चतुष्पदीमे पहिल दोसर आ चारिम पाँती काफिया युक्त होइत अछि; आ मात्रा २० वा २१ हेबाक चाही।

रुबाइमे मात्रा २० वा २१ राखू। रुबाइक सभ पाँतीक प्रारम्भ दू तरहे शुरू होइत अछि- १.दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ (**मफ ऊ लु** ।।U)सँ वा २.दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व (**मफ ऊ लुन** ।।।) सँ। ओना फारसी रुबाइमे पाँती सभ लेल प्रारम्भक आगाँक ह्रस्व-दीर्घ क्रम निर्धारित छै, मुदा मैथिली लेल अहाँ २०-२१ मात्राक कोनो छन्द जे १.दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ (**मफ ऊ लु** ।।U)सँ वा २.दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व (**मफ ऊ लुन** ।।।) सँ प्रारम्भ होइत हो, तकरा उठा सकै छी। पाँती २० वा २१ मात्राक हेबाक चाही, (**मफ ऊ लु** ।।U) वा (**मफ ऊ लुन** ।।।) **सँ प्रारम्भ हेबाक चाही। मुदा एक रुबाइक वाक्य सभक बहर वा छन्द/ लय एकसँ बेशी तरहक भऽ सकैए।**

आन चतुष्पदी जाइमे पहिल दोसर आ चारिम पाँती काफिया युक्त होइत अछि मुदा मात्रा २०-२१ नै हुअए आ पाँती (**मफ ऊ लु**

।।U) वा (**मफ ऊ लुन ।।।) सँ प्रारम्भ** नै हुअए से रुबाइ नै मुदा "किता/कतआ"क परिभाषामे अबैत अछि।

रुबाइक चतुष्पदीक चारिम पाँती भावक चरम हेबाक चाही।

दूटा काफियाबला शेर जू काफिया कहल जाइत अछि।

एक दीर्घक बदला दूटा ह्रस्व सेहो देल जा सकैए।

दूटा काफियाक बीचमे सेहो रदीफ रहि सकैए, काफियाक भीतरमे सेहो रदीफ रहि सकैए; रदीफ ऐ तरहेँ अनुपस्थितसँ लऽ कऽ मात्रा, एक शब्द, शब्दक समूह वा वाक्य भऽ सकैत अछि जे अपरिवर्तित रहत। मुदा काफिया युक्त शब्द गजलमे बदलैत रहत।

गजल कोनो ने कोनो बहर (छन्द) मे हेबाक चाही। वार्णिक छन्दमे सेहो ह्रस्व आ दीर्घक विचार राखल जा सकैत अछि, कारण वैदिक वर्णवृत्तमे बादमे वार्णिक छन्दमे ई विचार शुरू भऽ गेल छल:- जेना

तकैत रहैत छी ऐ मेघ दिस

तकैत (ह्रस्व+दीर्घ+दीर्घ)- वर्णक संख्या-तीन

रहैत (ह्रस्व+दीर्घ+ह्रस्व)- वर्णक संख्या-तीन

छी (दीर्घ) वर्णक संख्या-एक

ऐ (दीर्घ) वर्णक संख्या-एक

मेघ (दीर्घ+ह्रस्व) वर्णक संख्या-दू

दिस (ह्रस्व+ह्रस्व) वर्णक संख्या-दू

मात्रिक छन्दमे द्विकल, ्रिकल, चतुष्कल, पञ्चकल आ षटकल अन्तर्गत एक वर्ण (एकटा दीर्घ) सँ छह वर्ण (छहटा ह्रस्व) धरि भऽ सकैए।

द्विकलमे- कुल मात्रा दू हएत, से एकटा दीर्घ वा दूटा ह्रस्व हएत।

त्रिकलमे कुल मात्रा तीन हएत- ह्रस्व+दीर्घ, दीर्घ+ह्रस्व आ ह्रस्व+ह्रस्व+ह्रस्व; ऐ तीन क्रममे।

चतुष्कलमे कुल मात्रा चारि; पञ्चकलमे पाँच; षटकलमे छह मात्रा हएत।

वार्णिक छन्द तीन-तीन वर्णक आठ प्रकारक होइत अछि जे “यमाताराजसलगम्” सूत्रसँ मोन राखि सकै छी।

आब कतेक पाद आ कतऽ काफिया (यति,अन्त्यानुप्रास) देबाक अछि; कोन तरहेँ क्रम बनेबाक अछि से अहाँ स्वयं वार्णिक/ मात्रिक आधारपर कऽ सकै छी, आ विविधता आनि सकै छी।

मैथिली हाइकू: संस्कृतमे सत्रह सिलेबलक मीटर सभ अछि- शिखरिणी, पृथ्वी, वंशपत्रपतितम, मन्दाक्रान्ता, हरिणी, हारिणी, नरदत्तकम, कोकिलकम, आ भाराक्रान्ता; ई सभटा वार्णिक छन्द अछि आ ऐ सभमे १७ वर्ण अक्षर होइत अछि (सभ पदमे १७ सिलेबल)। तँ ५/७/५ क क्रममे १७ सिलेबल लेल १७ वर्ण अक्षर मैथिली हाइकू लेल प्रयुक्त हेबाक चाही।

(विदेह ई पत्रिकाकेँ ५ जुलाइ २००४ सँ एखन धरि १०८ देशक १,७३७ ठामसँ ५८, ३४२ गोटे द्वारा विभिन्न आइ.एस.पी. सँ २,९७,१११ बेर देखल गेल अछि; धन्यवाद पाठकगण। - गूगल एनेलेटिक्स डेटा।)

२. गद्य

२.१.सुजीत कुमार झा- मैथिलीमे क्रिकेटक कमेन्ट्री

-

२.२. हम पुछैत छी: बेचन ठाकुरसँ मुन्नाजीक गपशप

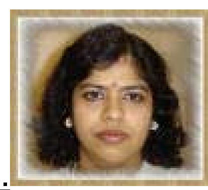
२.३.*जगदीश प्रसाद मण्डल कम्प्रोमाइज नाटक आगाँ*

२.४.*मनोज कुमार मण्डल- ''बाप भेल पित्ती'' ओ ''अधिकार'' नाटक'क सफल मंचन*

२.५. *डॉ. कैलाश कुमार मिश्र-* मिथिला चित्रकला (पेटिंग): भूत, वर्त्तमान आ भविष्य

-

२.६.डॉ. कैलाश कुमार मिश्र कथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री

२.७.ज्योति सुनीत चौधी शहरक होलिका दहन

-


२.८.डॉ. शेफालिका वर्मा रेखाचित्र ओ कत हेतीह


सुजीत कुमार झा

मैथिलीमे क्रिकेटक कमेन्ट्री

भारत आ पाकिस्तानबी मोहालीक पंजाब क्रिकेट एशोसिएशनक मैदानमे ३० मार्च कऽ भेल सेमीफाइनल म्याचमे एक सँ एक

इतिहास बनल तऽ दोसर दिस मैथिलीक इतिहासमे सेहो एकटा अध्याय जोडायल अछि । जनकपुर सँ प्रशारण होबयबला रेडियो मिथिला एफएम पुरे म्याचकेँ मैथिली भाषामे कमेन्ट्री कएलक अछि ।

बेरिया दू बजे सँ रातिक साढे ११ बजेधरि भेल ओ कमेन्ट्रीक क्रममे हरेक बलकेँ क्रिकेट खेलाडीसभद्वारा समिक्षा सेहो कएल गेल । अहि सँ पहिने रेडियोमे मैथिली भाषामे क्रिकेटक कमेन्ट्री नहि भेल छल ।

कमेन्ट्रीमे केँ सभ रहथि ?



कमेन्ट्रीक संचालन रेडियो मिथिलाक समाचार प्रमूख सुजीत कुमार झा आ वरिष्ठ समाचारदाता अतिश कुमार मिश्र कएलन्हि ।

कमेन्ट्रीमे समीक्षककेँ रुपमे जनकपुरक चर्चित युवा खेलाडीसभ शोभा कान्त पाण्डे, कुमार प्रसुन, राज मोहम्मद, अभिषेक झा आ सुनिल कुमार प्रसाद सहभागी रहथि ।

कमेन्ट्रीमे समीक्षकेँ रुपमे सहभागी सुनिल कुमार प्रसाद कहलन्हि क्रिकेटक प्रत्येक बलक विषयमे अपन धारणा राखब एकटा खेलाडीक रुपमे बहुत मज्जा आयल । मैथिलीमे कमेन्ट्री करब कोना कोना बुझाइत छल मुदा बाजहोमे सहज भेल आ एकटा अनुभव सेहो भेल दोसर समीक्षक अभिषेक झा कहलन्हि ।

कमेन्ट्रीक प्रभाव



भारत आ पाकिस्तानबीचक म्याच भेलाक कारण भारत आ पाकिस्तानक लोक मात्र नहि संसारभरिक लोक उत्सुकता सँ प्रतिक्षा कऽ रहल छल । सभगोटे म्याचक दृश्य देखय वा सुनय चाहैत छल । अहि दुआरे मिथिलाञ्चलमे सेहो ठाम ठाम बड़का बड़का प्रोजेक्टरसभ लागल छल । एहन प्रोजेक्टरक संख्या शहर वा अर्धशहरमे बेसी भेलाक कारण ग्रामीण क्षेत्र जनता एखनो रेडियो एफएमपर निर्भर रहैत अछि । ओतयकेँ जनता विशेष उत्साहकेँ संग रेडियो मिथिलाक कमेन्ट्री सुनलन्हि । ओना पहिल बेर मैथिलीमे कमेन्ट्री भेलाक कारण शहर हुए वा गाम सभ ठामक लोक

सुनलन्हि । एकरो प्रतिक्षा क्रिकेटे म्याच जकाँ देखल गेल छल । जनकपुर नगर पालिकाक पूर्व मेयर बजरंग प्रसाद साह कहलन्हि ‘हम तऽ टिभी सेहो देखी आ अपन भाषाक कमेन्ट्रीकेँ लगमे रेडियो राखि कऽ सुनी ।’ पूर्व मेयर साह पुरे कमेन्ट्री सुनलन्हि । महराज महेश ठाकुर कलेज दरभंगाक प्राध्यापक चन्द्रमोहन झा पड़वाक कमेन्ट्रीक अलग अनुभव रहलन्हि । ओ दरभंगा सँ जयनगर स्थित अपन गाम जा रहल छलथि । ट्रेन अबेर भेलाक कारण भारत पाकिस्तानबीचक म्याच कही छुटि नहि जाए ताहिकेँ लेल चिन्तित रहथि । मुदा ट्रेनमे चढलथि कि सभकेँ देखलखिन मोबाइल लगा कऽ क्रिकेटक कमेन्ट्री सुनि रहल । मैथिली आन्दोलन सँ सेहो जुडल पड़वा कहलन्हि ‘रेलक एकटा ढिब्बा मात्र नहि पुरे रेल क्रिकेटमय बनि गेल छल सभ एफएमपर अपना भाषामे कमेन्ट्री सुनि रहल छल । किछ गामसभमे लउडीस्पीकरमे एफएम लगा कऽ क्रिकेटक कमेन्ट्री सुनल गेल ।

मैथिलीमे कमेन्ट्रीक सोच कोना बनल ?

नेपालक एफएम क्षेत्रमे एकटा अलग पहिचान बनावयबला रेडियो मिथिला किछ नहि किछ नयाँ करैत रहैत अछि । नेपाल भारतक जतेक चुनाव होइत अछि ओकर मतदान दिनक आ मतगणना दिनक प्रत्येक्ष प्रशारण करैत अछि । क्रिकेटेकेँ सेहो कमेन्ट्री किया नहि कएल जाए इ मोन विश्व कप शुरु भेले दिन सँ रहल कहैत रेडियो मिथिलाक प्रबन्ध निर्देशक गोपाल झा साइत सायद भारते पाकिस्तानबीचक म्याचदिन जुडल छल उल्लेख कएलन्हि ।

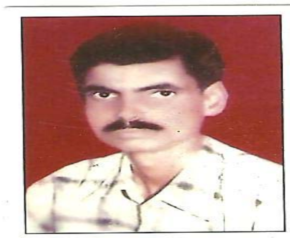
जनकपुर क्षेत्र लोक कमेन्ट्री हिन्दी वा अंग्रेजीमे सुनैत अछि एहनमे मैथिलीमे केहन हैत एकर चिन्ता छल प्रबन्ध निर्देशक झा कहलन्हि 'स्रोताक रेसपोन्स गजबकेँ आएल अछि अहि सँ हमसभ अति उत्साहित छी ।'

क्षेत्रीय स्तरक खेलमे सेहो मैथिलीमे कमेन्ट्रीक माँग

जनकपुर क्षेत्रमे वा नेपाल भारतक मिथिलाञ्चल क्षेत्रमे होवयबला क्षेत्रीय स्तरक क्रिकेट प्रतियोगितासभक कमेन्ट्री मैथिली भाषामे करावयकेँ जनकपुरक खेलाडीसभ माँग कएलन्हि अछि । क्रिकेट खेलाडी शोभाकान्त पाण्डे एफएममे मात्र नहि लउडीस्पीकर केँ माध्यम सँ होवयबला कमेन्ट्रीमे सेहो मैथिली भाषाक प्रयोग करवाक लेल सभकेँ अनुरोध कएलन्हि अछि ।

ऐ रचनापर अपन मतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

हम पुछैत छी:  बेचन ठाकुरसँ

 मुन्नाजीक गपशप

गमैया नाटकक परिवेशजन्य सृजनकर्त्ता एवं निस्वार्थ भावनासँ रचनारत श्री बेचन ठाकुर *जीसँ हुनक रचनात्मक प्रक्रिया मादे युवा लघुकथाकार मुन्नाजी द्वारा कएल गेल विभिन्न प्रश्नक उतारा अहाँ सबहक समक्ष देल जा रहल अछि।*

मुन्नाजी- प्रणाम ठाकुरजी!

बेचन ठाकुर- प्रणाम मुन्ना भाय!

मुन्नाजी- साहित्यक मुख्य: दू गोट विधाक एतेक रास प्रकारमे सँ अपने नाटकक सर्जनक प्राथमिकता देलौं किएक, एकर कोनो विशेष कारण तँ नै अछि?

बेचन ठाकुर- जखन हम परिवारक संग वा पड़ोसीक संग गमैया नाच वा नाटक देखैले जाइत रही तँ हुनके सभसँ प्रेरित भऽ नाटकक प्रति अभिरूचि जागल आ दिनोदिन बढ़ैत रहल।

मुन्नाजी- अहाँक नाटकक कथानकमे केहेन स्थिति वा परिवेशक समावेश रहैए।

बेचन ठाकुर- हमर नाटकक कथानकमे समाजक स्थिति-परिस्थिति आ ओकर यथासंभव समाधानक परिवेश रहैए।

मुन्नाजी- अहाँ जहिया नाटक लेखन प्रारम्भ केलौं, कहू जे तहिया तहिया आ आजुक सामाजिक, सांस्कृतिक उपरस्थापन वा बदलावक प्रति अहाँक नजरिये केहेन स्थिति देखना जाइछ?

बेचन ठाकुर- काओलेज जीवनसँ किछु-किछु लिखैक प्रयास करैत रहलौं जैमे नाटक मुख्य रहल। नाटकक दृष्टिएँ प्रारंभिक

सामाजिक आ सांस्कृतिक स्थिति तथा आजुक स्थितिमे बड़ड अंतर देखना जाइए। गमैया नाटक जस-के-तस पड़ल अछि, कनी-मनी आगू घुसकल अछि। मुदा शहरी नाटक हरेक क्षेत्रमे अपेक्षाकृत बड़ड आगू अछि।

मुन्नाजी- आइ नाटक कथानक, शिल्प एवं तकनीकी दृष्टिकोणे उम्दा स्तरक प्राप्तिक संग थियेटरमे आबि जुम अछि, अहाँ थियेटरमे प्रदर्शित आ गमैया नाटकक बीच कतेक फाँट देखै छी। आ किएक?

बेचन ठाकुर-   कथानक, शिल्प एवं तकनीकी दृष्टिएँ थियेटर आ गमैया नाटकमे बड़ड फाँट देखै छी। दर्शकक आ कलाकारक साक्षरता, स्त्री-पुरूषक भूमिका, साज-बाजक ओरियान, इजोतक जोगार इत्यादिमे बड़ड फाँट अछि। फलस्वरूप गमैया नाटक अपेक्षाकृत पछुआएल रहि गेल अछि।

मुन्नाजी- गाममे आइयो बाँस-बत्ती आ परदाक जोगारे नाट्य प्रदर्शन होइछ आ दर्शक सेहो जुटैछ तँ अपने गमैया नाटक अतीतक दशा आ भविष्यक दिशा मादे की कहब?

बेचन ठाकुर- गमैया नाटकक प्रदर्शनमे दर्शकक भीड़ रहैए। कारण गाम-घरमे मनोरंजनक साधनक सामूहिक स्तरपर अभाव छै। शहरक देखादेखी आब गामो-घरक स्थितिमे सुधार भऽ रहलैए। तैं गमैया नाटकक दशा भविष्यमे अवस्य सुधरत, विश्वास अछि।

मुन्नाजी- अहाँ एतेक रास विभिन्न तरहक नाटक लिख मंचन कैयौ कऽ हेराएल वा बेराएल रहलौं किएक?

बेचन ठाकुर- हम एकटा निजी शिक्षकक दृष्टिऍं अपन विद्यार्थीक बौद्धिक विकास हेतु अपन कोचिंगक प्रांगणमे कोनो विशेष अवसरपर तैमे खास कऽ सरस्वती पूजामे रंगमंचीय सांस्कृतिक कार्यक्रमक बेबस्था करै छी जैमे अपन निर्देशनमे विद्यार्थी द्वारा कार्यक्रम संपादित होइए। ओइ तरहेँ दस-बारहटा नाटकक मंचन सराहनीय ढंगसँ भऽ चूकल अछि। सूत्रक अभावमे हम हेराएल रही। मुदा आब प्राप्त सूत्र आ बेबस्थाक कृतज्ञ छी।

मुन्नाजी- अहाँ नाटकक अतिरिक्त आओर की सभ लिखै छी, सभसँ मनलग्गु कोनो विधाक कोन प्रकारक अहाँ प्रेमी छी आ किएक?

बेचन ठाकुर- हम नाटकक अतिरिक्त कथा, लघुकथा, राष्ट्रीय गीत, भक्ति गीत, कविता, टटका घटनापर आधृत गीत इत्यादि लिखबाक प्रयास करैत रहै छी। गोष्ठीमे उपस्थित भऽ कऽ कथा पाठो कलौंहें। सभसँ मनलग्गू विधा हमर संगीत अछि। ओना हमर प्रतिष्ठाक विषय गणित अछि।

मुन्नाजी- जाति-वर्ग विभेदक अहाँक रचनाकेँ कतेक प्रभावित कऽ पौलक अछि अपने ऐ जातीय विषमताक टापर-टोइयामे अपनाकेँ कतऽ पबै छी?

बेचन ठाकुर- जाति-वर्ग विभेद हमर रचनाकेँ अंशत: प्रभावित केलक। ऐमे हम अपनाकेँ अपन जगहपर अड़ल पबै छी।

मुन्नाजी- नाटक वा अन्यान्य रचनात्मक सक्रियताक मादे अपनेक अगिला रूखि की वा केहेन रहत?

बेचन ठाकुर- नाटक वा अन्यान्य रचनात्मक सक्रियताक मादे अपन अगिला रूखक संबंधमे किछु निश्चित नै कहल जा सकैए। इच्छा प्रबल अछि। जतए धरि संभव भऽ सकत करब।

मुन्नाजी- अपनेक अमूल्य उतारा हेतु बहुमूल्य समए देवाक लेल हार्दिक धन्यवाद!

बेचन ठाकुर- अपनेक प्रश्नक यथासंभव जबाबसँ अपनाकेँ गौरवान्वित बुझि अपनेकेँ हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करैत हमरो अपार हर्ष होइए।

ऐ रचनापर अपन मतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।



जगदीश प्रसाद मण्डल

कम्प्रोमाइज नाटक आगाँ तेसर दृश्य

(मवेशी हाट। माल-जालक संग अन्नो-पानि आ तीमनो-तरकारी।)

सोमन आ रामरूप

रामरूप- गोधियाँ, मालक मंदी आबि गेल अछि। दोसर कोनो बाटे नै सुझल तँए कनी घटो लगाकेँ बेच लेलौं। तोहर केहन रहलह?

सोमन- (मुस्कुराइत) *सुतड़ल गोधियाँ। सुपौलिया बेपारी पकड़ाएल। अपन मन तँ झुझुआइते छलए।*

सोमन- पौरूके तीन हजारमे बड़द कीनने छलौं। लार-पातक दुआरे अधो देह नै छलै। मनमे छलए जे पाँच बरख मारि-धुसि जोतबो करब आ तेकर बादो बेचब तैयो दाम आबिये जाएत मुदा की कहबह खूट्टा उसरन भऽ गेल।

रामरूप- अही दुआरे हमहूँ बेच लेलौं। तेहेन धन छलै जे मनसँ नै जाइ छलए मुदा रखबो करितौं तँ खाइले की दैतिऐ? महीना दिनसँ कपैच-कुपैच कऽ खाइले दै छेलिऐ। मुदा परसू आबि कऽ ओहो सैध गेल। गठ्ठा घर उछेहलौं जे दू दि चलल।

सोमन- घर उछेह खुआ लेलह तँ फेर घर?

रामरूप- खूट्टापर जेकरा बान्हि कऽ रखने छेलिऐ ओकरा जे अधो पेट खाइले नै दैतिऐ से केहेन होइत। जखने थैरमे जाइ छलौं आकि हुकड़ए लगै छलए। ओकर कलपैत मन देख अपनो मन कलैप जाइ छलए। तँए सोचलौं जे बरसात तँ अगिला साल आओत, बुझल जेतै।

सोमन- (मूड़ी डोलबैत) हँ से तँ ठीके। जैठीन एक दिन पार लगनाइ कठिन अछि तैठीन साल भरि आगूक सोचब बूड़िबक्रिये ने हएत।

रामरूप- आब तँ गामे चलबह किने?

सोमन- हँ। चलब तँ गामे मुदा एकटा काज पछुआएल अछि। चलह एक फेरा लगाइयो लेब आ आधमन चाउरो कीन लेब।

रामरूप- मन तँ हमरो होइए। मुदा मालक पएरे एलौं से थाकि गेलौं। मोटरी उठबैक साहसे नै होइए।

सोमन- यएह हद करै छह तोहूँ। चलह ने कोनो दोकानपर बैस जलखैइयो चाह करब आ दस मिनट जिराइयो लेब। बुझै छहक जे कहुना पाँच रूपैया किलो सस्ता भेटतह।

(चाहक दोकान। बेंचपर चाउरक मोटरी रखि रघुवीर सेहो बैसल)

रामरूप- कनी मोटरी घुसका लिअ। की छी मोटरीमे भाय?

रघुवीर- की रहत। चाउर छी। आब कि कोनो भात खाइ छी कि दिन घीचै छी।

रामरूप- से की?

रघुवीर- अपना सबहक जे अगहनी चाउरक सुआद आ मस्ती छै से थोड़े ऐ चाउरमे छै। तखन तँ अपन हारल......।

रामरूप- की भाव देलक?

रघुवीर- तँए, कनी मन मानलक। अगहनी चाउरसँ पाँच रूपैया सस्ता अछि।

रामरूप- तब तँ गोधियाँ अपनो सभ अध-अध मन कऽ लऽ लेब, से नीके?

सोमन- हमहूँ तँ यएह सोचि कऽ कहलियह। अखन जदी कनी भीरे हएत तँ तीन दिनक सिदहामे चारि दिन कटि जाएत।

रामरूप- हम सभ पछुआएल छी तै बीच सठतै ते ने भाय?

रघुवीर- से कि अद्दी-गुद्दी बेपारी छी। पाँच गो ट्रक भिड़ौने अछि। मुदा खड़तुआ जकाँ लेबाल ढेरिआएल अछि।

रामरूप- (मोटरी दिस देख) *तरजू देखै छी। अहूँ कोनो चीज बेचैले आएल छलौं?*

रघुवीर- हँ। तरकारी उपजेबौ करै छी आ हाटमे बेचबो करै छी। भगवान दसे कट्ठा खेत देने छथि। ओकरे बीचमे कल गरा देने छिऐ आ बारहो मास तरकारीये उपजबै छी।

रामरूप- सभ किछु बिक जाइए?

रघुवीर- (कनी ठमकि) *हँ बिक तँ जाइए मुदा.....?*

रामरूप- मुदा की?

रघुवीर- यएह जे तेहेन चिक्कनिया लेबाल सभ भऽ गेल अछि जे चीज चिन्हबे ने करैए।

रामरूप- से की?

रघुवीर- की कहब। लहटगर देख चीज कीनैए। कीड़ी-फतिंगीक बेसी दवाइ हम नै दै छिऐ। तैसँ देखैमे समान कनी दब रहैए।

रामरूप- अहाँ किअए नै दवाइ दै छिऐ?

रघुवीर- अपनो खाइ छी किने। देखैमे ने दवाइ देल नीक लगैए मुदा जहरक अं ओइमे रहिये जाइ छै किने। मुदा भगवान हमरो दिस देखै छथि?

रामरूप- से की?

रघुवीर- अखनो एहेन कीनिनिहार छथि जे हमरे चीजकेँ पसिन्न करै छथि। दू-पाइ महगो विकाइए। अहाँ सभ कतऽ आएल छलौं?

रघुवीर- (मिड़मिरा कऽ) *की कहब भाय, रौदीक मारल डिरिआइ छी। बड़द-गाए बेचए आएल छलौं। खुट्टा उसरन भऽ गेल।*

रघुवीर- (मूड़ी डोलबैत) *दोसर उपाइये कि अछि। तेहेन दुरकाल समए भऽ गेल अछि जे लोकोक प्राण बँचव कठिन भऽ गेल अछि तैठाम माले-जाल गेल किने। पहिने मनुक्खक जान बचाउ। तखन बुझल जेतै।*

रामरूप- अहाँ तँ हाटक तरी-घटी बुझैत हेबै। कहू जे एते-एते दूरसँ जे बेपारी सभ अबैए, से कना पार लगै छै?

रघुवीर- एकरा सबहक भाँज बड़ भारी छै। बड़का-बड़का बेपारी सभ छी। चरि-चरि, पँच-पँच बएच बनौने अछि। गामसँ हाट आ हाटसँ गाम एक बट्ट केने रहए। अड़डा बना-बना कारोबार पसारने अछि।

रामरूप- एकरा सभले रौदी-दाही नहिये छै।

रघुवीर- (अचंभित होइत) रौदी-दाही! हद करै छी अहूँ। सदिखन घैलापर पाइ चढ़ौने रहैए। जेना अपना सभले रौदी-दाही जनमारा छी तेना एकरा सबहक अगहन छी। एकबेर रौदी-दाही पौने सेठ बनि जाइए।

पटाक्षेप

चारिम दृश्य

(नसीबलालक घर। दरबज्जाक ओसारक कुरसीपर आँखि मूनि किछु सोचैत सोमनक संग सुकदेव अबैत)

सुकदेव- नीन छी यौ भाय?

(सुकदेवक बात सुनि आँखि ओलि धड़फड़ा कऽ)

नवीसवलाल- नै! नै! सुतल कहाँ छी। समैक फेरीसँ चिन्तित भऽ गेल छी। खेलहो अन्न देहमे नै लगैए। एक दिस जहिना पियास मेटा गेल तहिना आँखिक नीन्न सेहो। धैनवाद अहीं सभकेँ दी जे एहनो दुरकालमे हँसी-खुशीसँ जीबै छी।

सोमन- हद करै छी भाय! राँड़ कानए अहिवाती कानए तै लागल बरकुमारि कानए।

नसीवलाल- तोहर बात कटैबला नहिये छह सोमन मुदा......?

सोमन- मुदा की?

नसीवलाल- ओना, जे जते पछुआएल अछि ओ ओते समस्यासँ गरसित अछि। मुदा प्रकृतक विपैत सभपर पड़ै छै। तहूमे जे जते अगुआएल रहैए ओकरा ओते बेसी पड़ै छै।

सोमन- हँ, से तँ पड़िते छै।

नसीवलाल- बौआ, ओना तोहर उमेरो कम छह। एक गाममे रहितो कम सम्पर्कमे रहै छह। सुकदेव भाय बतरिया छथि। तहूमे बच्चेसँ दुनू गोरे गामसँ जहल तक संगे रहलौं। मुदा.....?

सोमन- मुदा की?

नसीवलाल- यएह जे आब बुझि पड़ैए जे जिनगिये ठका गेल।

सोमन- से की?

नसीवलाल- की कहबह आ कते कहबह। एकटा कोसिये नहैरिक बात सुनह। जहिया जुआने रही तहियेसँ कहै छिअह। बड़ लिलसा रहए जे कोसी नहैर बनत। डैम बनतै। नहरिक पानिसँ खेत पटत आ डैममे पनिबिजलीक यंत्र बैसतै। जैसँ तते बिजली हएत जे घर-दुआरक इजोतक संग करखन्नो चलत। मुदा सभ आशापर पानि हरा गेल। आइ जौं बिजली रहैत तँ गामो बजारे जकाँ भऽ गेल रहैत। मुदा......?

सोमन- मुदा की?

सीवलाल- यएह जे ई बात मनसँ मेटा गेल छलए जे एहेन रौदीसँ भेँट हएत। मुदा.....!

सोमन- मुदा की?

नसीवलाल- अपन संग-संग गामोक कल्याण भऽ जाइत। खेती-पथारीक संग एते छोट-पैघ करखन्ना बनि गेल रहैत जे बेरोजगार

ककरा कहै छै से तकनौसँ नै भेटैत। मुदा आइ देखै छी जे गाम-गामक लोक उजहि दिल्ली, कलकत्ता चलि गेल।

सोमन- हँ। से तँ भेल। मुदा माटियो फाँकि कऽ तँ मनुख नहिये रहि सकैए। जतऽ पेट भरतै ततऽ ने जाएत।

नसीवलाल- कहलह तँ बेस बात। मुदा गाम ताबे नै हरियाएत जाबे गामक बच्चा-बच्चा ठाढ़ भऽ अपन भविस दिस नै ताकत।

सोमन- एहेन समए भेने लोक केना ठाढ़ हएत?

नसीवलाल- सएह ने मनकेँ नचा रहल अछि। सभ माए-बाप बेटा-बेटीपर आशा लगौने रहैए जे हमरासँ नीक बनि धीया-पूता गुजरो करत आ नीक जकाँ आगूओ बढ़त। मुदा आँखि उठा दुनियाँ दिस तकै छी तँ चौन्ह आबि जाइए। बाल-बच्चाक कोन गप जे अपने बुढ़ाढ़ी भरिसक कनिते कटत।

सुकदेव- वएह बात मनमे औँढ़ मारलक भाय, तँए एलौँहेँ।

नसीवलाल- भाय, कि विचार करब। छुछ हाथ मुँहमे दैए कऽ की हएत। ने कियो गाम-घरक महौत बुझैए आ ने अपन शक्तिक

उपयोग करए चाहैए। सभ अपन अमूल्य श्रम-मेहनत- दोसराक हाथे बेच बजारक चकचकीमे बौआइ-ए।

सुकदेव- यएह सभ देख ने मन उछटि गेलहेँ। मुदा ककरा कहबै, के सुनत। अहाँ तँ गुल्ली-डंटासँ अखनि धरिक संगी छी। जे तीत-मीठ भेल तैमे तँ दुनू गोरे संगे छी।

नसीवलाल- (चानि परक पसेना पोछैत) *जहिना माटिक ईंटाकेँ वएह माटि पानिक संग मिल जोड़ि-साटि- दैत अछि तहिना ने मनुक्खोकेँ सिनेह साटि दैत अछि। मुदा सिनेह आओत केना? एक दिस धनक भरमार दोसर दिस भूखल पेट। तै बीच चोर-उचक्काक सघन बोन। केना लोकक परान बँचतै?*

सुकदेव- सोझे चिन्ते केनौ तँ नहिये हएत। नै भगलाहाले तँ गामोमे रहनिहारले तँ सोच-विचारए पड़त। जँ से नै करब तँ एक लोटा पानि आ एकटा काठियो मुइलापर के देत।

नसीवलाल- भाय, जहिया घोड़-दौड़ करैबला छलौं तहिया तँ करबे ने केलौं, आब आइ बुढ़ाढ़ीमे की हएत? किछु करए लगै छी तँ हाथ-पएर थरथराए लगैए। जैसँ बुझलो काजमे धकचुका जाइ छी।

सुकदेव- भाय, असे तँ जिनगीक संगी छी। जै संग लोक जिनगीक रस चुसैत अछि। तेकरो छोड़ि देब......?

नसीवलाल- (सुकदेवपर आँखि गरा मूड़ी डोलबैत) *भाय कहै तँ छी लाख टकाक गप। अपनो जोकर नै सोच-विचार करब तँ अकाल मरबो तँ नीक नहिये छी।*

सुकदेव- नीक अधला कतऽ छै भाय! भलहिं लोक अपना जिनगीकेँ स्वार्थी बुझे मुदा जाबे धरि अपने निरोग नै रहब ताबे धरि दोसराक विषयमे कि सोच आ कि कऽ सकै छी।

नसीवलाल- हँ, से तँ ठीके। विचारोकेँ प्रभावित तँ जिनगिये करैत अछि। नीक-नीक भाषणे करब आ अपन चालि छुतहरक अछि तँ ओइ भाषणक महौते की? जहिना विज्ञान सिद्धान्त-थियोरीक- संग व्यवहारो-प्रेक्टिकलो- कऽ कऽ देखबैत अछि तहिना ने नीतिशास्त्र सेहो अछि।

सुकदेव- अखन धरि यएह बुझि ने जीबैत एलौं, मुदा.......?

नसीवलाल- हँ, समैक चक्र तँ प्रवल अछिये मुदा एहेन प्रबल तँ नै अछि जेकरासँ सामना नै कएल जा सकैत अछि। जीता-जिनगी हारियो मानि लेब, ओहो तँ......?

सुकदेव- हँ, से तँ उचित नहिये अछि। मुदा समनो तँ.......?

नसीवलाल- हँ, कठिन अछि। मुदा लंका सन राक्षसक बीच हनुमान केना.......?

सुकदेव- हँ, तहिना।

नसीवलाल- (अपसोच करैत) पाछू घुरि तकै छी तँ बुझि पड़ैए जे जरूर चूक भेल। जना कोसी नहरि आ पनिबिजली लेल सामाजिक स्तरपर ठाढ़ भेलौं तेना व्यक्तिगत जीवनक बाट छुटि गेल।

सुकदेव- से की?

नसीवलाल- यएह जे जना मध्यम किसान छी। अपना खेत अछि। तेना ने खेतमे पानिक ओरियान केलौं आ ने परिवारो जोकर मशीन। जौं से केने रहितौं तँ भलहिं महग काज होइत मुदा जीबैक बाट जरूर धरौने रहैत।

सुकदेव- जखन चारि पएरबला हाथी चूकि जाइए तखन तँ मनुख दुइये पएरबला अछि। जै समए जे चूक भेल, आइ ने ओ समए बँचल अछि आ ने जिनगीक ओ अंश।

नसीवलाल- अखन धरि तँ हाले-चालमे समए निकलि गेल। काजक गप तँ छुटिये गेल। किमहर आएल छलौं?ऽ

सुकदेव- भाय, अहाँसँ नुकाएल नहिये छी। अखन तक जे जीबैक आस बटाइ खेत अछि ओ टुटि गेल। खेतबलाकेँ तँ खेत रहबे करै छन्हि मुदा बटेदारकेँ घरोक आँटा गील भऽ जाइ छै।

नसीवलाल- दुर्भाग्य अछि भाय।

सुकदेव- जकरा सोन छै ओकरा पहीनिनिहार नै छै आ जे पहीरिनिहार अछि ओकरा सोन नै छै।

नसीवलाल- *से तँ अछिये। गामक बारहआना खेत नोकरिहाराक अछि। जे खेती नै करैत अछि। जखन कि बारहआना लोक खेतीपर जीबैत अछि। मुदा कोन दुख एहेन छै जेकर दवाइ नै छै।*

सुकदेव- भारी बनर फाँसमे पड़ि गेल छी। अखन तक खेती छोड़ि दोसर लुरि नै सीखलौं। खांहिसो नै भेल। घरसँ बाहरो जाएब से कोन लुरि लऽ कऽ जाएब। भीख मांगि खाइसँ नीक अन्न-पानि बेतरे घरमे प्राण तियागि देब हएत। अगदिगमे पड़ि गेल छी।

नसीवलाल- *अहूँसँ बेसी तँ अपने पड़ि गेल छी। अहाँ तँ नै ऐ गाम ओइ गाम जा कऽ कमाइयो-खा सकै छी मुदा.....।*

सुकदेव- यएह बात मनमे अहुरिया काटि रहल अछि। जहिना संग-मिल एते दिन कटलौं तहिना आगूओ केना कटत, तेकर......?

नसीवलाल- *कनितो जीब। सेहो नीक नहिये।*

(कर्मदेव आ सोमनक प्रवेश)

नसीवलाज- *भाय, मन तँ अखनो तेहेन हुड़कैए जे शेष जिनगी जहलेमे बिताएब मुदा बुढ़ाढ़ी.....। नवतुरियामे समाजक प्रति*

कोनो रूचिये नै अछि। रूचियो केना रहत। तहिना परचा पोस्टरमे परिवारक परिभाषा दैत अछि तहिना समाजक कोन बात जे माइयो-बापकेँ परिवारसँ लोक अलगे बुझैए।

कर्मदेव- काका, हमहूँ सएह पुछए एलौं जे एहेन समैमे घरसँ बिना भगने केना जीब?

नसीवलाल- बौआ, तोरे सभपर समाजक दारो-मदार अछि। मुदा जखन तोंही सभ चिड़ै जकाँ उड़ि पड़ा रहल छह तखन तँ समाजक-गामक- भगवाने मालिक।

सोमन- ककरापर करब सिंगार पिया मोरा आन्हर हे।

कर्मदेव- काका, जँ जीबैक बाट भेट जाएत तँ किअए भागब?

नसीवलाल- बौआ, तूँ तँ पढ़ल-लिखल नौजवान छह। तोरामे एते शक्ति छह जे किछु कऽ सकै छह। आशा जगाबह।

कर्मदेव- अखुनका समैसँ जे अपन तुलना करै छी तँ बुझि पड़ैए जे करिया बादल लटकल भादोक अमवसियाक बारह बजे रातिक बीच पड़ल छी।

नसीवलाल- पढ़ि-लिखि कऽ एते निराश किअए छह?

कर्मदेव- बुझि पड़ैए जे एहेन पढ़ाइ पढ़ि लेलौं जे ने घरक रहलौं आ ने घाटक।

नसीवलाल- ओना जीबैक बाट व्यक्ति-विशेष सेहो बनबैए आ बना सकैए। मुदा समाजकेँ बनने बिना जहेन हेबाक चाही से नै बनि सकैए। तँए बेगरता अछि जे दुनू संग-संग बनए। जइले तोरे सन-सन नवयुवक अपेकछा अछि। फाँड़ बान्हि मैदानमे कुदए पड़तह।

कर्मदेव- कियो तँ काजे देखि ने फाँड़ बान्हत?

नसीवलाल- (अर्द्ध हँसी हँसि) अइले समाजकेँ जगबए पड़तह। जखने समाज नीन तोड़ि सुनत तखने ओछाइन समेटि घरसँ बहरा रस्तापर आबि ठाढ़ भऽ जाएत। जखने ठाढ़ हएत तखने नव सुर्जक रोशनीमे अतीतक गौरव देखत।

कर्मदेव- की गौरव?

नसीवलाल- मिथिला दर्शनक गौरव देखैक लेल ओकर बनैक प्रक्रिया देखए पड़तह। संयुक्त परिवार बजनहि नै, बनैक आ चलैक ढंग घड़ए पड़तह। जहिना कोनो बाट कोनो स्थान धरि पहुँचबैत तहिना मिथिला दर्शन छी।

कर्मदेव- की दर्शन?

नसीवलाल- एते धड़फड़मे नै बुझि सकबहक। अखन हमहूँ औंगताएल छी। मालो-चाजकेँ पानि नै पीयेलौंहेँ, हुकड़ैए।

कर्मदेव- तखन?

नसीवलाल-   सौंसे समाजक बैसार ब्रह्मस्थानमे करह। सबहक विचारसँ एकटा रास्ता ताकि आगू डेग उठाबह।

कर्मदेव- आइये बैसार करब।

नसीवलाल-   एते अगुतेने काज नहि चलतह। कौल्हुका समए बना काने-कान सभकेँ जना दहुन।

कर्मदेव- बेस।

पटाक्षेप।

क्रमश:

ऐ रचनापर अपन मतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

मनोज कुमार मण्डल

“बाप भेल पित्ती” ओ “अधिकार” नाटक’क सफल मंचन

चनौरागंज, मधुबनी।

वसंतक वेलामे सरस्वती पूजाक शुभ अवसरपर जे.एम.एस. कोचिंग सेंटर केर संस्थापक सह शिक्षक श्री बेचन ठाकुर जीक रचित दू गोट नाटकक मंचन कोचिंगक बालक-बालिका द्वारा कएल गेल। पहिल नाटक “बाप भेल पित्ती” सतौत माएक नाकारात्मक चरित्रपर आधारित छल। ऐ सम्पूर्ण नाटकक सफल प्रस्तुति कोचिंगक बालिका द्वारा कएल गेल। स्त्री, पुरूष दुनूक भूमिका बालिका सभ केलनि।

नाटकक सफल मंचनक श्रेय श्री बेचन ठाकुरकेँ देबामे कनियो असोकर्ज नै कारण नाटक लिखबासँ लऽ कऽ निर्देषन धरि ठाकुरजी स्वयं केलाह। ऐ नाटकक प्रस्तुतिसँ बुझि पड़ल जे ठाकुरजी समाजसँ कतेक सरोकार रखै छथि आ समाजक कतेक

सूक्ष्म अध्ययन करै छथि। गाम-घरक परिवेश रहितो दर्शक धन्यवादक पात्र छथि जे नाटक देखबामे भाव-विभोर भऽ गेल छलाह।

दोसर लघु नाटक छल ''अधिकार'' ई नाटक सूचनाक अधिकारसँ सम्बन्धित ''बेस्ट सिटिजन अवार्ड''सँ पुरस्कृत मो. मजनूम नवादपर आधारित छल। ऐ नाटकक प्रस्तुति संस्थानक बालक द्वारा कएल गेल। सभसँ महत्वपूर्ण बात ई अछि जे दर्शकक पहिल पतियानीमे बैस मो. मजनूम नवाद सेहो आदिसँ अंत धरि नाटकक आनंद लेलाह। संगे चनौरागंगक अगल-बगल जेना बेरमा, मछधी, सिमरा, कनकपुरा, चनौरा, जगदर, रबारी, विशौलक लोक सभ दर्शक रूपमे उपस्थिति रहथि। हजारोक संख्या कहबामे कम बुझना जाइ छल। किछु लोक एहनो भेलाह जे अपन भाव मंचपर उपस्थित भऽ कऽ अभिव्यक्त केलथि। जैमे श्री कामेश्वर कामति, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, श्री गोविन्द झा, श्री चेत नारायण साहु, श्री रमेश प्रधान, श्री विपिन साहु, श्री महावीर साहु, श्री बहादुर ठाकुर, श्री मनोज कुमार मण्डल इत्यादि प्रसन्न भऽ नाटककार सह आयोजन कर्ता माने मंचक श्री बेचन ठाकुरजीकेँ धन्यवाद ज्ञापनक संग-संग कलाकार-विद्यार्थी-सभकेँ प्रोत्साहन केलकनि। उपस्थित श्रोता सभ नाटकक विषय-वस्तुसँ काफी प्रभावित भेलाह। जेकर कारण नाटकक भाषा सेहो स्पष्ट रूपमे देखार भेल।

ऐ नाटकक मंचनसँ आ श्रोता-दर्शकक उपस्थिति आ लगावसँ ई स्पष्ट देखार भेल जे जौं अहिना मैथिली नाटकक संचालन मिथिलाक गामपर हुअए तँ मैथिलीक विकास माने मिथिलाक विकासक प्रेमी-साहित्यकार-अपन विचारकेँ परोसबामे तेजी आनि सकै छथि। प्रसाद पोनिहारक कमी नै अछि। हमहुँ अपना तरफसँ आदरनीय श्री बेचन जीकेँ धन्यवाद दै छियनि आ आशा करै छी जे आगूओ अहिना अपन नाटकक माध्यमसँ समाजकेँ ओझल विषय-वस्तुसँ सुगम भाषामे समै-समैपर अवगत करबैत रहताह।

जय मिथिला! जय मैथिली!!

ऐ रचनापर अपन मतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

मिथिला चित्रकला (पेटिंग): भूत, वर्त्तमान आ भविष्य

परिचय

५००० वर्ष पुरान भारतीय संस्कृति अपन आगामी पीढ़ी के परंपरा, आधुनिकता आ मूल्य प्रणालीक संयोजन सँ युक्त दिव्य मस्तिष्क देलक, जे समयक गति , बेर बेर भेल विदेशी हमला आ जनसंख्या मे पैघ वृद्धिक बावजूदो नीक सँ राखल गेल अछि । ई हुनका लोकनि कें विशिष्ट व्यक्तित्व देलक । २० वीं सदी अनेको क्षेत्र मे महत्वपूर्ण रहल आ एहि संबंध मे कलाक उल्लेख सेहो कएल जा सकैछ । २०वीं सदी मे बनल गीत, नाचक रूप, साहित्यिक काज आ कलाक काज मे नव अभिव्यक्ति आयल आ ई बात साबित भऽ गेल जे ई सदी नहि केवल मानवक इतिहास मे महान रहल वरन नव आविष्कार आ तेज नवीकरणक अवधि सेहो रहल । जहन कि कलाक सभ रूप पर्याप्त उपलब्धि प्रदर्शित कयलक, सिनेमा, पॉप म्यूजिक आर टेलीविजन वृत - चित्र एहेन नव कला रूप सेहो आविष्कृत आ लोक- प्रिय भेल । मिथिला चित्रकला (पेंटिंग) जे

मधुबनी चित्रकला (पेंटिंग) क रूप मे सेहो जानल जाईत अछि । मूल रूप सँ एहि क्षेत्रक सभ जाति आ समुदायक महिला द्वारा बनाओय जाइत अछि । एहि देशक महिला अति प्राचीन समय सँ विभिन्न रूपक रचनात्मकता मे स्वयं के संलग्न रखलनि । हुनक रचनात्मकताक सभ सँ नीक चीज प्रकृति, संस्कृति आ मानव मनोवृतिक बीच सम्बंध आछि । ओ ओही सामग्रीक उपयोग केलनि जे हुनका लग पास मे पर्याप्त मात्रा मे उपलब्ध छल । लोक चित्रकला आ कलाक आन रूपक माध्यम सँ ओ अपन इच्छा, सपना, आकांक्षा के व्यक्त कलनि आ अपन मनोरंजन सेहो केलनि । इ समानान्तर साक्षरता थिक, जेकरा द्वारा ओ लोकनि अपन सौंदर्यविषयक अभिव्यक्ति के व्यक्त केलनि । हुनक रचनात्मक कला स्वयं मे लिखनाईक शैली मानल जा सकैत अछि, जेकरा द्वारा हुनक भावना, आकांक्षा, वैचारिक स्वतंत्रता आदिक अभिव्यक्ति होइत अछि । हुनक पृष्ठभूमि, प्रेरणा, आशा, सौंदर्य विषयक सजगता, संस्कृति ज्ञान आदि हुनक सभ संभव कला मे व्यक्त भेल । हुनक कलाक विषय मे लिखबा आ गप्प करबा सँ पहिने हुनक आंतरिक संस्कृतिक स्तर आ सिखबाक तरीकाक विषय मे जानब आवश्यक अछि । ई आलेख महिला के केन्द्र बिन्दु मे राखि कें लिखल गेल अछि ।

एहि देशक कोनो क्षेत्र महिला रचनात्मकता सँ फ़राक नहि अछि । हम पंजाब मे फुलकारी, गुजरात मे वारली, लखनऊ मे चिकन

कशीदाकारी, उत्तर मे बुनाई, बंगाल मे कंथा, राजस्थान मे लघु चित्रकला, बिहारक मिथिला क्षेत्र मे सुजनी आ केथरीक रूप मे मिथिला चित्रकला (पेंटिंग) क उदाहरण देखैत छी ।

मिथिला पेंटिंग एहि क्षेत्रक महिला लोकनिक जीवंत रचनात्मक काज अछि । ई मुख्यत: मिथिलाक ग्रामीण महिला द्वारा कागज, कपड़ा, बन- बनायल पोशाक आदि पर चित्रित कएल गेल प्रसिद्ध लोकचित्र अछि । मूलत: ई मुसलमान सहित सभ जाति आ समुदायक महिला द्वारा प्राकृतिक रंग सँ देबार आ सतह पर बनाओल गेल लोकचित्र थिक । बाद मे किछ लोक एहि मे रूचि लेलनि आ महिला लोकनि के अपना कला कें देबार आ सतहक अलावा कैनवास पर उतारबाक प्रेरणा देलनि आ एहि रूप मे एहि कला कें कला जगत मे आ बाजार मे पहचान भेटलैक । एहि लोक कलाक अपन इतिहास, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, महिलाक एकाधिकार आ विशिष्ट क्षेत्रीय पहचान अछि । मिथिला कतय अछि ? एहि भूमिक सांस्कृतिक अ ऐतिहासिक महत्व की अछि ? इ कला मिथिला मे विशेष रूपें किएक अछि ? एहि कला रूपक विषय मे किछु लिखबा सँ पहिने एहि प्रश्न समक उत्तर अपेक्षित अछि ।

भारतक पैघ शहर आ आधुनिक दुनिया सँ दूर एक सुंदर क्षेत्र अछि जे कहियो मिथिलाक रूप मे जानल जाईत छल । ई पूर्वी भारत मे स्थापित पहिल राज्य छल । ई क्षेत्र उत्तर मे नेपाल, दक्षिण मे

गंगा, पश्चिम मे गंडक आ पूब मे बंगाल धरि पसरल मैदानी भाग अछि । वर्तमान बिहारक चंपारण, सहरसा मुजफ़्फ़रपुर, वैशाली, दरभंगा, मधुबनी, सीतामढ़ी, सुपौल, समस्तीपुर, मुँगेर, बेगूसराय, भागलपुर आ पूर्णियाँ जिलाक भाग मिथिला अछि । ई पूर्णत: समतल अछि । एकर माटि दोमट अछि जे गंगा नदी द्वारा आनल गेल अछि । यदि मानसून मे विलंब भेल या कम वर्षा भेल तँ फ़सल मे रूकावट अबैत अछि । लेकिन यदि पानिक देवताक कृपा भेल तँ पूरा मैदन हरियरे हरियर रहैत अछि । मधुबनी पेंटिंगक हृदय स्थली अछि । एहि क्षेत्रक सघन हरियाली प्राचीन दर्शक लोकनि कें ततेक आकर्षित कयलक जे ओ एहि क्षेत्र के मधुबनी (मधुक जंगल) कहलनि । आब इ जिला पेंटिंगक लेल सब सँ बेसी जानल जाइत अछि । एहि पौराणिक क्षेत्र मे राम (अयोध्याक राजकुमार आ विष्णुक अवतार) सीता सँ वियाह केलनि । सीताक जन्म हुनक पिता जनक द्वारा हर (हल) जोतबाक समय भेल । मिथिला ओ पवित्र भूमि अछि जतय बौद्ध धर्म आ जैन धर्मक संस्थापक आ संस्कृत शिक्षाक छह परंपरागत शाखाक विद्वान जेना कि याज्ञवल्क्य, वृद्ध वाचस्पति, अयाची मिश्र, शंकर मिश्र, गौतम, कपिल, सचल मिश्र, कुारिल भट्ट आ मंडन मिश्रक जन्म भेलनि । १४ वीं सदीक वैष्णव कवि विद्यापतिक जन्म मिथिला मे भेल जे अपन पदावलीक माध्यम सँ एहि क्षेत्र मे राधा आ कृष्णक बीचक संबंधक व्याख्या करैत प्रेम गीतक नव रूप के अमर बना देलनि । इएह कारण अछि जे लोक हुनका जयदेवक पुनर्जन्म रूप

मे (अभिनव जयदेव) स्मरण रखलक । कर्णप्योर (बंगालक एकटा शास्त्रीय संस्कृत कवि) अपन प्रसिद्ध भक्तिमय महाकाव्य "पारिजात हरण" मे मिथिलाक लोकक विद्वताक चित्रण केलनि । कृष्ण अमरावती सँ द्वारका जेबाक मार्ग मे एहि भूमिक ऊपर सँ उड़ैत काल सत्यभामा सँ कहलनि, "कमलनयनी ! देखू ई मिथिला थिक, जतय सीताक जन्म भेल । एतय विद्वान लोकनिक जीह पर सरस्वती सगर्व नचैत छथि (मिश्र, कैलाश कुमार २०००) " । मिथिला एकटा अद्भुत क्षेत्र अछि जतए कला आ विद्वता, लौकिक आ वैदिक व्यवहार दुनू पूर्ण सौहार्द्र सहित संग संग चलैत अछि ।

पृष्ठभूमि

भारतक विविधता जेकाँ एकर लोक कला एहि देशक बहुविध संस्कृति के विभिन्न रंग द्वारा प्रदर्शित करैत अछि । ई कला (पेंटिंग) लोक कलाक समुद्रक रूप मे मानल जाइत अछि, जाहि मे प्राचीने समय सँ लोकप्रिय कला रचना भारतीय उपमहाद्वीपक हर भाग सँ अबैत रहल । भारतक कला मध्य मिथिला पेंटिंगक अपन महत्वपूर्ण स्थान अछि । मिथिला मे महिला देबार, सतह, चलायमान वस्तु आ कैन्वस पर पेंटिंग करैत छथि, माटि सँ देवता, देवी] जानवर आ पौराणिक पात्रक प्रतिमा बनबैत छथि; सिक्की घास सँ टोकरी, छोट- छोट वरतन और खिलौना बनबैत छथि, केथरी आ सुजनी बनेबाक रूप मे कशीदाक काज करैत छथि,

वभिन्न तरहक धार्मिक आ काजक चीज बनबैत छथि । ई कलाक काज महिला द्वारा दैनिक काजक रूप मे कएल जाइत अछि, जे हुनका पूर्ण रचनात्मक व्यक्ति, एकटा गायक, मूर्तिकार, चित्रकार , कशीदाकार आ सभ किछु बनबैत अछि । पीढ़ी दर पीढ़ी मिथिलाक महिला विभिन्न विशिष्ट पेंटिंग बनेलनि अछि ।

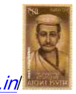
चर्चा

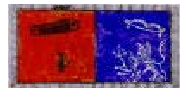
मिथिला मे सामान्यतया पेंटिंग महिला द्वारा तीन रूप मे कएल जाइत अछि : सतह पर पेंटिंग, देबार पर पेंटिंग आ चलायमान वस्तु पर पेंटिंग । प्रथम श्रेणी मे अरिपन अबैत अछि जे सतह पर अरबा चाऊर (कच्चा चावल) क लई सँ बनायल जाईत अछि । सतहक अलावा एकरा केरा आ मैना पात आ पीढ़ी पर सेहो बनाओल जाइत अछि । एकरा दहिना हाथक आँगुरक प्रयोग सँ बनाओल जाइत अछि । तुसारी पूजा (कुमारि लडकी द्वारा नीक पतिक कामना सँ शिव और गौरी के प्रसन्न करबाक लेल त्योहार) क अरियन उज्जर, पीयर आ लाल रंगक चाऊरक चूर्ण सँ बनाओल जाइत अछि । विभिन्न अवसरक लेल विभिन्न तरह क अरिपन होईत अछि । अष्टदल, सर्वतोभद्र दशयत आ स्वास्तिक एकर मुख्य प्रकार अछि । देबार परहक पेंटिग अनेको रंगक होईत अछि । एहि मे मुख्यत: तीन सँ चारि रंगक प्रयोग होईत अछि । एहि मे नयना जोगिन, पुरैन, माँछक भार, दही, कटहर, आम,

अनार आदिक गाछ आ चिड़ै जेना सुग्गाक चित्र बनाओल जाइछ । चलायमान वस्तु पर पेंटिंग मे शामिल अछि माटिक बरतन, हाथी, साभा- चकेबा, राजा सलहेस, बाँसक आकृति, चटाई, पंखा आ सिक्की सँ बनल वस्तु । एहि मे सँ कतेक पेंटिंग तांत्रिक महत्वक अछि । विवाह समारोहक दौरान किछु अवैदिक प्रथाक सेहो पालन सिर्फ़ महिला द्वारा कएल जाइत अछि जेना ठक- बक, नयना- जोगिन आदि, जे मिथिला तंत्र सँ संबंधित अछि ।

देवार परहक पेंटिंग आ सतह परहक पेंटिंग जे घर के सुन्दर बनेबाक लेल आ धार्मिक उद्देश्य सँ कएल जाईत अछि, महाकाव्य युग सँ चलि रहल अछि । तुलसीदास अपन महान काव्य रामचरितमानस मे सीता आ रामक वियाहक अवसर पर कएल गेल मिथिला पेंटिंगक वर्णन केलनि अछि । राम आ सीतक सुंदर जोड़ी सँ प्रभावित भऽ कऽ गौरी वियाहक समारोह मे भाग लेलनि आ कोहबरक चित्रण करय चाहलनि जतय सुमंगलीक कें एहि आदर्श जोड़ीक लेल गीत आ संबंधित विध व्यवहार करक छलनि । एहि चित्रण मे परंपरागत चित्र, हिन्दू देवी- देवताक चित्र आ स्थानीय जीव-जन्तु आ वनस्पतिक चित्र बनाओल जाइत अछि । महिला कलाकार एहि कलाक एकमात्र अभिरक्षक छथि, जे ई चित्रण करैत छथि आ पीढ़ी दर पीढ़ी ई माय सँ बेटी के हस्तांतरित भऽ जाइत अछि । ओ एहि कला रूप कें प्राचीन समय सँ बचा कें रखने छथि । लड़की ब्रश आ रंग सँ नेने सँ काज करब शुरू करैत

छथि जेकर पराकाष्ठा कोहवर में देखल जा सकैछ । वियाह सँ संबंधित सभ धार्मिक समारोह कोहबर मे होइत अछि । अहिवातक पातिल के चारि दिन लगातार जरा कऽ राखल जाइत अछि । मिथिला पेंटिंग (मधुबनी पेंटिंग) क वर्तमान रूप देबार पेंटिंग, सतह पेंटिंग केर कागज आ कैंपस पर रूपांतरण थिक । ई प्रयोग बहुत पुरान नहि अछि । २०वीं सदीक साठिक दशक मे भयंकर अकालक चुनौती कें सामना करक लेल महिलाक लेल काजक अवसर निमित्त किछु महिला लोकनि देबार आ सतह परहक अपन कला कें कागज या कैनवस पर उतारब शुरू केलनि । प्रारंभ मे एकरा देखवला कम लोक छल परन्तु बाद मे एहि मे वृद्धि भेल । एहि काज मे महिला लोकनि कें खूब सफ़लता भेटल आ व्यवसायक एकटा नव मार्ग खूजल । ताहि समय सँ पेंटिंग मे विविधता आएल अछि । देबार पेंटिंग के हाथ सँ बनल कागज पर हस्तांतरित कएल गेल आ धीरे- धीरे ई आन स्थान यथा ग्रीटिंग कार्ड, ड्रेस, सनमाइका आदि पर सेहो उतरल । नीक चित्रांकन, चमकदार स्वदेशी रंग, सभ संभव स्वदेशी प्रयोग आदि सँ पूरा दुनियाक दर्शक आकर्षित भेलाह । प्रारंभ मे किछु ब्राह्मण महिला कें एहि कला कर्मक अवसर देल गेल परन्तु १० वर्षक बाद किछु कार्यस्थ महिला एक नव रीतिक संग एहि क्षेत्र मे एलीह । एखन धरि हरिजन महिला एहि क्षेत्र मे नहि आयल छलीह । सीता देवी मिथिला पेंटिंगक ब्राहमण स्टाइल कें आगाँ बढ़ेलीह । एहि मे मुख्यत: कोहबर और देवी देवताक चित्र छल । बौआ देवी आ





हुनक बेटी सरिता सेहो एहि क्षेत्र मे अपन पर्याप्त योगदान देलनि ।

कायस्थ महिला एहि क्षेत्र मे सेहो आगाँ अएलीह आ सतरिक दशक मे हुनक पहचान बनल । ओ लोकनि गाम आ धार्मिक दृश्य के पेंटिंग मे स्थान देलनि । गंगा देवी, पुष्पा कुमारी, कर्पूरी देवी, महासुन्दरी देवी आ गोदावरी दत्त प्रमुख कायस्थ महिला कलाकार छलीह । एहि दुनू वर्गक महिला कलाकार लोकनिक प्रयास सँ मिथिला कला कें मूर्त रूप भेटल ।

तेसर समूह हरिजन महिला १९८० क दशक मे आगाँ अयलीह । दुसाध आ चमार जातिक महिला लोकनि परंपरागत पेंटिंग क प्रयोग अपन धार्मिक काज आ घर-वार सजेबाक लेल करैत छलीह । ओ लोकनि गोदना आ अन्य चमकदार रंगक प्रयोग अपन पेंटिंग मे करय लगलीह । बाद मे एहि मे लाईन, तरंग, वृत आदि सेहो जुड़ि गेल। जमुना देवी आ ललिता देवी प्रसिद्ध हरिजन कलाकार भेलीह । ओ लोकनि पेंटिंग मे दैनिक जीवनक वस्तु जातक सेहो चित्रण करय यगलीह । आब तँ सभ जातिक लोक एहि कलाक उपयोग जीविका अर्जन निमित्त करैत छथि ।

सभ कलाकर लोकनि रंगक लेल मुखयतया प्रकृति पर निर्भर करैत छथि । ओ लोकनि माटि, छाल, फ़ूल , जामुन सँ कतेको प्राकृतिक रंग निकालैत छथि । रंग मुख्यत: लाल, नीला, हरिहर,

कारी, हल्कापीयर, गुलाबी आदि होईत अछि । प्रारंभ मे घर मे बनाओल गेल रंग सँ काज चलैत रहल तथापि एहि विद्य सँ प्राप्त रंगक मात्रा कम होईत छल आ तें महिला लोकनि बाजार मे उपलब्ध रंगक प्रयोग करब सेहो शुरू केलनि ।

कोहबरक चित्रांकन पौराणिक , लोकगाथा आ तांत्रिक प्रतीक पर आधारित अछि । कोहबरक चित्रण नव जोड़ाक कें आशीषक निमित्त कएल जाईछ । एहि पेंटिंग मे सीताक वियाह या राधा कृष्णक चित्रांकन अछि । शक्ति भूमि हेबाक कारणें मिथिला पेंटिंग मे शिव, शक्ति, काली, दुर्गा, हनुमान , रावण आदिक चित्रण सेहो भेटैत अछि । उर्वरता आ संपन्नता प्रतीक यथा माछ, सुग्गा, हाथी, काछु, सूरज, चन्द्रमा, बाँस, कमल आदिक चित्रांकन प्रमुखता सँ होइत अछि । एहि पेंटिंग मे देवताक स्थान बीच मे आ हुनक प्रतीक, वनस्पति आदिक स्थान पृष्ठभूमि मे रहैत अछि ।

वाणिज्यीकरण सँ एहि कला कें नोकसान पहुँचल अछि । महिला आ पुरूष एहि कला के शहर आ नगरक बाजार सँ सीखि रहल छथि । प्रशिक्षण देनिहार स्वयं एहि कलाक तत्व आ सौंदर्य सँ अनभिज्ञ छथि । किछु गोटा तँ रंगक संयोजीकरण, प्रकृति सँ एकर प्राप्ति, पृष्ठभूमिक निर्माण, लय, रंग, गीत, विधि, नृत्य सँ एकर संबंध आ पेंटिंगक ढ़ंग सँ सेहो अपरिचित छथि । पेंटिंगक विषय बा डिजाइन आब अधिकांश मामिला मे खरीददार द्वारा निर्णीत

होइत अछि । खरीददार केन्द्रित पहल एहि महान कला रूपक रंग, डिजाइन, मूल, संवेदना आदि पर खतरा अछि । हम देखैत छी जे तांत्रिक पेंटिंगक नाम पर महिला मिथिलाक परंपरा सँ बहुत अलग किछु बनवैत छथि । वाणिज्यिकरण सँ बहुतो पुरूष कलाकार सेहो एहि मे रुचि लेब शुरू केलनि अछि । ओ एहि मे महिलाक महत्व कें बुझने बिना पेंटिंग करैत छथि । ओ मिथिला पेंटिंगक नाम पर खरीदनाहारक जरूरतिक मोताबिक किच्छो पेंटिंग करक लेल तैयार रहैत छथि ।

लेकिन जहन हम लोक आ परंपरागत पेंटिंगक रूप मे मिथिला पेंटिंगक गप करैत छी , जे धार्मिक अवसर पर बनाओल जाइछ या भारतक कोनो धार्मिक पेंटिंगक गप करैत छी तँ हम देखैत छी जे एहि मे कतेको कार्यकलाप जूड़ल अछि । ई संयोजन वस्तुत: कला कें विशेष महत्व दैत अछि । अवधारणा आ अनुभवक आधार पर देखला सँ सभ स्थानीय, क्षेत्रीय, अखिल भारतीय आ भारत सँ बाहर कलाक अभिव्यक्ति आंतरिक मन सँ उभरैत देखाइत अछि आ जीवनक एकटा अभिन्न अंग अछि । पेंटिंग, गीत, नृत्य, कविता आ आन कार्यात्मक चीज कें पौराणिक कथा, धार्मिक रीति, त्योहार आ संस्कार सँ अलग कऽ कऽ नहि देखल जा सकैत अछि । जहन एकटा पेंटर देबार या सतह कें पेंट करैत रहैत छथि तँ अन्य महिला लोकनि गीत गाबि कऽ हुनका मददि करैत छथिन । लोक कथा सँ लेल गेल ज्ञान सेहो हुनका पेंटिंगक लेल विषय प्रदान

करैत अछि । तांत्रिक पेंटिंग वस्तुत: मधुश्रावणीक कथा पर आधारित अछि । आ एहिना पेंटिंग आ आन कलाक संबंध कतेको लोक कला सँ अछि ।

एकटा महिला जहन देबाल पर चित्रांकन करैत छथि तँ ओ कतहु सँ आर्थिक लाभक आशा नहि करैत छथि । तथापि जहन ओ अपन पेंटिंग के बेचबाक लेल बनबैत छथि तँ हुनक पूरा ध्यान संस्कृति सँ ग्राहक दिस चलि जाईत अछि । तहन ओ परंपरा के जीवित रखबाक लेल पेंटिंग नहि करैत छथि, वरन जीविकाक लेल पेंटिंग करैत छथि । मिथिला सँ जीविकाक निमित्त सतत पलायन सेहो एहि पेंटिंग के बाहर अनलक अछि आ बाजार मे एकरा नव खरीददार भेटलैक अछि ।

किछु चित्रकार अर्थात कर्पूरी देवी, गंगा देवी आ जमुना देवी अपन खरिददारक जरूरतक अनुसार पहल केलनि अछि । गंगा देवी अपन पेंटिंग मे रामायण चित्र के उतार लनि अछि । गंगा देवी मधुबनी सँ अपन यात्रा शुरू केलनि । ओ इलाजक निमित्त दिल्ली एलीह । ओ अपन पेंटिंग मे रेलगाड़ी, डॉक्टर, अस्पताल, सीरिंज, मेडिकल वार्ड सभ किछुक चित्रांकन केलनि । हुनक पहल अनेको तरह सँ विशिष्ट छल । किछु लोक हुनक आलोचना केलनि जे एहि सँ मिथिलाक लोक चित्रांकन के हानि होएत, तठापि बहुतो लोक हुनक समर्थन केलनि ।

जमुना देवी आ हुनक भाई मितर राम चमकीला रंगक स्टाइलक विकास केलनि, जेकर बराबरी मिथिला कला मे नहि अछि । ओ स्वयंभू कलाकार छथि आ जानवर जेना कि गाय आदिक चित्रण सँ आनंदित होईत छथि । हुनक चित्रण परिपाटी सँ स्वतंत्र अछि । तठापि ओ रंगक प्राप्ति, कैनवासक पृष्ठभूमिक निर्माण, सजीव चित्रांकन आदि मे परंपराक पालनक प्रति दृढ़ छथि ।

इ चित्रकार लोकनि भूकंप, नदी आ आन कोनो वस्तुक चित्रांकन करैत छथि, जे ग्राहक हुनका सँ चाहैत छथि । जितवारपुर आ राँटी गाम मे मिथिला पेंटिंग वाणिज्यिक कार्यकलापक रूप मे उभरल अछि । जहन हम हाले मे जितवारपुर गेलहुँ तँ देखलहुँ जे जमुना देवी १५ सँ बेसी छात्र के, जे हरिजन सँ लऽ कऽ ब्राह्मण परिवार सँ छल, पढ़बैत छलीह । पुछला पर ओ उत्तर देलनि, "हम एकरा सभ के माय जेना पढ़बैत छियैक । ई सभ एहिठाम अपन घर जेकाँ अनुभव करैत अछि । हम एकरा सभ सँ कोनो फीस नहि लैत छियैक । अगर हम फीस लेबैक तँ हमर कला गंदा भऽ जायत । सब सँ उत्तम पुरस्कार हमरा लेल इ अछि जे जहन कोनो ब्राह्मण लड़की अपन प्रशिक्षण पूरा केलाक बान हमर पयर छुबैत अछि तँ हम ओकरा हृदय सँ आशीष दैत छियै आ एकटा प्रमाणपत्र सेहो दैत छियैक।"

मिथिला पेंटिंग कला सँ उपर अछि । एहि रचनात्मक क्षमता सँ महिलाक एक समूह अपन इच्छा, सपना, आकांक्षा, आशा आदि कें व्यक्त करैत छथि । यदि अहाँ हुनका सँ पुछबनि जे की कऽ रहल छी तँ उत्तर भेटत "गहबर या कोहबर लीखि रहल छी"। हुनका लोकनिक लेल हुनक स्टाइल एक तरहक लिपि थिक, जेकरा माध्यम सँ ओ पुरुष समुदाय या दुनियाक बाँकी लोक सँ संवाद करैत छथि । ओ कलात्मक लेखक छथि जे अपन भावना के पेंटिंगक माध्यम सँ लिखैत छथि । वस्तुत: ओ सृजनकर्ता आ ईश्वरक समीप छथि । आर्थिक युगक कारणें यद्यपि किछु पुरुष-पात सेहो एहि क्षेत्र मे उतरलह अछि, परंतु मूलत: आईयो ई महिलाक रचना थिक ।

निष्कर्ष

यदि भरत नाट्यम, मनिपुरी, कुचीपुड़ी, ओडिसी आ सतरिया नृत्य के मूल रूप मे रखैत दिनानुदिन लोकप्रिय कएय जा स्कैत अछि, तँ एहि महान लोक चित्रकला के मूल रूप मे किएक ने राखय जा सकैत अछि? कला वस्तु के बेचनाई खराब नहि थिक, तथापि खरीददारक समक्ष कलाक संपूर्ण परंपरागत रचनात्मकता आ मूल्यक समर्पण ठीक नहि थिक । मिथिला पेंटिंगक मूल रूप मे बचा दऽ रखबाक लेल गभीर चिन्तनक आवश्यकता अछि । अन्वेषणकर्ता,

गैर सरकारी संगठन पेशेवर, लोक कलाकार आ संबंधित व्यक्ति के एहि कलाक मौलिकता बचेबाक लेल एकजुट भऽ जेबाक चाही।

ऐ रचनापर अपन मतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

कथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री

छोटानागपुर अर्थात आजुक झारखण्ड केर धरती, पहाड़, झरना, जंगल, नदी वन्यजीव आ अन्तत: निश्छल निष्कपट जनजातिसँ हम जेना नेनपनेसँ एक अटूट सम्बन्ध स्थापित कऽ लेने रही। हरदम

अपना-आपकेँ जनजातीय वर्गक बच्चा एवं उमरगर लोक सभ लग हम सुरक्षित अनुभव करैत रही। कुनो संशय अथवा भय कहियो नै भेल।

मुदा जखन-जखन माए हमरा सभ लग सेन्हा रहय लेल अबैत छलीह तँ अनेरे परेशान भऽ जाइत छलीह। हम्मर माएकेँ अगल-बगलक स्त्रीगण सभ कहलकनि जे अतए केर आदिवासी, विशेष रूपेँ उराँव धानक बीया छीटैसँ पहिने ग्राम्य देवता, स्थान देवता, कृषि देवता एवं कुल देवताकेँ प्रसन्न करबाक लेल प्रथम सात बाकुट धानकेँ मुर्गा, कुनो आरो चिड़ै, चाऊरसँ निर्मित स्थानीय शराब - हंड़िया आ अन्तत: मनुक्खक शोनितसँ सानि ओइकेँ अभिमंत्रित कए ओकरा सर्वप्रथम गामक प्रधानक हाथसँ खेतमे बाउग करैत अछि। मनुक्खोमे बच्चा सभकेँ खूनक प्रयोगक उत्तम मानल जाइत छैक। ऐ लेल चोरा कऽ कुनो बच्चाकेँ पकड़ि ओकर घेटक टेटुआकेँ तेजगर चक्कूसँ काटि ओकर रक्तकेँ बांसक फोफीमे निकालि ओइ रक्तसँ पूजा कएल जाइ छै। ऐ प्रक्रियामे जै बच्चाकेँ गर्दनिकेँ टेटुआकेँ काटल जाइ छै तकर मृत्यु ओतहि भऽ जाइ छै। टेटुआकेँ पूजामे प्रयुक्त होबाक हेतु काटक परम्पराकेँ स्थानीय भाषामे ओरका कहल जाइ छै। हलांकि अप्पन जीवनक 23 वर्ष धरि हम कहियो कुनो घटना अपना आँखिसँ नै

देखलिऐक। लोक-सबहक मुँहेँ ऐ विषयमे चर्चा करैत अनेको बेर सुनने अवश्य रही।

हम्मर कारी भेनाइ शाइद हमरा लेल एकटा वरदान छल। छोटानागपुरक आदिवासी सभ हमरा कारी होबाक तथा घुरमल-घुरमल केस होबाक कारणे अपने समुदायक सदस्य बुझैत छल। उपरसँ सेन्हा तथा सेन्हाक अगल-बगलक लगभग 15 गाममे आदिवासी महिला सभ चर्खा चलबैत छलीह। पिताजी खादी भंडारक व्यवस्थापक छलाह, तै कारणे सेहो आदिवासी-महिला-पुरूष हमरा बड्ड सिनेह करैत छल। हम सदतिकाल कोनो-ने-कोनो बहाना बना गामे-गाम घुमैत छलहूँ। कखनो-काल माए सेहो कहैत छलीह- ‘‘जो राधव, बगलक आदिवासी गामसँ खेतक टटका हरियर तरकारी लऽ आ।’’

आ हम अही सभ चीजक फिराकमे रहिते छलौं चटदनि कुनो आदिवाी गाम दिस विदा भऽ जाइत रही।

केवल धनरोपनीक समैमे हमर माए साकांक्ष भऽ जाइत छलीह। साफे मना कऽ दै छलीह- "देख राघव, कुनो परिस्थितिमे भरि रोपनी तों कुनो गाम दिस नै जएबैं। हमरा कतेको लोक सभ कहलक अछि जे अही समैमे आदिवासी सभ ओड़का पूजै छै। हम तोरा पिताजीकेँ सेहो बुझा देने छियनि जे ऐ एक-डेढ़ मास धरि तोरा कतौ असगरे नै भेजथुन्ह।"

हम्मर परिवारमे माइक आज्ञाक अवहेलना करबाक हिम्मत हमर कुनो भाए-बहिनकेँ नै छल। पिताजी सेहो हरदम माइक बातकेँ सर्वोपरि मानैत छलथिन। हमरा लेल तँए ओ एक-डेढ़ मास बड़ड बेकार होइत छल। हम रोपनीक समैमे अपना-आपकेँ जहलमे कैद, लाचार अपराधी मानै छलौं। मुदा दोसर कुनो उपायो तँ नै छल।

आदिवासी महिला सभ चर्खा हमर पिताजीक अथक प्रयासक कारणे कटनाइ प्रारम्भ केलनि। हुनका सभकेँ हरेक पनरह दिनपर सेन्हा खादी भण्डारपर बजा कऽ बीट करा कऽ तूरक पोला देल जाइत छलनि। पोला जोखि कऽ देल जाइत छलैक। जखन महिला सभ ओइ पोलाकेँ चरखापर चढ़ा ताग बना लैत छलीह तँ हरेक 15 दिनपर ओइ तागकेँ जोखि कऽ खादी भण्डारमे लऽ लेल जाइत छलैक। मिहनताना तागक एकबद्धता तथा सूक्ष्मताक आधारपर देल जाइत छलैक। सूक्ष्मताक माप 40 अंकसँ प्रारंभ भऽ 160 अंक

धरि चलैत छलैक। जतेक कम अंक भेटतैक ततेक मोट आ उखरल सूत मानल जेतैक। किछु एहेन बेबस्था छलैक। आ जतेक पातर आ समरस हेतैक ततेक बेसी नम्बर भेटतैक अर्थात् ई जे कम नंबर वालीकेँ कम मिहनताना जा ज्यादे पातर या सूक्ष्म ताग तैयार करैवालीकेँ ज्यादे मिहनताना।

चर्खाक मरम्मत, रखरखाव, लोक सभकेँ सेन्हा मुख्य खादी भण्डार तथा गाम-गाम जाइक जानकारी देबाक जिम्मेवारी खादी भण्डारक छलैक। खादी भण्डारमे ई कार्य एकटा कार्यकर्ता श्री मंगनू ठाकुर करैत छलैक। मंगनू ठाकुरक अवस्था ओइ समए करीब 52 वर्ष छलैक। ओ जातिकेँ बढ़इ तथा समस्तीपुरक कुनो गामक छल। दुबर-पातर चेरा सन शरीर आ श्याम बरण केर छल ंगनू ठाकुर। नशामे केवल तम्बाकू चुसै छल। महा कंजुस। सदतिकाल पैसा बचेबाक प्रवृत्तिमे मग्न रहैत छल। ओकर जेठ बेटाक वियाह-दान भऽ गेल रहैक। खादी भण्डारक तमाम चर्खा तथा ओकर कल-पूर्जाक बड्ड नीक जानकारी छलैक मंगनू ठाकुरकेँ। अपन धंधा अर्थात चर्खा विशेष रूपसँ अम्बर तथा पेटी चर्खाक महारथी छल ओ। यएह कारण छलैक जे हमर पिता ओकरा दोसर ठामसँ स्थानान्तरण करा अपना लग सेन्हा अनने छलथिन। इम्हर पाँच वर्षमे दू बेर मंगनूकेँ स्थानान्तरणक आदेश प्रधान कार्यालय, छोटानागपुर खादी ग्रामोद्योग संस्थान, तिरील, राँचीसँ अएलैक मुदा

दुनू बेर हमर पिताजी अपन प्रभुत्वक बलपर ओकरा सेन्हासँ कतौ आनठाम नै जाए दलथिन।

जनजातीय समुदायसँ हमर आत्मीयता बढ़ाबैमे मंगनू ठाकुर केर भूमिका बड्ड पैघ रहल छैक। ओ अनेको जनजातीय गाम सभमे जखन चर्खा निरीक्षण मे जाइत छल तँ हमरा कहैत छल- ‘‘बउओ, अहूँ चलब?’’

आ हम अपन माए लग निवेदन करए लगैत छलौं। मंगनू दरवारी प्रवृतिक आरमी छल। ओकरा बूझल रहैक जे अगर मैडम (हमर माए) प्रसन्न रहती तँ मैनेजर साहेबसँ कुनो कार्य आसानीसँ भऽ जाएतेक। आ माएकेँ प्रसन्न करबाक लेल हमरासँ पैघ कुनो हथियार नै भऽ सकैत छलैक ओकरा लेल। ओ माए लग आबि कहए लागैत छलैक- ‘‘जाय दियौक बउओकेँ मैडम! कुनो दिक्कत नै हेतैक। हम अपना संगे साइकिलपर बैसा कऽ लऽ जाइत छियैक आ अपने संगे तीन-चारि घंटाक भीतर वापस लेने अएबैक। अतए ओहुना तँ बच्चा सभसँ मारि-पीट करैत रहैत अछि। ओतए लोक सभ लग एकर मोनो बठा जेतैक।’’

अन्तत: हमर माए किछु ना-नुकुर केलाक बाद मंगनू हमरा लऽ जेबाक हेतु अनुमति दऽ दैत छलथिन। पिताजीसँ आज्ञा लेबाक कहियो प्रयोजन नै परल। ओ हमरा प्रति हरदम लिबरल रहैत छलाह। आ ऐ तरहेँ हम अनेको बेर सेन्हाकेँ अगल-बगलमे बसल जनजातीय गाम सबहिक भ्रमण मंगनू ठाकुर संग करैत रही। साइकिलक पाछाँमे बैस कऽ पहाड़ी इलाकामे भ्रमण करबाक एक अलग तरहक आनन्द अबैत छैक- परमानन्द! उबर-खाबर पगडंडी, ऊँच-नीच रस्ता। कतेको ठाम मंगनू ठाकुर साइकिल चलबैत-चलबैत हॉफय लगैत छल। कतेकोठाम ओकरा इंच चढ़ाइपर डबल लोडमे साइकिल नै हॉकल होइत छलैक। ऐ स्थितिमे साइकिलपर सँ अपनो उतरि जाइत छल आ हमरोसँ पैघ आत्मीय ढंगसँ कहैत छल- "बौआ, उतरि जो। आगाँ बड़ड चढ़ाइ छैक। जखने चढ़ाइ समाप्त भऽ जेतैक तखने पुन: साइकिलपर हमरा लोकनि चढ़ि जाएब।"

हमर चंचल मोन मंगनू ठाकुरकेँ ऐ तरहक प्रस्ताव बिना कुनो प्रश्न आ उत्तरक मानि जाइ छल। हम तुरन्ते साइकिलपर सँ उतरि जाइत रही। आ जखने चढ़ाइ समाप्त होइत छलैक तँ हमरा साइकिलकेँ पाछाँमे बैसा ढलानपर मंगनू मस्तीमे एक-आध पैडल मारि साइकिलपर झुमैत हर-हराएल चलल जाइत छल। मुदा एहेन रास्ताक लेल साइकिलकेँ पछुलका आ अगुलका दुनू ब्रेककेँ

बिल्कुल फीट आ टंच भेनाइ जरूरी, जैसँ कुनो बेलैंस बिगड़लापर अथवा रस्तामे कुनो तरहक बाधा अक्समात अएलापर साइकिल सवार ब्रेक मारि अपन तथा अन्य लोकक सुरक्षा कऽ सकए। एक बेर तँ हम कालक गालमे जाइत-जाइत बचि गेल रही। भेलै ई जे हम्मर साइकिलकँ दुनू ब्रेक ढील भऽ गेल रहए। हम एकटा बिल्कुल नीचा दिस ढलकैत सड़कपर अपन साइकिल चलेने तीव्र गतिसँ जाइत रही। साइकिलकँ आरो तेज करबाक रोमांसमे रोमांचित होइत हम आरो जोर-जोरसँ पैडलकँ अपन पएरसँ चलाबए लगलौं। लगैत छल साइकिलकँ बदला कुनो फटफटिया चला रहल छी। एकाएक नीचामे टी प्वाईंट-क्रॉस सेक्सन-पर एकटा ट्रक तेजीसँ जाइत रहैक। हम ट्रकक बिल्कुल लग आबि गेल रही। झटाक दऽ ब्रेक मारि साइकिलकँ काबूमे करबाक प्रयास केलौं। मुदा बेकार। ब्रेक कार्य नै केलक। आब लागल जे मृत्यु अविश्यम्भावी अछि। मुदा के नै अपन प्राणक रक्षा करए चाहैत अछि? हमहूँ बिना एकौ क्षण बरबाद केने टांग-हाथ, मुँह-कान टुटबाक चिन्ता केने चलैत साइकिलपर सँ कुदि गेलौं। साइकिलकँ एना धक्का देलियैक जैसँ ओ कातक खत्तामे खसि गेलैक। हम स्वयं सड़कक कछेरमे खसलौं। पाँच मिनट धरि किछु पते नै चलल। जखन होश आएल तँ देखलौं जे हमर पिताक एक मित्र हमरा लग बड़ा चिन्तित अवस्थामे ठाढ़ छथि। हुनकर चेहरापर क्रोध स्पष्ट परिलक्षित छलनि। हमरा लागल जे आब ई हमरा नीक जकाँ बेइज्जत करताह। मुदा से नै भेल। ओ केवल अतवे

कहलनि- ‘‘राघव, आइ अहाँ कालक गालसँ बचि गेलौं। बच्चा छी बच्चा जकाँ साइकिल चलाउ।’’

हम पश्चातापक स्वरमे कहलियनि- ‘‘की कहु काकाजी, एकाएक ब्रेक कार्य केनाइ बन्द कऽ देलक। साइकिलमे दुनू ब्रेक ढील भऽ गेल रहैक तकर जानकारी हमरा नै छल। आब जिन्दगीमे एहेन गलती नै करब।’’

ओ कहलनि- ‘‘कुनो बात नै। पहिने उठि कऽ ठाढ़ होउ। देखू कतौ चोट तँ नै आएल अछि?’’

ई कहैत ओ हमरा उठबए लगलाह। मुदा हम अपने फुरफरा कऽ उठलौं। खास चोट नै लागल छल। केवल ठेहुन आ कौहनी कनी छिला गेल रहए। साइकिल उठेलौं तँ ओकर हैंडल कनी टेढ़ भऽ गेल रहैक। काकाजी साइकिलकेँ ठीक करैमे मदति केलनि मुदा कहलनि- ‘‘राघव, पहिने अहाँ साइकिलक ब्रेक ठीक कराउ तखने ऐपर चढ़ब।’’

हम अपन गर्दनि हिला हुनकर आज्ञा मानबाक स्वीकृति दैत साइकिल गुड़कबैत लऽ गेलौं।

चली आब कथाक प्रसंग दिस। मंगनू मिस्त्री हमरा बच्चा सभ लग छोड़ि स्वयं घरे-घरे लोकक चर्खाकेँ मरमम्ति करए लगैत छल। लोक सभ हमरा बड्ड सिनेह करैत छल। हमर घरक नीपा-पोता तथा बरतन-बासन धोइवाली चेरी जकरा झारखण्डमे लोक दाई' कहै छैक, एक उराँव महिला छलि। ओकर बेटा-बेटी हमरा संगे खेलाइत छलैक। दाइ सेहो हमरा माइये जकाँ सिनेह करैत छलि आ हमर धियान रखैत छलि। ओकरा सबहिक संगतिमे हम उराँव भाषा धाराप्रवाह बाजब सीख गेल रही। तँए कुनो उराँव बहुल गाम अथवा इलाकामे हमरा सम्प्रेषणमे कुनो तरहक समस्या नै छल। बीच-बीचमे मंगनू ठाकुर हमर खोज-खबरि लैत रहै छल। वापस जाइकाल हमरा लोकनि अपना संगे बहुत रास हरियर तरकारी, फल इत्यादि लऽ जाइत रही।

जे महिला सभ चर्खा कटैत छथि, तनिका लोकनिकेँ खादी भण्डारक शब्दवलीमे कतिन' कहल जाइत छलैक। ओ सभ हरेक पन्द्रह दिनपर अपन काटल सूत-ताग-लऽ सेन्हा अबैत छलि। बीटमे सूतक नम्बरक आधारपर ओकरा सभकेँ मेहनताना देल जाइत छलैक। कुल आयमे सँ बांगक पैसा काटि लेल जाइत छलैक आ बचल आमदनीकेँ चारि अना हिस्साक खादी भण्डारमे जमा कऽ लेल जाइत छलैक, जकरा एवजमे ओ सभ साल भरिक भीतर कखनो

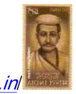
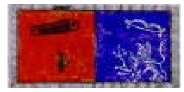
कुनो खादीक वस्त्र यथा चद्दरि, कम्बल, धोती, कुर्ता, लुंगी, ओछाइन इत्यादि किंवा वस्तु जेना कि सरिसबक तेल, मधु, साबुन, अगरबत्ती आदि लऽ सकैत छलि। बाद बाकि बारह अना हिस्साक पैसा तुरत भुगतान हमर पिताजी अपना सामने करबा दैत छलथिन।

ओइ कतिन सभमे एक कतिन छलैक- राजकुमारी। ओ सेन्हासँ करीब 8 किलोमीटर दूरक गामसँ पन्द्रह दिनपर पैदल आबैत रहैक मुदा ओकर वियाह नै भेल रहैक। बाइस वर्खक अवस्थामे ओकरा वियाह नै भेल रहैक से कुनो आश्चर्यक बात नै रहैक। कारण ई जे उराँव जनजातिक लोक पूरा वएस भेलाक बादे अपन लड़का अथवा लड़कीक वियाह करैत अछि। राजकुमारी बड़ा शांत आ गंभीर स्वभावक महिला छलि। चेहरामे हरदम एक प्रकिर्तिक हंसिक भाव लेने तथा चुपचाप अपन काजमे मग्न। यएह छलैक राजकुमारीक व्यक्तित्व। ओ सांवरि छलि। नाक कनि पीचकल, चाम अन्य आदिवासी वालाक तुलनामे कनी साफ, कनी चमकगर, कनी रमनगर। वस्त्र ओ बड़ा तल्लीनतासँ धारण करैत छलि। कहियो ओकरा उटपटांग वस्त्र पहिरने तथा अपन शरीक कुनो अंगकेँ देखार केने नै देखलिऐक। राजकुमारी स्वभावसँ अतेक शांत छलि जे अगर ओकरा संगे वार्तालाप केनिहार दस आखरि बजैत तँ राजकुमारी एक आखरि। मुदा ओ अपन उपस्थितिसँ लोककेँ

अवश्य प्रभावित करैत छलि। राजकुमारी सेन्हा मिडिल स्कूलसँ सातवी धरि पढ़लि छलि। आगा शायद आर्थिक तंगी आ अगल-बगलमे हाइ स्कूल नै हेबाक कारणे नै पढ़ि सकलि। हमरा आश्चर्य हरदम ऐ बातक होइ छल जे ओकर नाम राजकुमारी कियाक छलैक। एक दिन यएह प्रश्न हम अपन पितासँ पुछलियनि। हमर पिता कहलाह- ‘‘राजकुमारीक माता-पिता कुनो विशेष कारणसँ एकर नाम राजकुमारी राखि देने हेथिन।’’

मुदा अपन पिताक जवाबसँ हम संतुष्ट नै भेलौं। हमर पिता सेहो बुझि गेलनि जे राघव ऐ उत्तरसँ संतुष्ट नै अछि। हमर पिता हमरा लोकनिक प्रसन्नतासँ आनन्दित आ हमरा लोकनिक कष्टसँ दुखी होइत छलाह। ओ झटदनि कहलनि- ‘‘ठीक छै राघव। अहाँ चिन्ता नै करू। ई प्रश् हम राजकुमारीक पिता करमा उराँवसँ पुछबैक। फेर अहाँकेँ बताएब।’’

एक दिन जखन राजकुमारी अपन पिताक संग खादी भण्डार आयलि तँ हम दौगल अपन पिताजी लग गेलौं। हमरा देखते पिता जीकेँ याद एलनि। ओ हमरा दिस देखैत हँसए लगलाह आ करमा

उराँवकेँ पुछलखिन- ‘‘करमा उराँवजी, अहाँ अपन बेटीक नाओं राजकुमारी किएक रखलौं?’’

करमा उराँव कहलकनि- ‘‘श्रीमान, हमरा सेन्हा स्कूलक हेड मास्टर एकटा बड्ड सुन्दर कथा सुनौलनि। ओइ कथाक मुख्य पात्र एक गंभीर आ सुन्दरि कन्या छलैक। ओइ पात्रक नाओं छलैक राजकुमारी। ई नाम जेना हमरा हृदेमे रचि-बसि गेल। ओइ कथाक दू वर्षक वाद जखन भगवान हमरा बेटी देलनि तँ हम झटदनि एकर नाओं राजकुमारी राखि देल। श्रीमान, नामे अनुसार एकर व्यक्तत्व भऽ गेल छैक। बड्ड गंभीर, बुझनुक आ मिलनसार अछि हमर राजकुमारी। बेटा नालायक भऽ गेल अछि। सदतिकाल नशामे धूत्त रहैत अछि। मुदा हमर ई बेटी बेटोक भूमिका करैत अछि हमरा सभ लेल। ऐ सभ कारणे एकर वियाह एखन धरि टालि रहल छी। अनेको रिश्ता लड़काबलासँ आबि रहल अछि। मुदा डर भऽ रहल अछि जे कहीं ई चलि गेल तँ हमर सभकेँ की हाल हएत? इहो कहैत अछि, बाबा! हमरा वियाह नै करक अछि। हम अहाँ सबहक सेवा करए चाहै छी। मुदा श्रीमान एना कहीं भेलैक अछि? वियाह तँ करेबे करबै। राजकुमारीक माए हमरा आब सदतिकाल खोचारैत रहैत छथि : कहै छथि कियो बेटीकेँ भला अपना सुख लेल बिना ब्याहने अपना लग जिनगी भरि रखै छै? लोक की कहत? राजकुमारी नेनमतिमे ई बात कहि रहलि अछि जे

वियाह नै करब। हमरा अहाँकेँ मृत्युक पश्चात एकराकेँ देखतैक? आ श्रीमान हमरा राजकुमारीक मायकेँ बात कुनो अनरगलो नै लगैत अछि। हम तँ राघवजीक माएसँ सेहो निवेदन केलियनि अछि जे ओ राजकुमारी के वियाह लेल मनाबथि। राजकुमारी अहाँ लोकनिकेँ बात मानैत अछि।''

पिताजी राजकुमारीक पितासँ वार्तालाप चलि रहल छलनि। आब हमरा राजकुमारीक नामक रहस्यक पता चलि गेल छल। राजकुमारी एहेन संस्कारी बेटी अछि जे अपना माता-पिताक कारण वियाहो नै करय चहैत अछि, ई जानि राजकुमारीकेँ प्रति हम्मर श्रद्धा बढ़ि गेल। हमर पिता सेहो राजकुमारी आ ओकर व्यक्तिवसँ बड़ड प्रभावित भेलाह।

क्रम अहिना चलैत रहलै। किछु दिनक बाद हम एक दिन ई अनुभव केलौं जे मंगनू मिस्त्री राजकुमारी दिस किछु बेसी आकर्षित भऽ रहल छल। ठीक एकर विपरीत राजकुमारी ओकरासँ दूर हेबाक प्रयास। जखन हमरा मंगनू मिस्त्री देखलक तँ ओकरा अपन गलतिक अनुभूति भेलैक। कहलक- ''बौओ। अहाँकेँ मैनेजर साहेब ताकि रहल छलाह। हमरो पुछैत छलाह कि राघव कतए गेल

अछि? अहाँ जल्दीसँ हुनका लग जाउ। शायद किछु अत्यावश्यक कार्य छन्हि। जाउ बउओ जल्दी जाउ। "

हमरा भेल जे पिताजी हमरा तकने हेताह। आ हम तुरत पिताजी लग विदा भेलौं। हम जखने पिताजी लग जाए लग्लौं तँ मंगनू मिस्त्रीक मोन प्रसन्न भऽ गेलैक आ राजकुमारी किछु परेशान आ विवश बुझना गेल। तथापि हम पिताजी लग चलि गेलौं। आब चर्खाक कार्यशाला मे राजकुमारी आ मंगनू मिस्त्रीकेँ अलावे कियोक नै छलैक!

राजकुमारीक व्यक्तिवमे किछु विशेष अवश्य छलैक। ओ हमेशा बड़ड साफ-स्वच्छ वस्त्र धारण केने रहैत छलि। ओकर केश बड़ड नमहर आ झमटगर रहैक। आँखि छोट मुदा पनिगर, दाँत दूध जकाँ उज्जर सफेद, गसल-गसल, शरीर ने मोटे आ ने पतरे, कद करीब पाँच फीट-पाँच ईंच। कनीक शिक्षा प्राप्त करबाक कारणे राजकुमारी स्नो-पोडर इत्यादि लगबैत छलि। ओ आन आदिवासी लड़की सभ जकाँ अपन शरीरमे कतौं गोदना नै गोदेने छलि। ओकर हाथ, गर्दनि, छातिक किछु भाग, नाभि प्रदेशक किछु भाग आदि देखलासँ एना बुझना जाइ छलैक जेना ओकर समस्त शरीरमे

कुनो दाग वा धब्बाक नामो निशान नै छैक- *Spotless beauty!!!* ओ हमरा हरदम अप्पन छोट भाए जकाँ सिनेह करैत छलि। यदा-कदा हमराले अपन गामसँ मधु, आम, खीरा, ककरी, नेबो एवं अन्य चीज अवश्य आनैत छलि।

एक दिन मंगनू मिस्त्रीक संगे हम पुन: साइकिलपर चढ़ि राजकुमारीक गाम घुमए गेलौं। मंगनू मिस्त्री हमरा गामक मध्यमे बच्चा सभ लग छोड़ि देलक। हमहुँ ओइ बच्चा सभ संगे पाकल-पाकल बीजू आम तोरए लगलौं। एक कतीन बड़ड सिनेहसँ अप्पन बारीसँ कुन्दरी देलक आ कहलक- "राघव, अहाँ ई कुन्दरी मैनेजर साहेबले लेने जाउ। हुनका नीक लगै छन्हि।"

हम कुन्दरीबला झोरा उठा लेलौं। पता चलल जे मंगनू राजकुमारीक घर गेल अछि ओकर चरखा ठीक करक हेतु। हमहुँ एक हम-व्यस्क आदिवासी किशोर संगे राजकुमारीक घर दिस विदा भेलौं। हमरा लोकनिकेँ रस्तामे राजकुमारीक पिता करमा उराँव भेटल। ओ कहलक- राघवजी, हम तँ जंगल दिस जाड़नि लाबए जा रहल छी। मिस्त्री साहेब हमरे घरमे राजकुमारीकेँ चरखाक भाडठी कऽ रहल छथि। अहूँ सभ ओतए जाउ। करमा उराँव

अप्पन हाथमे तेजगर आ भरिगर कुरहरि लेने छल। ओकर पत्नी चारिटा रस्सी लेने ओकरे संगे जंगल जाए रहल छलैक।

खाइर, हम मस्तीमे चलैत राजकुमारीक अंगना लग एलौं। अंगनामे अबैत मातर बहुत विचित्र स्थितिक सामना करए पड़ल। एहेन स्थिति जकर कल्पनो नै केने रही। अंगनामे अबैत मातर देखै छी जे राजकुमारीक घरक दरबज्जा आधा ओटाएल आ आधा खुजल। राजकुमारीकेँ कानक आवाज आबि रहल छलैक। हमरा लोकनि जखन ओतए गेलौं तँ देखलौं जे मंगनू मिस्त्री राजकुमारीक संग बलजोरी शारीरिक सम्बन्ध स्थापित कऽ रहल अछि। राजकुमारीकेँ अपना बांहपाशमे दबेने!! विल्कुल हिंस पशु जकाँ! अचानक राजकुमारीक धियान हमरा दिस गेलैक। हम अपन गर्दनि मोड़ि वापस जाए लगलौं। राजकुमारी बहुत जोरसँ धक्का मारि मंगनू मिस्त्रीकेँ अपनासँ अलग केलक। मंगनू मिस्त्री पुर्णत: वस्त्रहीन छल। अतबा काल धरि हम आ आदिवासी किशोर राजकुमारीक अंगनासँ बाहर चलि आएल रही। लगभग 10 मिनटक बाद मंगनू मिस्त्री हमरा लग आएल। साइकिल निकालैत कहलक- ‘‘चलू बउओ, आब वापस सेन्हा चलै छी। नै तँ अन्हारमे अनेरे परेशानी हएत। जंगल दने रस्ता छै। लोक सभ कहैत छल जे कखनो काल बाध-भालू, हाथी आदि रस्तापर आबि जाइ छै।’’

हम बिना किछु कहने ओकर साइकिलक पाछाँ बैस रहलौं। आनबेर राजकुमारी जाइकाल हमरा भेँट करए अबै छलि। ओइ दिन नै आएलि। हमहुँ भगवानसँ यएह मनबैत रहलौं जे 'हे भगवान आइ हमरा राजकुमारीसँ दर्शन नै हो तँ बड्ड उत्तम।'

मंगनू मिस्त्रीक साइकिलपर पाछाँ बैसल हम चुपचाप ओकरा संगे सेन्हा आबि रहल रही। रास्तामे कुनो तरहक वार्तालाप नै भेल। हमरा मोनमे मंगनू मिस्त्रीक प्रति घोर घृणा उत्पन्न भऽ गेल छल। ओ हमरा मनुक्ख कम राक्षस बेसी लगैत छल। मोन होइ छल ऐ पापीकेँ घेंट दबा दी आ एकर जीवनक अन्त कऽ दी। मोनमे राजकुमारीक प्रति दयाक भाव सेहो आबि रहल छल। ओकर विवशता आ लाचारीपर चिंतित छलौं। होइ छल केना कऽ राजकुमारी अप्पन चेहरा हमरा देखाओत आ केना कऽ हम ओकरासँ बात करब!! मोनमे घृणा, आक्रोश, लाचारी, विवशता-तमाम भाव एक संगे आबि रहल छल।

एकाएक मंगनू मिस्त्री साइकिल रोकि उतरि गेल। हमरा कहलक- "बौओ, कनी नीचा उतरू।"

हम उतरि गेलौं मंगनू हमरा कनीक डेराएल लागल। परेशान चेहरा, घामसँ तर-बतर, आँखि लाल-लाल, समस्त मुखाकृतिपर पश्चातापक भाव। ओ हमर हाथ पकड़ि बड़ा आत्मीय भावसँ जोरसँ दबेलक आ छोट बच्चा जकाँ कानए लगल। दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर झहड़ए आ मुँहसँ निकलए लगलैक- “बउओ, अहाँ तँ हम्मर दुनू बेटासँ छोट छी। हमरासँ गलती भऽ गेल। माफ कऽ दिअ। हम अहाँकेँ पएर पकड़ै छी। राजकुमारी सेहो अप्पन माथ-कपार पीट रहलि छलि। बउओ, अगर अहाँ ई बात अप्पन माए-बाबूजीसँ कहबनि तँ हम आत्महत्या कऽ लेब। राजकुमारी सेहो अप्पन जीवनक अन्त कऽ लेत।”

हम कहलियनि- “अहाँ एहेन काज किएक केलौं?”

तैपर मंगनू कहए लागल- “बउओ, गलती भऽ गेल। ई हम्मर जीवनक प्रथम आ अन्तिम गलती थिक। भविष्यमे आब कहियो नै हएत। अहाँ अप्पन माए-बाबूजीसँ ऐ बातक चर्चा नै करबनि। हम आहाँक पएर पकड़ै छी।”

हमरा मंगनू मिस्त्रीपर दया आबि गेल। हम कहलियनि- "ठीक छै, हम अप्पन माए-बाबूजीसँ ऐ सम्बन्धमे कुनो चर्चा नै करबनि।"

हमर ऐ अश्वासनपर मंगनूकेँ जान-मे-जान एलेक। ओ हमरा नीक जकाँ जनैत छल : जे हम एकबेर जे बाजि देलौं से ब्रह्मलकीर होइत छै। एकर बाद हमरा लोकनि सेन्हा आबि गेलौं। मंगनूक प्रति हमर मोनक घृणा आइयो धरि नै कम भेल अछि।

ऐ घटनाक बाद हम दू मास धरि राजकुमारीक गाम नै गेलौं। घटनाक बादक 15मा दिनक बीटमे राजकुमारी नै अएलै। सूत लए बीट करक हेतु ओकर पिता : करमा उराँव असगरे अएलै। करमा पिताजीकेँ कहलकनि जे राजकुमारी केर तबियत ठीक नै छै।

किछु दिनक बाद हम एक वर्ष लेल अपन गाम आबि गेलौं गामे केर स्कूलमे भैया नाओं लिखा देलनि। पुन: एक वर्षक पश्चात सेन्हा गेलौं तँ पता चलल जे राजकुमारीक वियाह भऽ गलैक आ ओ आब अपन पतिक संगे अप्पन सासुरमे रहैत अछि। चरखा ओ सासुरोमे कटैत छलि। सामान्यतया ओकर पति बीटक दिन कऽ सूत लऽ

कऽ आबि जाइ छलैक। एक दिन एक महिला पाछाँसँ हमरा टोकलक- ‘‘राघवजी’’!

हम पाछाँ तकलौं तँ राजकुमारी छलि। एकदम पातर, रोगी जकाँ शरीर, आँखिक पानि गाएब, चेहराक लालिमा समाप्त, केश ओझराएल, फाटल मैल सनक नुआ पहिरने.....। पहिने तँ चिन्हेमे नै आएलि। फेर ओ स्वयं कहए लागलि- ‘‘विमार पड़ल छी। डाक्टर कहैत अछि टी.वी. भऽ गेल अछि। बड़ड महग इलाज छै। कौहुना चला रहल छी। राघवजी, अहाँ कोना छी?’’

राजकुमारीक बगे देख हमर मोन खिन्न भऽ गेल। भेल एक लहलहाइत फूल असमैमे केना मुरझा गेलै? भगवान एकरा की केलथिन? अतबे कहलिऐक- ‘‘हम ठीक छी। कहियो अहाँक सासुर अवश्य आएब। जल्दीये आएब किएक तँ पिताजीकेँ तबादला होबएबला छन्हि।’’

ई कहि हम अप्पन संगी सभ लग खेलाइले चलि गेलौं।

तकर बाद करीब चारि मास धरि हम सेन्हा रहलौं। मुदा हम कहियो राजकुमारी लग नै गेलौं आब हम राजकुमारी ओइ मुरझाएल, विमार आ आभाहीन मुखमण्डलकेँ नै देखए चाहै छी। एक दिन भोरे-भोर करमा उराँव हमर माए लग आबि कानए लागल। ओकर बूढ़ शरीर हीलए लगलैक। माए पुछलथिन- ‘‘की भेल?’’

तँ करमा उराँव आरो जोरसँ ठोहिपाड़ि कानए लागल। बड़ी-कालक बाद टुटैत स्वरमे कहलकनि- ‘‘की कहू मालकिन, हमर राजकुमारीकेँ दुनियाँ उजड़ि गेल। ओकर सर्वनाश भऽ गेलैक।’’

हमरा माएकेँ भेलनि, शाइद राजकुमारीक पतिक देहान्त भऽ गेलैक। चिंतित एवं व्यग्र होइत पुछलथिन- ‘‘साफ-साफ बाजू ने की भेलै राजकुमारीकेँ? अहाँ जमाएकेँ तँ ने किछु भेल?’’

तैपर करमा उराँव कहलकनि- ‘‘ओइ कसइयाकेँ किए किछु हेतै मालकिन। पहिने तँ हमरा बेटीकेँ दुखित कऽ देलक। फेर अवहेलना। तकर बाद दोसर वियाह कऽ लेलक। आब हम्मर जमाए आ ओकर सगही बहु, दुनू मिल कऽ राजकुमारीकेँ अपना घरसँ मारि-पीट कऽ भगा देलकै।’’

हम्मर माता-पिता एवं हम स्वयं करमा उराँवकेँ ऐ व्यथासँ बड्ड द्रवित भेलौं। मुदा की कऽ सकै छलिऐक। कनी-कालक बाद भोजन बनलै। माए ओकरा बलजोरी भोजन करा देलथिन। एकटा नव नुआ, ब्लाउज, साया तथा तीन खण्ड पुरान नुआ राजकुमारीकेँ पहिरैले देलखिन। पिताजी किछु नगद सेहो देलखिन।

एक मासक बाद पिताजीक स्थानान्तरण सेन्हासँ राँची भऽ गेलनि। हम सभ राँची आबि गेलौं। करीब एक वर्ष बीत गेलै। एक दिन राँची किछु समान लेबाक लेल मंगनू मिस्त्री अएलैक। ओ हम्मर माएसँ भेँट करए अएलनि। अनेक तरहक बात भेलैक। अन्तत: माए पुछलखिन- ''राजकुमारीक की हाल? दोसर वियाह केलकै की नै?''

मंगनू मिस्त्री कहलकनि- ''वियाह की करत बेचारी। ओ तँ ऐ दुनियेसँ विदा भऽ गेल। राजकुमारीक मरला करीब पाँच साम भऽ गेलैक। पहिने बाप मरलै बादमे अपने दवाइ दारूक बेतरे कहरि कऽ मरि गेल।''

ई बात सुनि हम्मर माए बड़ड दुखी भेलीह। हमरा भेल- 'चलू नीक भेलै, बेचारीकेँ कष्टसँ मुक्ति भेट गेलै।' हँ मंगनूपर धोर तामस होइत छल। भेल ई आदमी 10 बरिससँ टी.बी.सँ ग्रसित अछि। मुदा नीक वस्तु सभ खा पी कऽ दवाइ लऽ कऽ सामान्य जीवन जीब रहल अछि। ई नीच, चरित्रहिन आ चूहर मिस्त्री अप्पन वीमारी राजकुमारीकेँ पटा देलकैक। एक्के संग ओकर परिवारक सर्वनाश कऽ देलकैक। भगवान एकरा किएक नै कुनो दण्ड दैत छथिन!!!

रातिमे हम असगरमे बड़ड कनलौं। मुदा अन्तत: ऐ बातक चैन जरूर छल जे आब बेचारी राजकुमारी संसारिक कष्ट आ यातनासँ आजाद भऽ गेल। पुनर्जन्मक बारेमे हमरा किछु नै बूझल अछि। अगर पुनर्जन्म होइ छै तँ हम भगवानसँ यएह प्रार्थना करबनि जे हे भगवान राजकुमारीकेँ अगिला जनममे कुनो राजाक घरमे सत्तेमे राजकुमारी बना देबैक आ अगर संभव हो तँ ओकर बाप करमा उराँवकेँ राजा बना देबैक आ तकरे बेटी राजकुमारीकेँ बनेबैक। हे भगवान अगर राजकुमारीकेँ राजा घर नहियो जन्म देबैक तँ ठीक मुदा ओकरा चूहर मंगनू मिस्त्री सनक घटिया आदमीसँ दूर रखबैक।

ऐ रचनापर अपन मतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

ज्योति सुनीत चौधरी

शहरक होलिका दहन

मोन अछि अपन छुटपनक होली।हम सब पिचकारी आ रंग किनाबयमे व्यस्त रहैत छलहुँ।मुदा पैघ लोक सबलेल तऽ होलीके पाबैन बेस परिश्रमक काज होयत छल।केवल महिला सब लेल नहिं बल्कि पुरूषो सबलेल।स्त्री सबके की छलनि. रर्चि रचि कऽ पूर्आ पकवान पकाऊ।बेसी सऽ बेसी कर्नी मनी बजार हाटक काज सेहो क लेती ।मुदा बजार हाट केनाई.. पार्क पकवान बनाबयमे मददि आदि काजक अतिरिक्त पुरूष सबके खस्सीक मॉँस कीनै लेल लम्बा पॉँतीमे ठाढ़ हुअ पड़ैत छलैन कारण ओहि दिन तऽ स्त्री सब

भानर्सभात छोड़ि मात्र होरीये खेलय बाहर निकलैत छली।
अहू सबसऽ बेसी मिहनतक काज छल दस दिन पहिने सऽ रातिक रात जगरना जे पुरूषे के करय पड़ैत छलैन।ओना तऽ गरमीमे खाट बगानमे बाहर कऽ सूतक चलन खूब छल। मुदा होली नजदीक अबिते लोकसब बाहर सूतय लागैत छल।कारण रातिमे मुहल्लाक युवक सब लकड़ी चोराकय होलिका दहनके समान जमा करैत छल।कनी नीक सऽ ऑंखि लागल तऽ बगानक बाउण्डरी के खुट्टा आ लकड़ीके गेट सब उखाड़ि लऽ जायत छल।ई समस्याक समाधान भेल जखन कम्पनी सबघरके सामने कन्क्रीटक छहरदिवारी बना देलकै मुदा लोहाके गेट अखनो बड़ नीचे छल जकरा फानिक लोकसब जीबैत बड़का गाछ सब काटिक लऽ जायत छल।कुनो लकड़ीक वा बेंतक समान जौं रातिमे बगानमे छुटि गेल तऽ फेर भोरे नहिं भेटत।
सबके बूझल छलैजे ई काज युवावर्गक अछि मुदा पकड़नाई मुश्किल छल। एकटा वृद्ध कक्का तहकीकातमे भीड़ल छलैथ जे जखन ई काज अहि मुहल्लाक लोक करैत अछि तऽ पकड़ने बिना छोड़ब नहिं। हुन्का लेल एकटा लोहाक कुर्सी सदखिन बाहरे रहैत छल। साँझ होयत छलै जखन ओ बगानमे अपन चिरपरिचित छटाव सऽ पुस्तक पढ़ैत चाय पी रहल छला कि नजरि गेलैन छौंरा सबके भीर पर।तुरन्त बजेलखिनजे की चोरीक नीति बना रहल छऽ।सब उदास भऽ लग आयल। प्राणामपातीक बाद कहलकैन जे ओकर सबहक दोस्तक दादा के दिमागी बिमारी भऽ गेल अछि से सब

दुःखी अछि। बुजुर्ग पुछलखिनजे की बिमारी भेल अछि ताहि पर सब कहलकैन जे आधा रातिमे चिकरय लागैत छथिन।बुजुर्ग बुझलखिन जे ई सब बात टारि रहल अछि आ इहो अंदाज भऽ गेलैन जे आहि राति ई सब फेर किछु करत तैं सम्मेलन कय रहल अछि।

फेर राति भेल आ सब अपर्न अपन खाट लगा बाहर सूतला।ई बुजुर्ग सेहो अपन बड़का टा बगान टपि गेट लग खाट लगाकऽ सूति गेला।हिन्कर बगानमे नीर्क नीक गाछ रहैन।हनुमानजीके झण्डा सेहो लगेने रहैथ बाँॅस पर। आहि बेसिये सतर्क छलैथ। करौट बदर्लि बदलि नींद तोड़ैत हला। बीच रातिमे लघुशंका लगलैन से कनिये काल लय भीतर गेला आ जैने बार एला तऽ हुन्कर खाटे लापता भऽ गेल छलैन।अतबे कालमे चोर सब दूर नहिं गेल हेतै से सोचि मोन भेलैन जे चिचियाई जोर सऽ आ सबके जगाकऽ खिहारि चोरके मुदा ककरो संगीके दादाके दिमागी रोग मोन पड़ि गेलैन ताहि कारने चुप रहि गेला।

ऐ रचनापर अपन मतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

डॉ. शेफालिका वर्मा

रेखाचित्र

ओ कत हेतीह

अखबारक सुरखीपर दृष्टि पड़ल, संगे एकटा छोट छीन समाचार कोनो कोन मे महत्वहीन सन खसल छल, टिहरी डैम काज करऽ लागल। ओकर फाटक सभ आस्ते-आस्ते खोलल गेल। पुरान टिहरीक समस्त अस्तित्व लांगना नदी मे समाहित भ' गेल.....

लोकक लेल समाचार छल किन्तु हमर समस्त तनकेँ काँटसँ छेदि गेल। समस्त मोन केँ ओहि पुरान टिहरी जकाँ भीलांगाना निमज्जित क' देलक। आँखिक आगु नाचि गेल चेहरा-अल्हड़ मस्त बाला! ओ कत' हेतीह?

पुरान टिहरीक टेढ़ मेढ़ बाट पर पहाड़ी झरना जकाँ उछलैत फानैत हमर संग-संग चलि रहल छलीह गोर नार रतलाम चेहरा, ठुमकल नाक, छोट-छोट आँख अनगिन स्वप्नसँ भरल, पातर-पातर लाल ठोरसँ फूल सन भहरैत हँसीक संग कोमल काया ओहि टेहरी

गामक समस्त संस्कृतिकेँ अपनामे समेटने छल। चलैत-चलैत बाटमे कोनो गाछ-वीरीछ आबि जाय तँ कात भ' जाइत छल हमरा रस्ता देखबैत, छोट-मोट शिलाखंड आबि जाय तँ ओकरापर चढ़ि जाइत छलीह आ पएरसँ ठेलि हमरा लेल रस्ता साफ कऽ दैत छलीह। कत्तौ पैघ पाथर आबि जाय तँ ओकरो ठेलबाक प्रयास करैत छलीह, नहि सकबाक कारण हमरा दिसि विवश दष्टिसँ तकैत अपन असमर्थतापर लजा जाइत छलीह। हम हँसि दैत छलौं- रेखा, अहाँ हमरा लेल किएक एतेक परेसान, भ' रहल छी- हम आस्ते-आस्ते चलबे करब- ने।

एहि पहाड़ी रास्तापर चलबाक अभ्यास तँ हमरा- छल नहि ऊँच-नीच, सकरी चाकर- मुदा, रेखा अपने ध्यानमे छलीह-
अहाँ देखैत छी दीदी जतेक अकास छूबैत पहाड़ सभ अछि डैम बनवाक बाद सभटा डूबि जायत-पते नै लगतैक जे एहिठाम कोनो शहरो छल आकि पहाड़ो छल- भय आतंकसँ ओ काँपि रहल छलीह- हँ पहाड़क, कोर मे बसल टेहरि जल-सामधि ल' लेत।

तावत बाटक दुनू कात एकटा बड़का बटवृक्ष देखाएल छल- हे देखू दीदी- ई लगैत अछि जेना दू ट गाछ होय मुदा ई बट वृक्षक जटासँ उत्पन्न दोसर गाछ थीक- आकाश मे एक दोसरा कँ आलिंगित करैत-एकटा तोरण द्वार बनौने। दीदी, जाहि ठाम एकटा

गाछ सेहो सृजन करैत अछि एकटा बीयासँ दोसर गाछ बनि जाइत अछि ताहि ठाम आदमी किएक ध्वंस करैत अछि?

ओकर निर्दोष प्रश्नपर हम अन्तरसँ काँपि गेछ छलौं- एकर उत्तर हमरा लग नै छल- खास कऽ ओहि अबोध बालाक भावुक प्रश्न लेल।

टेहरी गामक सड़केपर दोकान सभ पसरल छल, पटनाक स्टेशन मार्केट जकाँ, दिल्लीक कमला नगर जकाँ-ऊनी कपड़ा, कैसेट, कार्ड, गहना जेवर, तीमन तरकारी- ठेलापर छोले भूटूरे, गरम-गरम चाह सभक पंति। हम सभ पाँच छह गोटेसँ छलौं। हमर सभक झुण्ड देखि ओहिठामक निवासी सभक चेहरा फक्क भ' गेलैक-आब ई अनचिन्हार सभ आबि कोन कहर ढ़ाहत- आर कोन दुःख बाकी छैक।

तावत एकटा सुदर्शन व्यक्तित्व, भव्य चेतना उज्जर पैजामा कुरतासँ आवेष्टित व्यक्ति हमर सभक स्वागतमे आबि गेलथि। हमर सभक परिचय जानि सतीश बाबू हमरा सभकेँ अपना ओतऽ लऽ गेलथि- हम सभ तँ डैम देखबा लेल आयल छी- डैम।

एकटा फाटल हँसी संग सतीश बाबू बजलाह- पचास बरीस पहिने हम सभ एहिठाम आयल छलौं तखन कठपुल्लासँ ओहिकात बड़का

बजार

छल। एहिठाम सँ श्रीनगर, उत्तर काशी, रूद्रप्रयाग सभटा लगे अछि।

हमर आँखिमे कठपुल्लाकेँ स्पर्श करैत नदीक जल चमकि गेल- एहि नदीमे एखन कतेक जल होयत?

भागीरथीक पानि छब्बीस मीटर नीचाँ छल, आब दुइ सय मीटर उपर आबि गेल-ए- जतेक दोकान सभ सड़कपर अछि सभक दोकानमे सरकार ताला लगाय देलकैक- नयी टेहरीमे विस्थापन लेल। मुदा केओ अपन डीह-डाबर छोडि जेबा लेल तैयार नै अछि।

तावत एकटा सुन्दर सन पहाड़ी बाला गरम-गरम चाह बिस्कुट आ कतेक प्रकारक नमकीन ल' क' आबि गेलीह- लजाइत घबराइत हमरा सभक आगूमे चाहक कप राख' लगलीह।

-ई हमर बेटी रेखा थिकीह- हमर सभक उत्सुक नयनक समाधान सतीश बाबू केलथि।

ओ लजा कऽ ओढ़नी अपन माथपर राख' लगलीह- सरिपों पहाड़ी सुन्दरताकेँ कोनो एस्नो पाउडरक आवश्यकता नै होइ छैक।

- अहाँ पढ़ैत छी की रेखा- हमर प्रश्न पर ओ मुड़ी .....रौ ने हइ नै- ई की पढ़त? जाहि दिनसँ डैम बननाइ आरंभ भेल आ सभक विस्थापन नयी टेहरीमे भ' रहल छैक ताहि दिनसँ एकर हँसी खुशी

खत्म भ' गेलैक। भरि दिन गाममे एम्हरसँ ओम्हर बौआइत रहैत अछि। मुस्काइत रेखा ओहि ठामसँ भागि गेलीह। सतीश बाबूक पत्नी, बेटा, पुतौह सभ हमरा सभकेँ घेरने, हमर सभक स्वागतमे लागल छल।

-जनैत छी,ई गाम कहू कि शहर बड़ समृद्ध छल। सभ व्यापारमे हम सभ मुख्य रहलहुँ। हइ हइ, केओ-केओ डाक्टर, वकील सेहो बनलाह। ई शहर 1804 मे बसल छल। कहबी छैक जे राजा सुदर्शन शाहक घोडा भैरव मंदिर लग आबि ठाढ़ भ' गेल। तखन राजा एहि शहरक निर्माण केलथि। बहुत गोटे ईहो बजैत छथि जे यदि दुइ हजार पाँच धरि डैम नै बनत तँ कहियो नै बनत। ओम्हरसँ कोनो गौँआ बाजि उठल- कहियो नै बनत ई डैम। ठाम ठाम लीकेज भ' रहल छैक- आ बात करैत छी।

सतीश बाबूक घरमे सभटा गौँआ आबि गेल छल अपन दुखड़ा सुनेबा लेल जेना हम सभ भगवान छी- जेना हमरा सभक हाथमे बड़ पावर होय- रेखा घरक कोनमे परवा पकड़ने ठाढ़ हमरा दिसि टकटकी लगौने छलीह- पता नै ओकर मोनमे कोन भाव-अनुभाव चलि रहल छलैक।
-अहाँकेँ हम गाम घुमा दै छी। एहिठामक मंदिर सभक कलाकृति देखब तँ विस्मित भ' जायब।

-किन्तु, सभ व्यर्थ- एकटा निसांस लैत सतीश बाबू बजलाह।

रेखा हमर कानमे फुसफुसाइत बजलीह- हमहुँ चली अहाँ संग।

- हइ हँ किएक नइ? हमरो नीक लागत। हम उत्साहित भ' गेलौं। ओहि कोमल किशोरीमे जेना हमरा अपने छवि देखा पड़ैत छल- वर्ड्स्वर्थक जंगली फूल असगरे विहुसरैत' वायलेट, जकाँ अधा नुकायल- अधा देखारि। धृत गंगा, भीलांगना, भागीरथी तीनू नदीक संगम स्थलपर सत्येश्वर महादेवक मंदिर विशाल प्रांगणक संग जगमगा रहल छल।

-हम सभ एहि मंदिरकेँ पशुपति नाथक मंदिर बुझैत छी- सतीश बाबू बजलाह- मंदिरक प्रांगणक एक कोनमे बौध विरोधी संगठन धरनापर बैसल छल। ओहिठाम एकटा बड़का बैनर टाँगल छल..... हम तो इस झील की गहराई के पार जायेंगे लेकिन हमारे वो अपने कहाँ जायेंगे।
हमें तो अपने ही ले डूबे इस बात का गम किसे है ऐसा कौन सा शख्स जो हमसे नजर मिलाए लोग टूट जाते हैं एक घर बनाने मे कोई थकता नहीं बस्तियाँ उजाड़ने में ....टिहरी उजड़े लोगों का शहर है...''
आँखि भरि आयल, रेखा आस्तेसँ हमर आँगुर पकड़ि लेलीह। ओहि स्पर्शमे जेना दुनिया जहानक व्यथा नुकायल छल। हम सिहरि गेलौं। तावत केओ आगू आबि सम्मोहन तोड़ि देलक- हम सभ

उजड़ल लोक छी। लोक एकटा कटोरो कीनैत अछि तँ ओकरासँ स्नेह भ' जाइत छैक। ई तँ हमर जन्मभूमि, हमर गाम थीक। एकर माटिमे जनम लय हम सभ गाछ बिरीछ जकाँ बढ़ल छी। बद्री केदारक मंदिरसँ हमर सभक संस्कार बनल अछि। माता सदृश पूजने हवे एहि शहरकेँ। एहिठामक पाथरमे जिनगीक गीत गओने छी हम सभ.....

ओकर आँखि डूमि रहल छल- चारु कात गगन चुम्बी पर्वत शृंखला नीचामे तीनू नदीक गलबैहिया-बीचमे बसल टेहरी उजड़ल लोकक शहर एकटा संस्कृत कोना विनष्ट होइत अछि।

सतीश बाबूक छोट भाइ प्रियव्रत बजलाह- हम सभ तँ ईहो सुनने छी जे स्वामी रामातीर्थ अपन अन्तिम दिन एहि क्षेत्रमे बितौने छथि। एहि पर्वत शृखला दस हजार फीटक ऊँचाइक आसपास कतेको बस्ती बसल छैक- असगर टेहरी गामक जनसंख्या दस हजार सँ बेसी छैक- से गाम जलमग्न भ' जायत।
एकटा बुजुर्ग भावुक भ' कह' लगलाह- टेहरी गाम तँ बल्कि .... बहिए जायत' संगे कतेक तहसील एकर चपेटमे आबि जायत- हरदम भूकम्पक आशंका लागल रहैत अछि ताहिठाम ई डैम?- हुनक झुर्राइत आंगुर सुखायल आँखिकेँ नोरायल बुझि मल' लागल।

रेखाक आँगुर हमर हाथकेँ आर बेसी आर बेसी कसने जा रहल छल, हिमालयक धरतीपर सघन अरण्यक मध्य बनल एहि गामक कोन कोनकेँ हम अपन हृदयक कैमरामे उतारि रहल छलौं। हमरो सभक आँखि नोरा गेल छल।

भविष्यक विकरालता सोचि- बद्री केदार सत्येश्वरक ऐतिहासिक विशाल मंदिर, टूटल फूटल रहितो प्राचीन कलाकृतिक उत्कष्ट उदाहरण छल। जेना कोनो बीतल युगक कथा मौन मूक उजागर भऽ रहल होय।

चलु ने हम आबि कऽ भैरव मंदिर देखा दी- रेखा फेर फुसफुसा कऽ एकदम आस्ते सँ बाजलि- हइ हइ चलु- सभ अपना अपनामे छल आ रेखा अपन स्पर्शसँ हमरा अपना दिसि आकृष्ट करैत रहलीह- ई हृदयक कोन रिश्ता थीक? हम ओकर संग चलैत रहलौं- पीपरक झमटगर गाछक नीचाँ छोट छीन भैरव मंदिर बनल छल- छोट सन। आदर सँ झुकि लोक प्रणाम करैत।

-ई भैरव मंदिर हमर सभसँ प्रिय स्थान अछि। हम जखन उदास होइत छी तँ एहिठाम आबि बैसि जाइत छी- रेखा बजलीह- ग्राम सँ बाहर शांत एकांत स्थानपर ई भैरव मंदिर छल जाहि ठाम सुदर्शन शाहक घोड़ा ठाढ़ भ' गेल छल आ एहि ग्रामक निर्माण भेल। एहि पुरातन मंदिरमे श्रद्धासँ हमर माथ झुकि गेल किन्तु रेखा हमर हाथ पकड़ने रहलीह जेना दूनूक हाथ एके संग प्रार्थना क' रहल होय।

की कियो एतेक मुखर होइत अछि- स्पर्शो एतेक जीवैत कथा कहानी बनि जाइत अछि? ई अनुभूति रेखाक स्पर्श हमरा देलक। एतेक देरमे पहिल बेर रेखा मुखर भेलीह किन्तु अन्तिम बात जे बजलीह हमर समस्त तन मोन कें कँपाय देलक, जेना भूक्षरण ओहि इलाकाक नै वरण हमर समस्त तन मोनमे भ' रहल होय।

-अहाँ जनैत छी- जखन डैम चालू होय लागत, गामसँ सभ भागि जायत हम एहि भैरव मंदिरमे आबि नुका जायब। हम संकल्प नेने छी एहि गामक संगे संग हम चलि जायब।

तखन ओकर बातपर हम ओतेक ध्यान नै देलौं- नेनमति छैक।

-एना नै बाजू रेखा। एकटा बाट जाहि ठाम समाप्त होइत छैक ताहि ठाम दोसर बाट स्वयं खुलि जाइत छैक। ध्वंसेपर निर्माण होइत छैक। एकटा नव सूर्योदयक नव विहान होइत छैक।

किन्तु ओकर चेहरा पूर्ववत भावहीन, पाथर सन रहल। जेना रेखा नै वरण ओ समस्त टेहरी ग्राम होय अपन माटि पानिक साकार अस्तित्व आ जखन अखबारमे पढ़लौं- समस्त टेहरी ग्राम भागीरथीमे समा गेल, जेना हमर मानसमे अचक्के भयंकर भूचाल आबि गेल-ओ कत' हेतीह' ओ कतऽ हेतीह।

ऐ रचनपर अन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

<u>३. पद्य</u>

<u>३.१.</u><u>शिवकुमार झा “टिल्लू” कविता रमा</u>

<u>३.२.</u><u>दुर्गानन्द मण्डल कविता हम देखलौं</u>

<u>३.३.</u><u>राजेश मोहन झा “गुंजन” कविता वसंत गीत</u>



३.४. ज्योति सुनीत चौधरी एकान्तक पुनरावृत्ति



३.५. आशीष अनचिन्हार दू टा गद्य कविता



३.६. नवीन कुमार आशा- तोहर गोर गोर गाल

-



३.७. किशन कारीगर भिन भिनौज

३.८.  प्रभात राय भट्ट दूटा गीत



शिवकुमार झा "टिल्लू"

कविता

रमा

साँझ पहर दिप-वाती दिन एलौं

रमा नाओं रखने छलि बाबी

मातृ कोरक हम पहिलुक नेना

कोन-कोन जीवन गति गाबी

खढ़क मचान निलय बनि चमकल

कनक-रजतसँ छनछन माता

पिताक बटुआमे बैसलनि लक्ष्मी

कण-कण खह-खह कएल विधाता

लव-कुश बनि जननीक कोखिसँ

दू-दू सारस आङनमे खिलाएल

तरूण लताकेँ स्निग्ध देखि

सर समाज घूरथि औनाएल

धेलकनि पाण्डु जर बाबूकेँ

नोकरी छोड़ि खाटपर खसलनि

खेत पथार व्याधि संग बूड़ल

तैयो तेसर लोकमे पैसलनि

जै ओलती छल तृप्त पपिहरा

सुग्गा चुनमुनीक चहचह शोर

क्षणहिंमे देवराज टपकेलनि

शरद-निशामे आगि इन्होर

हाथसँ करची कलम छूटि गेल

छोड़ि पड़ेलनि भामिनी- भद्रा

चरण नुपूर धरा खसि टूटल

आङन बाड़ी भरल दरिद्रा

काँच बएसमे सेंथुमे सिनूर

गदगद भेलीह मातु सुनयना

कहुना लाज गेल दोसर घर

सुखद नोर खसबै छथि मयना

कंतक आङन सेहो कलुष भेल

जखने निकसल वज्र चरण रज

रैन पचीसी संग सिनेहक

लहठी फोड़ि निपत्ता पंकज

तुसारिक निस्तार कोना कऽ करितौं

उज्जर नूआ खाली हाथ

सेंथुसँ सेनुर अपने पोछलौं

आन्हर सासु संग पीटै छथि मॉथ

आजुक डाइन- कहियो छलौं लक्ष्मी

छाँहसँ भागथि अहिवातिन सभ

नोरक घृतसँ चिनुआर निपै छी

ककरो संग नै बाँटब कलरब

काक-दृष्टि धेने छथि बाहर

चानन ठोप केने किछु लोक

आर्य भुवनक रौ बनमानुष सभ

गर्दनि दाबि पठबए परलोक

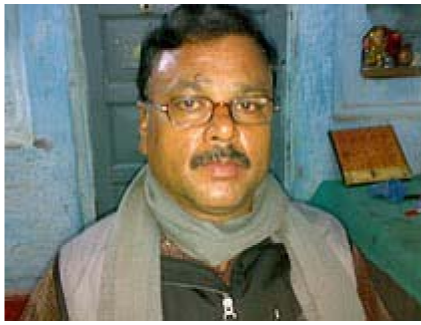
नारीटा लेल नियम केहेन ई?

वरन् एक तँ कहाएब सती

अपन कांताकेँ छोड़ि घरमे

कहिया धरि तकबेँ अबला रति?

ऐ रचनापर अपन मतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

दुर्गानन्द मण्डल

कविता

हम देखलौं

हम पूर्णिमाक रातिमे

चुपेचाप धरतीपर चानकेँ उतड़ैत देखलौं

घासपर गिड़ैत ओसक बुन्नमे अपन मुँह देख

चानकेँ खिल-खिला कऽ हँसैत देखलौं

हम पूर्णिमाक रातिमे

चुपेचाप चानकेँ धरतीपर उतड़ैत देखलौं।

नवयौवन, कोमल, सुन्नर ओ सुरति

ओइ चानक पूरा मुखड़ा हम देखलौं

धरतीपर प्रकृतिक सुन्नर, मनोरम, दृश्य देख

गाछ-बिरिछ संग चानकेँ झुमैत देखलौं

हम पूर्णिमाक रातिमे

चुपेचाप चानकेँ धरतीपर उतड़ैत देखलौं।

चान कहलक एतऽ हमरा सभ किछु नीक लागल

परंच कुत्सित मानव दानवीय व्यवहार

नीक नै लागल

हमरे जकाँ शीतलतासँ अपन मनक भावना बाजू

मानवक रंग, मानवक रूप छोड़ि दानवक भाषा नै बाजू

चुपेचाप मानवक लेल, चानकेँ चिट्ठी लिखैत देखलौं

हम पूर्णिमाक रातिमे

चुपेचाप चानकेँ धरतीपर उतड़ैत देखलौं। ।

ऐ रचनापर अपन मतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।



राजेश मोहन झा

“गुंजन”

कविता

वसंत गीत

किसलय सुमन मुस्कान सखी गे,
कोकिल कलरब गान सखी गे
देख जुआनी महुओमे आएल
मुखरित हर्षित मुस्कान सखी गे।
राज ॠतु बनि बसि कुंजमे
लोढ़थि फूल रति-मृगनयनी

उदित-मुदित घोघ तर नयन
हेरथि सिय-भगवान सखी गे।
रंगक रेखसँ निशा भेल चकमक
वेला पौली कुसुम सुवासित
आशाक लता हृदेमे लतरल
राधा केर मानव प्राण सखी गे।
शिशिर शेष समीर भेल मादक
आदित्य किरण तीक्ष्ण वाण बनल छथि
त्रिपुरारि रतिक क्रंदन सुनि कऽ
करै छथि प्राण-प्रदान सखी गे।
कुहकैत कोइली वसंत हकारथि
आम-पल्लवपर मंजरि भावथि
सुरमित सुगंध मोन हेराबथि,
पुष्प-वासपर भ्रमर गान सखी गे।

ऐ रचनापर अपन मतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

ज्योति सुनीत चौधरी

एकान्तक पुनरावृत्ति

लीखब नहिं मानू मात्र एक जिज्ञासा
ई तऽ बनि गेल अछि एक पिपासा
विषय के भरल असीम भण्डार
जौं नहिं कऽ सकैत छी किछु आर
कम सऽ कम अपन शब्द सऽ
विकसित विचारके व्यक्त कऽ
मिटाबी कुरीति के भ्रान्ति
आनैत रही वैचारिक क्रान्ति
दिमागसऽ बेसी मोनक जागृति
चिन्तनशील एकान्तक पुनरावृत्ति

ऐ रचनापर अपन मतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

आशीष अनचिन्हार

दू टा गद्य कविता

1 (वाद)

भूख की छैक, यथार्थ की कल्पना ? अथवा एकरा एना कहिऔ जे भूख के कोन वाद मे बन्हबै----
यथार्थवाद-----
तदर्थवाद-----
अभिव्यंजना वाद
नव चेतना वाद

वा की-----------?????????

2 (काल प्रश्न)

जकरा गाँड़ि ने धोबए आबए से ओझा कहाबए।
अच्छा कहू त जकरा धोबए अबैत छैक तकरा की कहबै ?
मंत्री, सभापति, अध्यक्ष आ की------------?????????

ऐ रचनापर अपन मतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

नवीन कुमार आशा

तोहर गोर गोर गाल ... ...

....

तोहर गोर गोर गाल

गोरि करे कमाल

तोहर तिरचि नज़र

गोरि करो असर

तोहर.....................।

मुस्कान तोहर अनमोल

ओकर नहि मोल

जखन निकलो तोहर बोल

लगे हील गेल दिल

आखि जखन देखि तोहर

राती भ्रर रहि जै जागि

तोहर गोर गोर गाल

गोरि.......................।

गाल पर देखि जखन तिल

रुकि जाइ दिल

देखि तोहर सुनर काया

मन के नहि आवे माया

सोचे पापी ई मोन

रहितो जखन उदास

पबितो तोरा पास

तोहर गोर गोर गाल

गोरि करो कमाल.......।

देखि तोहर मुह
जिनाय भय जय दुरुह

फ़ेर कहे ई चनचल मोन

कहि दी ओ गप
जे बनि गलो अपच

आब कहि तोरा गप

चाहि तोहर साथ

चाहि तोरा बेहिसाब

जखन गोरि पायल तोहर साथ

लागल भय गलो सफ़ल

तोहर गोर गोर गाल

गोरि करो कमाल...........।

(ए. झा क लेल...........)

ऐ रचनापर अपन मतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

किशन कारीगर

भिन भिनौज

आई अपने भैयारी मे कए रहल छी कटवा-कटौज

भ रहल छी अपने भैयारी मे भिन भिनौज

बाबू जी अनैत छलाह किछू नीक निकौत

त दुनू भाई करैत छलहूँ खूम घोंघाउज।।

एक्के थारी में बैसी के खाइत छलहूँ

मुदा एहेन बॅटवारा नहि देखल

ओ नहि हमरा देखैत अछि हम नहि ओकरा

कनेक नासमझीपन आब भिन भिनौज सेहो करेलक।।

बाबू जी केर मोन दुखित भेलैन केकरो आब आस नहि

ओ कहैत छै हम नहि देखबैए भैयाक पार छै

हम कहैत छियैक हम किया देखबैए छोटका के पार छै

मरै बेर मे आब बुरहबा के एक लोटा पानि देनिहार कियो ने।।

छोटकी पुतहू झॉउ झॉउ क रहल अछि

त सैझलियो कोनो दसा बॉकी नहि रखने अछि

ई कटवा कटौज आई अपने मे भए रहल अछि

एहेन भिन भिनौज देखि बुरहबा शोक संतापे मरि रहल अछि।।

झर झर बहि रहल अछि बुरहबाक ऑखि सॅ नोर

एसकरे कुहैर रहल छथि मुदा केकरा करताह सोर

सब किछू एक रंगे बॉटि देलाक बादो

पुतहू मुॅह चमकबैत अछि त बेटा खिसियाअैत अछि भोरे भोर।।

हमरा सुखचेन सॅ मरअ दियअ ने

सभ सॅ बुरहबा नेहोरा कए रहल छथि

मुदा जल्दी मरि जाउ घरक गारजीयन ई बुरहबा

सभ मिली हुनका गंगा लाभ करा रहल छथि।।

गंगा लाभ करैते मातर थरा थरा के मरि गेलाह

ओही दुनू कपूतक बाप ओ अभागल बुरहबा

ई सुनि आई किशन बहा रहल अछि नोर

कठियारी जेबाक लेल केकरा करत सोर।।

हाई रे आधुनिक बेटा पुतहू ई की

जीबैत जिनगी माए बापक सत्कार नहि करैत छी

मुदा हुनका मरलाक बाद ई की

पॉच गाम ल पूरी जिलेबीक भोज किएक करैत छी।।

केकरा सँ कहू ओई बुरहबाक दुःख तकलीफ

अपटी खेत मे चलि गेल प्राण हुनकर

एहेन नहि देखल ई कटवा कटौज

कारीगर करैत अछि नेहारा नहि करू एहेन भिन भिनौज।।

ऐ रचनापर अपन मतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

प्रभात राय भट्ट दूटा गीत

१

गाम आबिजाऊ हमर दुलरुवा पिया,आबिगेलई होली !!

अहि केर प्रेमक रंग स: रंगाएब हम अपन चोली !!

यी प्रेमक पाती में लिखरहल छि अपन अभिलाशाक बोली !!

अईबेर प्रभात भाईजी गाम अओता की नए पूछीरहल अछि फगुवा टोली !!

बौआ काका के दालान में बनिरहल अछि फगुवाक प्लान !!

चईल रहल छई चर्चा अहिके चाहे खेत होई या खलिहान !!

कनिया काकी कहै छथिन बौआ क देखला बहुते दिन भगेल !!

वित साल गाम आएल मुदा विना भेट केने चईल्गेल !!

अहाक संगी साथी सब एक मास पाहिले गाम आबिगेल्ल !!

अहाक ओझा २५ किल्लो क खसी आ भांगक पोटरी अहिलेल दगेल !!

गाम आबिजाऊ हमर दुलरुवा पिया जुड़ाउ हमर हिया !!

पूवा पूरी सेहो खिलाएब ,घोईर घोईर पियाएब हम अहाक भंग !!

अहि केर हाथक रंग स: रंगाएब हम अपन अंग अंग !!

रंग गुलाल अवीर उडाएब हम दुनु संग संग !!

प्रेमक रंग स: तन मन रंगाएब एक दोसर के संग संग !!

२

आदर्श विवाह

हम छी मिथिलाक ललना,

दहेज़ ला क बनब नए बेल्गोब्रा,

दहेज़ लेनाए छई अपराध,

कियो करू नए एहन काज,

हम करब विवाह आदर्श,

अहू लिय इ सुन्दर परामर्श,

भेटत सुन्दर शुशील कनिया,

आहा स प्रेम खूब करती सजनिया,

आँगन में रुनझुन रुनझुन,

बाजत हुनक पैजनिया ,

घर केर बनौती सुन्दर संसार,

भेटत बाबु माए केर सेवा सत्कार,

छोट सब में लुटवती वो दुलार,

अहक भेटत निश्छल प्रेमक प्यार,

जौ दहेज़ लयक विवाह करबा भैया,

कनिया भेटत कारिख पोतल करिया,

हुकुम चलैतह शान देखैतह,

बात बात में करतह गोर्धरिया,

अपने सुततह पलंग तोरा सुतैत पैरथारिया,

बात बात में नखरा देखैतह,

भानस भात तोरे सा करैतह,

अपने खेतह मिट माछ खुवा मिठाई,

जौं किछ बाजब देतः तोरा ठेंगा देखाई,

रुईस फुइल नहिरा चईल जेताह,

साल भैर में घुईर घर एतः

सूद में एकटा सूत गोद में देतः

पुछला स कहती इ थिक अहाक निशानी,

आब कहू यौ दहेजुवा दूल्हा,

आहा छी कतेक अज्ञानी ???

तेय हम दैतछी यी सुन्दर परामर्श,

सुन्दर शुशील भद्र कनिया भेटत,

विवाह करू आदर्श,विवाह करू आदर्श!!!

ऐ रचनापर अपन मतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

विदेह नूतन अंक मिथिला कला संगीत

१.**श्वेता झा चौधरी** २.श्वेता झा (सिंगापुर)

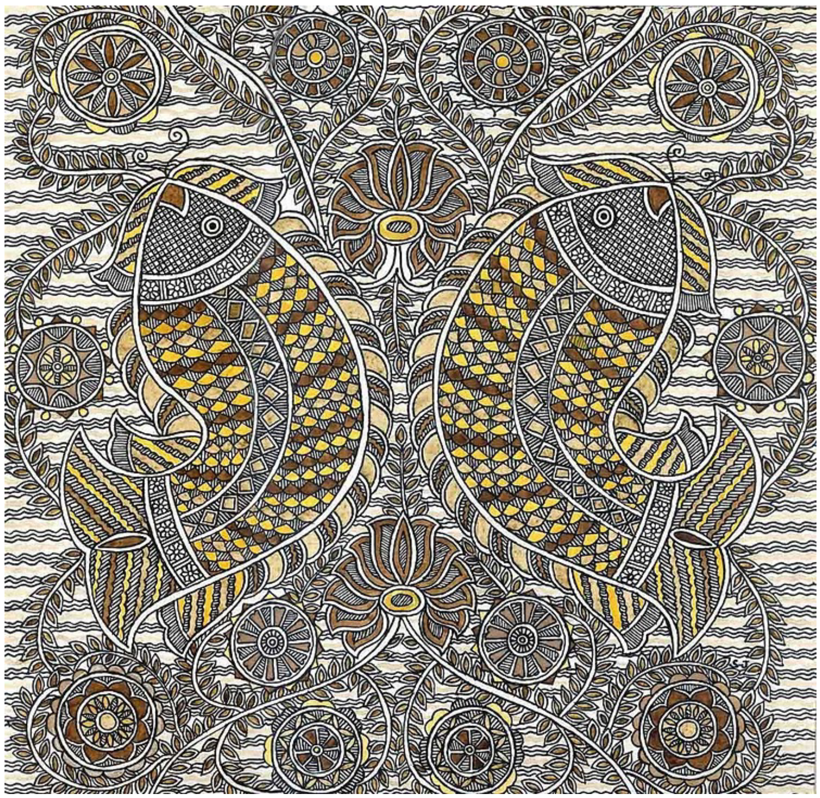
१

**श्वेता झा चौधरी**

गाम सरिसव-पाही, ललित कला आ गृहविज्ञानमे स्नातक। मिथिला चित्रकलामे सर्टिफिकेट कोर्स।
कला प्रदर्शिनी: एक्स.एल.आर.आइ., जमशेदपुरक सांस्कृतिक कार्यक्रम, ग्राम-श्री मेला जमशेदपुर, कला मन्दिर जमशेदपुर (एक्जीवीशन आ वर्कशॉप)।
कला सम्बन्धी कार्य: एन.आइ.टी. जमशेदपुरमे कला प्रतियोगितामे निर्णायकक रूपमे सहभागिता, २००२-०७ धरि बसेरा, जमशेदपुरमे कला-शिक्षक (मिथिला चित्रकला), वूमेन कॉलेज पुस्तकालय आ हॉटेल बूलेवार्ड लेल वाल-पेंटिंग।

प्रतिष्ठित स्पॉन्सर: कॉरपोरेट कम्युनिकेशन्स, टिस्को; टी.एस.आर.डी.एस, टिस्को; ए.आइ.ए.डी.ए., स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, जमशेदपुर; विभिन्न व्यक्ति, हॉटेल, संगठन आ व्यक्तिगत कला संग्राहक।

हॉबी: मिथिला चित्रकला, ललित कला, संगीत आ भानस-भात।



२.

श्वेता झा (सिंगापुर)



विदेह नूतन अंक गद्य-पद्य भारती

१. **मोहनदास (दीर्घकथा):लेखक: उदय प्रकाश**_(मूल हिन्दीसँ मैथिलीमे अनुवाद विनीत उत्पल)

मोहनदास (मैथिली-देवनागरी)

मोहनदास (मैथिली-मिथिलाक्षर)

मोहनदास (मैथिली-ब्रेल)

२.छिन्नमस्ता- प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यासक सुशीला झा द्वारा मैथिली अनुवाद

छिन्नमस्ता

३

वासुदेव सुनानी:ओड़ियाक प्रमुख दलित कवि, तत्कालीन कालाहाण्डी (आब नुआपाडा) जिलाक मुनिगुडा गाममे जन्म। कविताक चारिटा पोथी प्रकाशित। "महानदी बेसिनक

दलितक सांस्कृतिक इतिहास" आ जोतिबा फुलेक जन्मचरित लिखबामे आइ काल्हि लागल छथि।

ओड़ियासँ अंग्रेजी अनुवाद शैलेन राउत्रॉय आ अंग्रेजीसँ मैथिली गजेन्द्र ठाकुर द्वारा

फूसि

जखन कखनो हमरा भेंट होइ छथि शबनम भौजी
हमरा प्रसन्न मुखक आशीष भेटैए

ईदक चानसन दीप्त

आ ओइ प्रसन्नताक बाद एकटा रहस्योद्घाटन-
"तूँ आब बड्ड पैघ भऽ गेल छैँ।"

फूसि!
पाँच फीट पाँच इन्चक मात्र अि वासुदेव, पएरसँ पहुँचा धरि
अखनो हुनकर चौखटिक उपरका भाग नै छूबि सकै अछि!
कहियासँ ई भऽ गेल पैघ?

पुछू ककरोसँ...
सभ कहत कि वासुदेव अछि
एकटा मामूली अभागल बाट-बटोही
इन्तजारीमे एकटा बिसरल बस अड्डापर।

अनुग्रहपर कएलापर कने काल लेल बिलमै अछि एकटा बस ओतए
मुदा जखन ओ चढ़ैबला रहैए,

ओकरा छोड़ि कऽ चल जाइए बस।

शबनम भौजी एकटा फूसि बाजैवाली यक्षिणी छथि,
आ ओ फुइस एहन बजै छथि जकर नै रहैए कोनो ओरे आकि छोरे।

जे कियो एतए अपनाकेँ बुझि रहल छी खैरात बँटनिहार,
कृपा कऽ रोकू एकटा बस।
वासुदेव एकर प्रतीक्षा कऽ रहल बड़ी कालसँ,
मड़राइत आत्मविश्वासक पगहाक अन्तिम छोरपर।

ऐ रचनापर अपन मतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

बालानां कृते

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक

१.प्रातः काल ब्रह्ममुहूर्त्त (सूर्योदयक एक घंटा पहिने) सर्वप्रथम अपन दुनू हाथ देखबाक चाही, आ' ई श्लोक बजबाक चाही।

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।

करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम्॥

करक आगाँ लक्ष्मी बसैत छथि, करक मध्यमे सरस्वती, करक मूलमे ब्रह्मा स्थित छथि। भोरमे ताहि द्वारे करक दर्शन करबाक थीक।

२.संध्या काल दीप लेसबाक काल-

दीपमूले स्थितो ब्रह्मा दीपमध्ये जनार्दनः।

दीपाग्रे शङ्करः प्रोक्तः सन्ध्याज्योतिर्नमोऽस्तुते॥

दीपक मूल भागमे ब्रह्मा, दीपक मध्यभागमे जनार्दन (विष्णु) आऽ दीपक अग्र भागमे शङ्कर स्थित छथि। हे संध्याज्योति! अहाँकेँ नमस्कार।

३.सुतबाक काल-

रामं स्कन्दं हनूमन्तं वैनतेयं वृकोदरम्।

शयने यः स्मरेन्नित्यं दुःस्वप्नस्तस्य नश्यति॥

जे सभ दिन सुतबासँ पहिने राम, कुमारस्वामी, हनूमान्, गरुड़ आऽ भीमक स्मरण करैत छथि, हुनकर दुःस्वप्न नष्ट भऽ जाइत छन्हि।

४. नहेबाक समय-

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरू॥

हे गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु आऽ कावेरी धार। एहि जलमे अपन सान्निध्य दिअ।

५.उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।

वर्षं तत् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः॥

समुद्रक उत्तरमे आऽ हिमालयक दक्षिणमे भारत अछि आऽ ओतुका सन्तति भारती कहबैत छथि।

६.अहल्या द्रौपदी सीता तारा मण्डोदरी तथा।

पञ्चकं ना स्मरेन्नित्यं महापातकनाशकम्॥

जे सभ दिन अहल्या, द्रौपदी, सीता, तारा आऽ मण्दोदरी, एहि पाँच साध्वी-स्त्रीक स्मरण करैत छथि, हुनकर सभ पाप नष्ट भऽ जाइत छन्हि।

७.अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः।

कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरञ्जीविनः॥

अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनूमान्, विभीषण, कृपाचार्य आऽ परशुराम- ई सात टा चिरञ्जीवी कहबैत छथि।

८.साते भवतु सुप्रीता देवी शिखर वासिनी

उग्रेन तपसा लब्धो यया पशुपतिः पतिः।

सिद्धिः साध्ये सतामस्तु प्रसादान्तस्य धूर्जटेः

जाह्नवीफेनलेखेव यन्यूधि शशिनः कला॥

९. बालोऽहं जगदानन्द न मे बाला सरस्वती।

अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत्त्रयम् ॥

१०. दूर्वाक्षत मंत्र(शुक्ल यजुर्वेद अध्याय २२, मंत्र २२)

आ ब्रह्मन्नित्यस्य प्रजापतिर्ऋृषिः। लिंभोक्ता देवताः। स्वराडुत्कृतिश्छन्दः। षड्जः स्वरः॥

आ ब्रह्मंन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शुरेऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्रीं धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योवा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे-निकामे नः पर्जन्यों वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगेक्षमो नः कल्पताम्॥२२॥

मन्त्रार्थाः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।

ॐ दीर्घायुर्भव। ॐ सौभाग्यवती भव।

हे भगवान्। अपन देशमे सुयोग्य आ' सर्वज्ञ विद्यार्थी उत्पन्न होथि, आ' शुत्रुकेँ नाश कएनिहार सैनिक उत्पन्न होथि। अपन देशक गाय खूब दूध दय बाली, बरद भार वहन करएमे सक्षम होथि आ' घोड़ा त्वरित रूपेँ दौगय बला होए। स्त्रीगण नगरक नेतृत्व करबामे सक्षम

होथि आ' युवक सभामे ओजपूर्ण भाषण देबयबला आ' नेतृत्व देबामे सक्षम होथि। अपन देशमे जखन आवश्यक होय वर्षा होए आ' औषधिक-बूटी सर्वदा परिपक्व होइत रहए। एवं क्रमे सभ तरहेँ हमरा सभक कल्याण होए। शत्रुक बुद्धिक नाश होए आ' मित्रक उदय होए॥

मनुष्यकें कोन वस्तुक इच्छा करबाक चाही तकर वर्णन एहि मंत्रमे कएल गेल अछि।

एहिमे वाचकलुप्तोपमालड़्कार अछि।

अन्वय-

ब्रह्मंन् - विद्या आदि गुणसँ परिपूर्ण ब्रह्म

राष्ट्रे - देशमे

ब्रंह्मवर्चसी-ब्रह्म विद्याक तेजसँ युक्त

आ जांयतां- उत्पन्न होए

रांजन्यः-राजा

शुरेंऽ बिना डर बला

इषव्यो- बाण चलेबामे निपुण

ऽतिव्या॒धी-शत्रुकेँ तारण दय बला

म॑हार॒थो-पैघ रथ बला वीर

दोग्ध्रीं॑-कामना(दूध पूर्ण करए बाली)

धे॒नुर्वोढा॑न॒ड्वाना॒शुः धे॒नु-गौ वा वाणी वोँढा॑न॒ड्वा- पैघ बरद ना॒शुः-आशुः-त्वरित

सप्ति॒ः-घोड़ा

पुर॑न्धि॒र्योवा॑- पुर॑न्धि॒- व्यवहारकेँ धारण करए बाली योँवा॑-स्त्री

जि॒ष्णू-शत्रुकेँ जीतए बला

र॑थे॒ष्ठाः-रथ पर स्थिर

स॒भेयो॒-उत्तम सभामे

युवास्य-युवा जेहन

यज॑मानस्य-राजाक राज्यमे

वी॒रो-शत्रुकेँ पराजित करएबला

निका॒मे-निंकामे-निश्चययुक्त कार्यमे

नः-हमर सभक

पुर्जन्यों-मेघ

वर्षतु-वर्षा होए

फलवत्यो-उत्तम फल बला

ओषधयः-औषधिः

पच्यन्तां- पाकए

योगेक्षमो-अलभ्य लभ्य करेबाक हेतु कएल गेल योगक रक्षा

नः-हमरा सभक हेतु

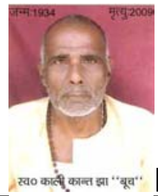
कल्पताम्-समर्थ होए

ग्रिफिथक अनुवाद- हे ब्रह्मण, हमर राज्यमे ब्राह्मण नीक धार्मिक विद्या बला, राजन्य-वीर,तीरंदाज, दूध दए बाली गाय, दौगय बला जन्तु, उद्यमी नारी होथि। पार्जन्य आवश्यकता पड़ला पर वर्षा देथि, फल देय बला गाछ पाकए, हम सभ संपत्ति अर्जित/संरक्षित करी।

8.VIDEHA FOR NON RESIDENTS

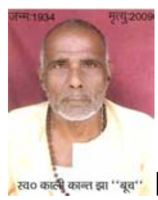
8.VIDEHA FOR NON RESIDENTS

8.1 to 8.3 MAITHILI LITERATURE IN ENGLISH

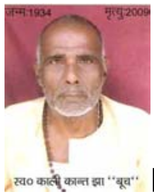
8.2.Original Poem in Maithili by 

Kalikant Jha "Buch" Translated into English by  Jyoti Jha Chaudhary

8.3.Maithili Novel Sahasrashirsha by  Gajendra Thakur translated into English by the author himself.

Original Poem in Maithili by 

Kalikant Jha "Buch" Translated into English by  Jyoti Jha Chaudhary



Kalikant Jha "Buch" 1934-2009, Birth place- village Karian, District- Samastipur (Karian is birth place of famous Indian Nyaiyyayik philosopher Udayanacharya), Father Late Pt. Rajkishor Jha was first headmaster of village middle school. Mother Late Kala Devi was housewife. After completing Intermediate education started job block office of Govt. of Bihar.published in Mithila Mihir, Mati-pani, Bhakha, and Maithili Akademi magazine.

Jyoti Jha Chaudhary, Date of Birth: December 30 1978,Place of Birth- Belhvar (Madhubani District), Education: Swami Vivekananda Middle School, Tisco Sakchi Girls High School, Mrs KMPM Inter College, IGNOU, ICWAI (COST ACCOUNTANCY); Residence-

LONDON, UK; Father- Sh. Shubhankar Jha, Jamshedpur; Mother- Smt. Sudha Jha- Shivipatti. Jyoti received editor's choice award from www.poetry.comand her poems were featured in front page of www.poetrysoup.com for some period.She learnt Mithila Painting under Ms. Shveta Jha, Basera Institute, Jamshedpur and Fine Arts from Toolika, Sakchi, Jamshedpur (India). Her Mithila Paintings have been displayed by Ealing Art Group at Ealing Broadway, London.

Dedicated To Wife

I will do anything for sake of your pleasure

I will live without life and suppress my soul forever

I will migrate to your house

Buying furrow from the Kamarsari (a place)

Getting a part of your father's land

I will grow money with crops

You will see how I will fill your house with treasure

I will do anything for sake of your pleasure

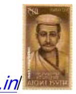
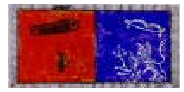
I will live without life and suppress my soul forever

A cow will be bough with bank loan

And that will be fed enough food

I will milk the cow in the morning

And will make tea for you

You will sip that lying on the bed and I will fill the saucer

I will do anything for sake of your pleasure

I will live without life and suppress my soul forever

I will go to Darbhanga very soon

And will bring many colourful dresses for you

If you will not be cured even after that

Then it will lead me to the east

I will run to the Alipur jail without ticket

I will do anything for sake of your pleasure

I will live without life and suppress my soul forever.

Maithili Novel Sahasrashirsha by 
Gajendra Thakur translated into English by the author himself.

Gajendra Thakur (b. 1971) is the editor of Maithili ejournal "Videha" that can be viewed at http://www.videha.co.in/ . His poem, story, novel, research articles, epic – all in Maithili language are lying scattered and is in print in single volume by the title "KurukShetram." He can be reached at his email: ggajendra@videha.com

The Thousand-headed

One thousand heads, thousand mouths, thousand types of gossip, all true and un..

The Sudras have come out of the feet and so has the earth.

FIRST KALLOL

I

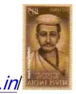
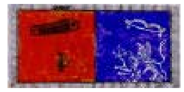
Garh Narikel, a village. It is predominantly inhabited by cattle-grazer Brahmins.

Ponds and trees are all around this village. In this village one … two … three and one more, four ponds exist.

Exactly it is not so. There are three more ponds in this village. One is in the northern direction of

the north pond, popularly known as the gigantic pond. People say that some monster dig thios pond in just one night. But while digging it the whole night was spent and the monster coul not install the centrak sacred wooden pole in the middle of the pond. As the monster was in a hurry so he left shoe of one leg there beside the mond and left the place. For many years that huge shoe remained there but again one year during flood that too got lost. So the only evidence that was there vanished. This pond is far away from the village, so no relation of this village could be established with the *Chhatha* festival. Yes, but this pond finds mention during the ceremony of sacred thread. Various types of fishes reside in this pond. There is never dearth of fishes here. No need has ever been felt for putting seeds (small fishes) of fishes into this pond. There happens an annual fish catching festival and barring the southern quarter of village, the whole village gets its daily share of fishes for at least one month.

To the southern direction of the south pond, there is a village called Buchiya (in the name of a person) pond. It is also far from the village, but there is sacred wooden pole installed in the centre of this village. When this central sacred wooden pole was being installed a big ceremony was thrown by the great great grandfather of the Zamindar, the Piyar Bachcha (meaning yellow boy). He had organized a grand great feast. This pond is far far away from the village and in all directions of this pond there are fields only. People rarely come here for taking a bath. Here too there happens an annual fish-catching ceremony, but that is only for this southern quarter of the village. There are many things attached with this pond. During Durga Pooja goddess Durga proceeds to her husband's place, actually on the last day of the festivities. On that day the idol of goddess Durga is immersed into this pond. Not the men, but yes, the women weep bitterly at the time of immersion of Durga. The idol of Durgaji is not made in this village,

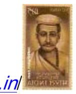
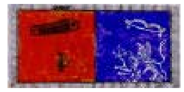


मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

no question of its being constructed in the southern quarter of the village. But it is immersed in this pond. This idol of Durga is made and worshipped in the neighbouring *Garh Tola* (small village). The *Garh Narikel* people are mischievous ones. Till the sixth day of Durga festival, the idol of Durgaji remains covered. Only the artist can see her because if he does not then how the idol be constructed. Any other people, however, would become blind if they see the Durga before being unveiled. Yes, but after the ceremony of Belnoti- when eye of Durga is placed out of an invited wood-apple fruit, the idol of Durga is unveiled and then only the people can see it. And from that day the actual festival begins. If idol of Durga is made in this village many people would become blind before the sixth day of the festival. The neighbouring village is not less mischievous one, its only the degree. In the name of festival all of them become disciplined. In the name of their village the suffix is added, tola (quarter of a village) suffix. But

that does not make it a quarter of a village; it is actually a full-fledged village. *Garh Tola* village is also inhabited by the cattle grazing Brahmins. In mischievousness there is always a competition between these two villages. If you pass through the *Garh Tola* village, the lads sitting in front verandas of their houses beside the road would often pass comments on you. But the naughty boys of *Garh Narikel* will consciously go through that village. But the disciplined ones pass through the road beside this *Buchiya* pond. Although the route is circuitous; but it is safe, do not mind.

There is one more pond in this village.

Towards the eastern side of the village, to control these two rivers Kamla and Balan, two dams were built. One is in north-south direction, adjacent to the village and towards the eastern direction. If you move forward towards that dam you will find the Kamla River; and then her

brother the Balan River. And further towards the eastern direction you will find another dam in the north-south direction. And between these two enclosures lies the Balli pond- in the name of a zamindar. Near this pond was a large football field. Due to siltation and also due to some wrong doing by the zamindar, this pond and that field got merged in the name of *chakbandi* (bringing together lands of one person at one place through mutual- often forced- exchange). The government had emphasized for the chakbandi for some unknown reason, perhaps because it increases food production. The land owned by Surju brother, filled with cattle dung and therefore very fertile, got merged with Yelloy Boy (Piyar Bachcha)'s land due to this *chakbandi*. In between the dams there is grazing field called *Bauwa Chauri*, used by the herdsman to graze their cattle. The cattle grazers come here, play here, and swim in Kamla River. Sometime they let their body flow in Kamla River and sometime they swim against the stream of

the river. Between the dams there is one quarter of the village, the quarters of of milkmen. Earlier it was part of the village but now their voter list has been shifted to Jhanjharpur bazaar. Long long ago, at the village school there was a voting booth. These people were not allowed to vote at that booth, now it is the other way round.

Some of the graduates of Bauwa Chauri- as they are called jocularly- work in Delhi and Mumbai and some of them work in Saudia (Saudi Arab and Middle East). Some of them are security guards and some of them have started a firm which deals in security guard services.

In village there are many mango orchards; the big orchard, the Kharhori- (near to the habitations) where new trees had been planted,

the Bhorha (near the abandoned course of a river) orchard; and the orchards over the mounds of the ponds. Earlier in the *Kharhori* there was agriculture land only. But once a person planted trees in his own land it brought shadow to other people's land. So the other people's production of paddy diminished. For sometime he talked about the mischievousness of his neighbor but he had to plant mango trees too in his land later on.

There is also an orchard of rose apple, all the sky high trees there. The Pepper trees are all around, at village deity's place and at the school compound; you will found the root of pepper tree here and the branches of the roots all around the place.

Beside the village roads are trees of wild betel nuts, many types of shrubs used to clean teeth, the bamboo plantation, different types of flowers and thorns; and the sensitive plant, everywhere in almost all the orchards. Over the broad mango branches, the guards put their bed and sleep. But there is only one banyan tree, beside the black metal road near the quarters of Muslims.

The lands are of various types. The land between the river dams, the sandy land are now being called as the other-side-land by the people. A creeper *tricosanthes dioica*, the watermelon, musk melon, sweet root; the cultivation of all these are done here. If you want to buy the cheapest land then come here. But after the flood recedes, you will find the shape and size of the boundaries of your land changed. If in one year, after the flood, the shape and size of the boundary diminishes, there is no need of inciting any quarrel, as the goddess Kamla river might increase the area the very next year. The

cultivation of paddy is also in existence. But that is often by chance, in some year even after sowing thrice it would be swiped away by the flood every time, but in some years the goddess Kamla river would fill so much fertile mud that whatever per katha production you are expecting, it would produce even more than that.

If you have good budget then buy the land near the habitations or near the white teak trees. Here people are buying land more for residence than for cultivation.

The land near the *Dakahi* pond is called *Barhamottar*. In old days some might have received this free land from the king. In old days, it is heard, these lands had good production, but now a day these remain always filled with water. The paddy seeds are thrown (different from the usual method of sowing the saplings) and paddy is cultivated (it, however,

results in less production) in this manner in these lands.

The big plots, near the roads, near the *Bhorha* (beside the abandoned river course) and near the *Purnaha* (in the midfields) are used for cultivation. Besides some people have started cultivation on the curved land of the village enclosure near the dams. In geography books terrace cultivation is said to be practiced only on hills, here you will find terrace cultivation in plains on manmade hills. The weeping sound of people, whose milk giving buffalo just died, can be heard often. The magical obsession can also be seen. Often some mischievous lads throw flowers and unbroken rice, supposedly worshipped by a magic man or women, during night at somebody's gate. It often leads to string of abuses by the offended household, who thinks that some bad-omen is going to grip their family.

But the people have come understood now that it remains the work of some naughty boys.

Agriculture-fishing-animal husbandry based cattle grazer Brahmin dominated village is surrounded by literate (although a thief quarter also exist in this literate village), not that much literate; and a subdued and calm village (subdued and calm village=where people acquiesce to pressure). However neighbourhood thiefs do not have courage to do theft in this village. If you have a social relation in this village then all the old disputes in respect of land would stand settled. Ordinary people get transformed into strong ones, with a social relation established through a marriage relationship. After the relationship the weak ones turns into ones, who are having say in society. From this village, the arms wielding trouble shooters visit far off places for settling disputes. These trouble shooters settle the disputes of relatives and forcibly capture election booths. The rate of land in this village is Rupees

twenty five thousand per Katha (1/20th of a bigha) but the same type of land in neighbouring village is available at a cheaper rate, say at Rupees ten thousand per Katha. The high lands in this village are cheaper because one cannot irrigate it with rain water. But after these dams were built, the cost of land of those monkey shaped people has also increased. Earlier the mediators of marriage, even after seeing that a boy is getting his share of only ten Katha in comparison to monkey shaped people's village boy getting one bigha, preffered boy of this village for marriage. Because in the village of those monkeys shaped people, subsistence is not possible even if the boy has ten bighas of land as his share. But the key to luck has now been unfolded to them; when the flood comes their highlands get irrigated. Monkey shaped…you did not understand? The orchards of that village are inhabited by the monkeys and the people also look yellowish same like the monkeys! Monkeyish (yellow- like monkeys)! And nobody liked the job

of a teacher, so all these monkey shaped village people became teachers. And now look at the salary of the teachers. All monkey shaped people, when they come out, wearing *Dhoti* (loin cloth) then people of this village get crazy out of envy.

However the Durga worship did not begin in this village. The submissive-village people also started it; but in this village? If we try how it is not possible? We did organise Ramlila (acts of Lord Ram performed by a theatre troope), is it a fact or not? But look, the roads started smelling with people's urine. We are lucky that Durga Pooja is not celebrated in this village. One will have to bring one's daughters during the celebration time; and the cohesion that this villagers have among themselves would break that the party-politics related with the Pooja brings.

The village is, however, predominantly of cattle grazing Brahmins.

Among the Brahmins of the village are Indrakant Mishra, Raman Kishor Jha and Arun Jha. On the day of *Sukhrati* festival (on the next day of Deepawali festival, festival of Hindus of Mithila) if you ever see the sport played by the buffalos of these cattle grazer Brahmins, you would lose interest in the game of polo. The pig purchased from the *Dom* caste of Samiya village is placed before the buffalos, drunk with cannabis drink. The cattle grazers who are sitting over the buffalo in Central portion of the animal, is an amazing scene to watch. In this village there are other castes too.

Between the dams, on the high mound is the quarter of milkmen. Even during flood this quarter of the village is never touched by flood water. The transportation during those days is through

boat. The rowers of boat inside Kamla are not the people from fishing caste but those are from the milkman caste. They receive grain from the villagers for their services. Yes, but from people of other village, they charge in cash for their services.

There is one Muslim quarter in the village, they are in vegetable business, bhut they do not grow vegetables but only sell it. In that quarter lives Mohammad Shamsul, his son lives in *Saudia*. This quarter is near the black metal road on the outskirts of the village. The people of this quarter of the village have registered their name in the voter list of the adjacent village. Near that quarters are four families of *Dom* caste. The reason for enrolling themselves in the voterlist of adjacent village by these people is the same as it was for the people of milkman's quarter. But the villages are not made out of the voter list. So these two quarters are still a part of this village. The necessity of Dom caste in festivals is

well known. The Dom Caste makes all types of articles from the bamboo, like the one for storage of grains and articles; and also the bamboo fans. The quarter of Muslims is also required, particularly for the meat, be it for the marriage party or for the guests. The head of the poor animal is taken by the Durga Pooja Committee after the holy-sacrifice ceremony to goddess Durga is over. In off-season the Muslims cut half the throat of the castrated he-goat. But after cutting the meat, they take the head and also the skins in lieu of their wages. When these cattle grazer Brahmins sing the devotional songs in front of the Hanumanji temple and perform twenty four hour non-stop worship at the temple, those drums which are used during the ceremony are made out of those skins.

And again there is Dhanukh-Toli. Bhagwandutt Mandal and Adhiklal Mandal are from the

quarters of the Dhanukh caste. Earlier those people carried the gifts to other villages carrying a special bamboo stick having two strings on the two sides and carried on their shoulder. But now this work is undertaken by the people from Dusadh caste. Agriculture is the avocation of people from Dhanukh quarters and Dusadh quarters. Yes, earlier these people worked as workers, but now they work on co-sharing basis. In times of strife there is not a single month when you will not find ladies from these quarters of village wielding blackened earthen utensils displaying these to the cattle grazer Brahmins. These people may be said to practice animal husbandry, so far as rearing of she-goat and uncastrated he-goat is concerned, the latter used for sacrifice to the godess Durga. Some of them have begun keeping one ox and turn by turn these people do ploughing and other agriculture work by coupling their oxen together.

Even though it consists of only three houses, the small quarters of washermen has become a separate quarter of the village. The clothes of even Marwaris (business people originally from Rajasthan, settled here) of Jhanjharpur town are cleaned here. The cattle grazer Brahmins go for marriage party wearing these flashy full pants, these are not their own, actually these are costly clothes of those Marwaris and lended by the washermen. The washermen gives these clothes on rent for two days, the clothes of the Marwaris.

Korail, Budhan and Domi Safi, all of them are washerman. Domi Safi is now Domi Das, he practices sect of Saint Kabir now. The quarter of barbers also consist of just three families. Jayaram Thakur, Lakshmi Thakur and Maley Thakur, all barbers, all are talkative. With them always remains the list of annual donation that each family has to give to these families of barbers in lieu of the services that these barbers

provide throughout the year. They are always on run, to claim their labour, whenever a person comes to village from town. Whoever comes during Durga Pooja from their far-off working place, they have to pay their due before their return to their workplace. Earlier in a fortnight these barbers went from one corridor to another for hair cutting. But now whoever wants a shave of his head or face will have to go to the barber's house. Yes, but if it is marriage of a son then they go to corridor of the bridegroom to shave the people who are going to attend the marriage party, but he sits at one place only. Whoever is there should remain in line. It should not be like that one is coming now and another is coming after a while. Now one from each of the family of barbers has started a saloon at Jhanjharpur. Saloon is a plastic cover placed over the bamboo pillars beside the railway track. The use of nail-pairer is almost extinct. The nail should be cut by the individuals themselves. During the period of condolence, after the death

of a person belonging to the same clan, the nail of the lady would be cut by the wife of the barber, only that. And during shaving beard with sharpened razor, if blood comes out, it would be not due to wrong movement of razor but as it would be because there was some blister there on face. No dear, this razor using the topaz safety blade is for my Jhanjharpur saloon.

There is another quarters of the village, of leather tanners. Mukhdev Ram and Kapildev Ram are prominent among them. Earlier they were residing outside the boundary of the village, beyond the bamboo plantations. But now the bamboos had been cut extensively, so it has thinned. The habitation of people has extended upto these quarters of the leather tanners. The construction of new buildings and the placement of bricks here and there is a normal scene. Announcing with the drum to ward-off evil spirit or to announce something; and to play drum and pipes are the works undertaken by them. If cattle

die, till it is lifted by them, people are in the grip of condolence of death; people can neither eat nor bath.

Among the carpenters the most respected in the village Garh Narikel is the family of Joginder Thakur. But when the titular head of the carpenters come from the far off village, then the intelligence of Joginder Thakur goes dim, and he utters only yes on both righteous and unrighteous utterances. Joginder has three sons, Bihari, Arjun and Shivanarayan. All are engaged in woodwork but Bihari do iron-work too; and Arjun has become cycle-mechanic, side by side. He does all the work from minor repair of rickshaws as well as bicycles and repairs the punctured tube. He has discovered the making of a cricket ball made out of the root of bamboo; he has discovered wooden circular plate to run through a crooked spike of iron-wire; and many more games. So when people say, look, if you read and write you would get job; this exception

should change their views. Look at Shivnarayan, how innovative he is, he makes many things even out of the useless inappropriate wood. But the hand-skill of Bihari is nowhere to be found, different types of cut- vertical, horizontal, crooked and oblique cuts, he is master of all.

Shivnarayan discovers, however Bihari replicates those discoveries in a better way. In villages there is no copyright available to a discoverer. On hard wood the saw and other implements of Shivnarayan gets blunt, but Bihari gets out of it, not knowing how! He makes something out of a weak wood and sells those in market. For sawing a plank if big saw is not available he even saws plank using the smallest available saw. He delineates the strong wood from the weak wood meticulously and dexterously.

Jagdish Mile is looked after for the holy cloth when offering of this to the goddess is required, his wife is very skilled.

Bhola Pandit is potter, he moulds and makes earthen vessels; and he makes earthen birds and earthen animals for the children too. In the making of earthen utensils he is unparelled.

Satyanarayan Yadav, the Raut Sir, and now the nomenclature has changed from milkman to Yadav Sir. From the trade of milk to agriculture and to fill the village road with earthwork, all these are in his hands.

Basu Chaupal is from Khatbe Caste, he carries gifts to other villages, and gifts include fish. He sales fish in the fish market.

Chalittar Sahu and Laddulal Sahu, both are sweet manufacturers, they arrange for a temporary shop during the Durga Pooja festival. During jovial festivities or during the feast related with death or death anniversies he gets contract of preparation of vegetable dish.

Shivnarayan Mahto is from Suri caste, a business class.

Laxmi Das is from Tatma caste, a thread weaving caste.

Lal Kumar Roy is from Kurmi Caste.

Bhola Paswan and Mukesh Paswan are from Dusadh Caste, earlier the milk business was held by them, but not now.

Satyanarayan Kamti is from Keot caste, they were stationed at the farmhouses of the Darbhanga Raj. Ramdeo Bhandari is from the Bhandari caste, this caste is a type of Keot caste, and they managed the Kitchen of Darbhanga Raj.

Kapileshwar Raut and Ramavtar Raut are from Barai caste, they do ancestral betal-leaf business.

From the Dom caste is Bodha Malik, from the Koir caste is Dukhan Mahto, from the Bhumihar caste is Radhamohan Roy; and from the goldsmith caste is Ashok Thakur.

Among the oil business community are Ramchandra Sao, Bauku Sao and Kari Sao.

From the fisherman community is Jibachh Mukhiya. In the Dakahi pond, once in a year, is held the fish catching fair. The fisherman put the big net into the pond; a whole quarter of fisherman comes to the pond for one whole month. Earlier the fair extended for more than one month but now due to scarcity of fish, it goes hardly over twenty days. Then the head of the fisherman announces- "Now the big fishes are no more in this pond. If we fish through the big net, none could be entrapped. But if we fish through the delicate small nets, all the small fishes would get caught. And then you will have to saw *fish seed* into this pond".

During those fifteen to twenty days, there remains festival like atmosphere in the village. This becomes excuse for the cleanliness of the pond. From early morning from 4 AM till the noon fishes are caught. And till the afternoon all the villagers- excepting the southern quarters of the village- are given their share. All the people, the representatives from different quarters, take their share and return to their respective quarters. All the families obtain their shares out of the share of their quarters. How many shares are there out of the quarter's share, sometimes it gives cause for strife. Till she was alive, may be one did not talk to one's widow aunt, but after her death people remember their aunt. May be that while she was alive, her desire to offer some share to her daughter might have been stalled by the nephew and may he might have obtained thumb impression of her dead aunt that becomes immaterial now. On this count strife ensues, and the wrestler whom people out of love calls wrestler uncle, receives that kind of

share, nobody else. It does not matter whether this widow, of wrestler uncle's courtyard, died a long twenty years ago.

There is one more speciality of Dakahi pond. Inside this pond tortoise and fishes grow in number, on its own. Beside the pond many types of roots and lichens are found. The sweet roots are eaten by the cattle grazer boys.

Buchkan Saday is from Mushhar caste.

Near the Dakahi pond there are many small water-bodies, the swampy ground may be seen around it. From there the Mushhar caste people dig the roots and eat them. In the year 1967 when most of the ponds dried even then this big Dakahi pond did not completely dried up, although the area of the pond diminished dramatically. The Prime Minister had come here during those days, and he was shown how the

Mushahar caste was surviving during those days, eating these roots.

These are the persons having say, living in the village Garh Narikel.

(contd.)

VIDEHA MAITHILI SAMSKRIT TUTOR



बिपिन कुमार झा

लैटेक्स : परिचयः उपादेयता च

(गताङ्कतः अग्रे)

बिपिन कुमार झा

वरिष्ठ अनुसंधाता

भारतीयप्रौद्योगिकीसंस्थानम्

मुम्बई

लेटेक्सगणितीयटंकनशिक्षणपरिशीलनम्-2

फ्रैक कमाण्ड अग्रे वयं यत् करवाणि तदस्ति उपयोगं फ्रैक्सन इति निर्माणे भविष्यति। एतस्य संचयं कुर्मः। फ्रेक ए बी अनेन उत्पाद्यते । बी द्वारा ए । अत्र ए तथा बी लघु रूपे प्रतीयेते, उदाहरणरूपे बी द्वारा ए अस्तित्वं प्राप्नोति ए तथा बी इति अनयोः आकारं पश्यतु कमाण्ड् फेक स्पेश मध्ये समाप्तिं प्राप्नोति। अत्र तर्कद्वयं मिलति। ए इत्यस्य प्रथमतर्क न्युमेरेटर रूपे स्वीक्रियते द्वितीयतर्क बी डिनोमिनेटर रूपे स्वी क्रियते। एतत् अत्र फेक ए बी इत्यनयोरनुसरणं करोति। अवकाशाभावेऽपि अत्र तदेव उत्तरं

मिलति। अत्र समानं उत्तरं मिलति। ए तथा बी इत्यनयोर्मध्ये अवकाशस्य अपेक्षा न अस्ति।

यदा सी डी द्वारा ए बी निर्मातुं ईहेतदा किं भवति। लेटेक्स इति अस्मिन् ब्रेक्स मध्ये तर्काणि संयुक्तानि भवन्ति उदाहरणतया वयं सी डी द्वा डालर् फ्रेक ए बी दद्मः। बी द्वा ए सी डी अत्र अस्ति ब्रेक्स इति अस्मिन् स्थित सूची ए तर्क रूपे स्वी क्रियते। परिणामतः कोपि ब्रेकस स्थित जटिल अभिव्यक्तौ गन्तुं शक्नोति। उदाहरणतया, फ्रैक ए बी तदनु अत्र 1+ फ्रैक सी डी इ एफ़ द्वारा। एतस्य पिधानं करोतु। एतत अत्र पश्यतु। वयं वयं इतोपि जटिलतरा अभिव्यक्तिनिर्माणं कृतवन्तः स्मः। ई एफ़ द्वारा १+ सी डी द्वारा ए बी विभाजितम। एतत् कमाण्द कथयति यत् ए बी इत्यस्य प्रथम तर्क न्युमेरेटर मध्ये आगच्छेत इति। द्वीतीय तर्क रूपे अस्ति यत् डिनोमेनेटर प्रति गच्छति। तदस्ति इइ एफ़ द्वारा १ + सी डी। एतत परिदृश्यं उपयोगं कुर्वन् एतत् सम्भवति यत् जटिल तरा अभिव्यक्ति अपि टाइप सेट कर्तुं शक्यते।

अधुना वयं सबस्क्रिपट तथा सुपरस्क्रिप्ट पश्यामः। एतस्य लोपं कुर्मः एक़ अण्डरस्कोर एक्स इत्यस्य ए निर्माणं करोति। ए इत्यस्याकारं स्वयमेव समायोजितं भवति। ए अण्डरस्कोर ए बी कृते किं भवति अस्तु एतत् कुमः ए, अ बी, ए डालर साइन मध्ये स्वीकरोमि। यदि एक्स सब् ए बी इत्यनयोः अपेक्षां कुर्मः निराशां

प्राप्नुमः वयं केवलं एक्स् सब ए बी प्राप्नुमः एतस्य कारणं अस्ति- सबस्क्रिप्ट कमाण्द एकस्य तर्कस्य अपेख्शां करोति। ए तर्क रूपे अत्र स्वीक्रुतम अस्त् अस्तु यदि वयं प्रोडक्ट ए बी इत्यनयोः वांछा कुर्मः यत् सब्स्किप्ट रूपे भवेत् तर्हि ब्रैक्स मध्ये एतस्य अन्वितिं भवेत्। उदाहरणतया वयं एतत् समस्तं ब्रैक्स मध्ये स्थापयामः। अचिरं एतत् अभवत्।

कैरट द्वारा सबस्क्रिप्ट निर्मितम् अथवा एरो संकेत द्वारा निमितम्। उदाहरणरूपे यदि भवान् x power 3 कृते x निर्मातुम् इच्छति तर्हि लेखनं स्यात् x up arrow 3 सामान्य सम्पादने एतत् एवं प्रकारेण प्रतीयते x up arrow 3 वयं डालर इत्यनेन सह अन्वितिं कुर्मः । एतस्य संचयं करोतु X to the power 3 प्रास्यर्थम्। एकबारं पुनः ब्रेक्स उपयोगं कुर्मः। वयं जटिलतरां अभिव्यक्तिं या सब्स्क्रिप्ट्स एवं सुपरस्क्रिप्ट्स सन्दर्भिता अस्ति उत्पादयितुं क्षमाः भवामः। उदाहरण रूपे x द्वारा पावर 3 अनेन पावर ए अनेन पवर 2.5 उत्पादनं भविष्यति। x द्वारा पवर 3 बारत्रयम् कर्तुं शक्नुमः। शोभनम्, अधुना यदि वयं बारत्रयं न कर्तुं उद्यता स्मः तर्हि लोपं कुर्मः। सम्यक्,अधुना वयं पश्यामहे यत् x द्वारा पावर ए द्वारा पावर 2.5 तथा वयं अत्र सब्स्क्रिप्ट्स अपि योजनं कर्तुम् शक्नुमः। सब्स्क्रिप्ट कौमा बीटा सी ई अस्ति। अनेन सब्स्क्रिप्ट इत्यस्य पिधानं क्रियते। अग्रिमस्तर रूपे अस्ति डालर संकेत। एतत् अत्र अस्ति। x द्वारा पावर ए द्वारा पावर 2.5 स्ब्स्क्रप्ट बीटा कौमा को

सब्स्क्रिप्ट दी ई अस्ति। अधुना वयं कतिपय सामान्य संकेतावलोकनं कुर्मः। एतस्य संचयं कुर्मः। क्लीन स्लेट इत्यनेन सह प्रारंभं करोतु। ए तुल्यं बी अस्ति कौमा ए तुल्यं बी नास्ति कौमा एतत् पश्यतु। बी तुल्यं नास्ति। अग्रिमां पंक्तिं प्रति गच्छतु। ए बी तः महत्तरं अस्ति कौमा ए बी महत्तरं अथवा समानं अस्ति कौमा ए महत्तरं पुनश्च महत्तरं अस्ति बी तः पश्यतु किं भवति । ए बी तः महत्तरं अस्ति महत्तरं तथा समानं अस्ति बी तः कौमा अधिकं महत्तरं अस्ति बी तः। समानरूपे न्यूनं । न्यूनं बी तः न्यूनं अथवा समानं बी तः। ए न्यूनं पुनरपि न्यूनं बी तः एअतत् पश्यतु। न्यूनं अथवा समानं कौमा अधिक न्यूनं बी तः।

ए राइट एरो बी कौमा ए लेफ्ट एरो बी कौमा राइट एरो बी । राइट एरो कौमा लेफ़्ट एरो कौमा लेफ़्ट राइट एरो। किंचित अधिकं योजयामः। ए टाइम्स बी । पश्यतु किं भवति। अत्र ए टाइम्स बी अस्ति। ए + सी-डाट + बी। ए कौमा एल-डाट्स कौमा बी। सम्यक्, सी-डाट्स एतस्य अर्थ अस्ति डाट्स केन्द्रे आपतति कौमा एल-डाट्स परिणमति डाट्स इत्यस्य अधः आगमने। समानरूपे वी-डाट्स तथा डी-डाट्स एतस्य निर्माणं सम्भवति। कोपि i-n-f-i-n-i-t-y कौमा infinity उपयोगं कृत्वा अनन्त निर्माणं कर्तुं शक्नोति। सकेतं पश्यतु।

कतिपय sum कमाण्ड इत्यस्य निर्माणं सम्भवति।पश्यतु sum

command. । समेशन सिम्बाल । वयं सब्स्क्रिप्ट तथा सुपरस्किप्ट योजितं क्षमाः स्मः। अहं I इक्वल्स 1 कौमा अप एरो 100 कौमा यत् सुपरस्क्रिप्ट अस्ति। एतत् अत्र अस्ति। एतत् पश्यतु। एतत् पाई संकेतम्। वयं अन्तर्निहितं निर्मातुं शक्नुमः सहैव सबस्क्रिप्ट कौमा बीटा टू द पावर टू । इण्टिगरल कौमा अनइण्टिगरल सबस्क्रिप्ट ए कौमा सुपरस्क्रिप्ट बीटा स्क्वेयर। सम्यक्, अधुना मट्रिक्स क्रूते चलामः। तावत् प्रथमं सर्वं अपसारयामः। संचयं स्यात् तथा क्लीन स्लेट इत्यनेन प्रारंभः स्यात्। एतस्य कृते अपेक्षते कमाण्ड "use package a-m-s-math"| एतत् पैकेज अतिरिक्तं अनुदेशं ददाति तत्रस्थ कतिपयानाम् उपयोगं कुर्मः अधुना। एम्पर्सेण्ड यत् अन्तिमं संकेतं विद्यते कालम पृथक्करणे एतस्य प्रयोगं भवति। वयं कथं मट्रिक्स इत्यस्य निर्माणं कुर्मः। वयं प्रारंभं कुर्मं मट्रिक्स ए, बी तथा अन्तिम मट्रिक्स। डालर संकेतं ददातु। एबी इति पश्यतु।

मन्ये वयम् अत्र द्वितीयां पंक्तिं योजयितुम् इच्छामि। एतत रिवर्स श्लैस तथा रिवर्स श्लैस द्वय द्वारा निर्मातुं शक्यते। रिवर्स श्लैस द्वारा पंक्तिप्थक्करणं भवति। अस्तु वयं कथयामः सी डी ई। द्वितीयायां पंक्तौ लेखनत्रयं भवति। सम्यक्, भवता प्राप्तम् एतानि सी डी ई। अत्र पुनर्लेखनं कर्तुं शक्यते। प्रथमा पंक्तिः, द्वितीया पंक्तिः, तृतीया पंक्तिः। प्रभावः समानः। मन्ये पी मट्रिक्स अत्र स्वीकरोमि। यत् प्राप्नुमः तदस्ति एतत्। बी मट्रिक्स स्वीकरोमि।

अधिकं जटिलतरं मट्रिक्स निर्मातुं शक्यते। वयं अग्रे चलामः। पूर्वमेव मया अनुदेशं परिभाषितम्। कापी करोतु पेस्ट करोतु। एतत् पुरातन संचये दृष्टिगतं न भविष्यति यतो हि एतत् अन्तिम लेखात् अधः अस्ति। यत् किमपि अधः भवति उपेक्षितं भवति। अस्तु अहं एकं जटिलतरं निर्मितवान्। चतस्त्रः पंक्तयं सन्ति। प्रथमा कथयति ए अप टू जेड। द्वितीया कथयति ए स्क्वेयर बी स्क्वेयर अप टू जेड स्क्वेयर। तृतीया कथयति केवलं वी डाट्स। एषा अन्तिमा पंक्तिः।

सामान्यरूपे लेटेक्स कमाण्ड केस सेंसेटिव भवति। उदाहरणरूपे यदि अहं एतस्य परिवर्तनं कैपिटल बी रूपे करोमि तु पश्यतु किं भवति अत्र। एतत् भिन्न परिणामं जनयति। सामान्यतया लेटेक्स मध्ये लोअर केसरूपे एव कमाण्ड भवति केवलं यत्र अपर केस इक्वूवाइलेण्ट न भवति। यः विण्डोजमध्ये लेटेक्स इत्यस्य उपयोगं करोति स अवश्य अवधानं दद्यात् इति।

अधुना शिक्षणं समाप्नोति। लेटेक्स इत्यस्य प्रारंभिक शिक्षार्थी एतत् अवधानं ददातु यत् लेटेक्स इत्यस्य प्रत्येक परिवर्तनस्य अनन्तरं संचयं भवेत् तथा अवधानं स्यात् यत् परिवतनं स्वीकारयोग्यम् अस्ति।

धन्यवादाः श्रवणार्थम् अवधानार्थं च ।

एषः अस्ति[**बिपिन कुमार झा**][1], Cell for Indian Science and Technology in Sanskrit, IIT मुम्बईतः

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

Input: (कोष्ठकमे देवनागरी, मिथिलाक्षर किंवा फोनेटिक-रोमनमे टाइप करू। Input in Devanagari, Mithilakshara or Phonetic-Roman.) Output: (परिणाम देवनागरी, मिथिलाक्षर आ फोनेटिक-रोमन/ रोमनमे। Result in Devanagari, Mithilakshara and Phonetic-Roman/ Roman.)

English to Maithili

Maithili to English

इंग्लिश-मैथिली-कोष / मैथिली-इंग्लिश-कोष प्रोजेक्टकेँ आगू बढ़ाऊ, अपन सुझाव आ योगदान ई-मेल द्वारा ggajendra@videha.com पर पठाऊ।

विदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष (इंटरनेटपर पहिल बेर सर्च-डिक्शनरी) एम.एस. एस.क्यू.एल. सर्वर आधारित -Based on ms-sql server Maithili-English and English-Maithili Dictionary.

१.भारत आ नेपालक मैथिली भाषा-वैज्ञानिक लोकनि द्वारा बनाओल मानक शैली आ २.मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

१.नेपाल आ भारतक मैथिली भाषा-वैज्ञानिक लोकनि द्वारा बनाओल मानक शैली

*१.१. **नेपालक मैथिली भाषा वैज्ञानिक** लोकनि द्वारा बनाओल मानक उच्चारण आ लेखन शैली*

(भाषाशास्त्री डा. रामावतार यादवक धारणाकेँ पूर्ण रूपसँ सङ्ग लऽ निर्धारित)

मैथिलीमे उच्चारण तथा लेखन

१.*पञ्चमाक्षर आ अनुस्वार*: पञ्चमाक्षरान्तर्गत ङ, ञ, ण, न एवं म अबैत अछि। संस्कृत भाषाक अनुसार शब्दक अन्तमे जाहि वर्गक अक्षर रहैत अछि ओही वर्गक पञ्चमाक्षर अबैत अछि। जेना-

अङ्क (क वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ङ् आएल अछि।)

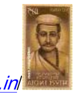
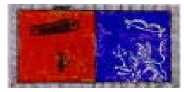
पञ्च (च वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ञ् आएल अछि।)

खण्ड (ट वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ण् आएल अछि।)

सन्धि (त वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे न् आएल अछि।)

खम्भ (प वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे म् आएल अछि।)

उपर्युक्त बात मैथिलीमे कम देखल जाइत अछि। पञ्चमाक्षरक बदलामे अधिकांश जगहपर अनुस्वारक प्रयोग देखल जाइछ। जेना- अंक, पंच, खंड, संधि, खंभ आदि। व्याकरणविद पण्डित गोविन्द झाक कहब छनि जे कवर्ग, चवर्ग आ टवर्गसँ पूर्व अनुस्वार लिखल जाए तथा तवर्ग आ पवर्गसँ पूर्व पञ्चमाक्षरे लिखल जाए। जेना- अंक, चंचल, अंडा, अन्त तथा कम्पन। मुदा हिन्दीक निकट रहल आधुनिक लेखक एहि बातकेँ नहि मानैत छथि। ओ लोकनि अन्त आ कम्पनक जगहपर सेहो अंत आ कंपन लिखैत देखल जाइत छथि।

नवीन पद्धति किछु सुविधाजनक अवश्य छैक। किएक तँ एहिमे समय आ स्थानक बचत होइत छैक। मुदा कतोक बेर हस्तलेखन वा मुद्रणमे अनुस्वारक छोट सन बिन्दु स्पष्ट नहि भेलासँ अर्थक अनर्थ होइत सेहो देखल जाइत अछि। अनुस्वारक प्रयोगमे उच्चारण-दोषक सम्भावना सेहो ततबए देखल जाइत अछि। एतदर्थ कसँ लऽ कऽ पवर्ग धरि पञ्चमाक्षरेक प्रयोग करब उचित अछि। यसँ लऽ कऽ ज्ञ धरिक अक्षरक सङ्ग अनुस्वारक प्रयोग करबामे कतहु कोनो विवाद नहि देखल जाइछ।

२.*ढ आ ढ़* : ढ़क उच्चारण ''र् ह''जकाँ होइत अछि। अतः जतऽ ''र् ह''क उच्चारण हो ओतऽ मात्र ढ़ लिखल जाए। आन ठाम खाली ढ लिखल जएबाक चाही। जेना-
ढ = ढाकी, ढेकी, ढीठ, ढेउआ, ढङ्ग, ढेरी, ढाकनि, ढाठ आदि।
ढ़ = पढ़ाइ, बढ़ब, गढ़ब, मढ़ब, बुढ़बा, साँढ़, गाढ़, रीढ़, चाँढ़, सीढ़ी, पीढ़ी आदि।
उपर्युक्त शब्द सभकेँ देखलासँ ई स्पष्ट होइत अछि जे साधारणतया शब्दक शुरूमे ढ आ मध्य तथा अन्तमे ढ़ अबैत अछि। इएह नियम ड आ ड़क सन्दर्भ सेहो लागू होइत अछि।

३.*व आ ब* : मैथिलीमे ''व''क उच्चारण ब कएल जाइत अछि, मुदा ओकरा ब रूपमे नहि लिखल जएबाक चाही। जेना- उच्चारण : बैद्यनाथ, बिद्या, नब, देबता, बिष्णु, बंश, बन्दना आदि। एहि

सभक स्थानपर क्रमशः वैद्यनाथ, विद्या, नव, देवता, विष्णु, वंश, वन्दना लिखबाक चाही। सामान्यतया व उच्चारणक लेल ओ प्रयोग कएल जाइत अछि। जेना- ओकील, ओजह आदि।

४.*य आ ज* : कतहु-कतहु “य”क उच्चारण “ज”जकाँ करैत देखल जाइत अछि, मुदा ओकरा ज नहि लिखबाक चाही। उच्चारणमे यज्ञ, जदि, जमुना, जुग, जाबत, जोगी, जदु, जम आदि कहल जाएबला शब्द सभकेँ क्रमशः यज्ञ, यदि, यमुना, युग, यावत, योगी, यदु, यम लिखबाक चाही।

५.*ए आ य* : मैथिलीक वर्तनीमे ए आ य दुनू लिखल जाइत अछि।
प्राचीन वर्तनी- कएल, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि।
नवीन वर्तनी- कयल, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि।
सामान्यतया शब्दक शुरूमे ए मात्र अबैत अछि। जेना एहि, एना, एकर, एहन आदि। एहि शब्द सभक स्थानपर यहि, यना, यकर, यहन आदिक प्रयोग नहि करबाक चाही। यद्यपि मैथिलीभाषी थारू सहित किछु जातिमे शब्दक आरम्भोमे “ए”केँ य कहि उच्चारण कएल जाइत अछि।
ए आ “य”क प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीने पद्धतिक अनुसरण करब उपयुक्त मानि एहि पुस्तकमे ओकरे प्रयोग कएल गेल अछि। किएक तँ दुनूक लेखनमे कोनो सहजता आ दुरूहताक बात नहि अछि। आ मैथिलीक सर्वसाधारणक उच्चारण-शैली यक अपेक्षा एसँ

बेसी निकट छैक। खास कऽ कएल, हएब आदि कतिपय शब्दकेँ कैल, हैब आदि रूपमे कतहु-कतहु लिखल जाएब सेहो "ए"क प्रयोगकेँ बेसी समीचीन प्रमाणित करैत अछि।

६.*हि, हु तथा एकार, ओकार* : मैथिलीक प्राचीन लेखन-परम्परामे कोनो बातपर बल दैत काल शब्दक पाछाँ हि, हु लगाओल जाइत छैक। जेना- हुनकहि, अपनहु, ओकरहु, तत्कालहि, चोट्टहि, आन्हु आदि। मुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपर एकार एवं हुक स्थानपर ओकारक प्रयोग करैत देखल जाइत अछि। जेना- हुनके, अपनो, तत्काले, चोट्टे, आनो आदि।

७.*ष तथा ख* : मैथिली भाषामे अधिकांशतः षक उच्चारण ख होइत अछि। जेना- षड्यन्त्र (खड़यन्त्र), षोडशी (खोड़शी), षट्कोण (खटकोण), वृषेश (वृखेश), सन्तोष (सन्तोख) आदि।

८.*ध्वनि-लोप* : निम्नलिखित अवस्थामे शब्दसँ ध्वनि-लोप भऽ जाइत अछि:

(क) क्रियान्वयी प्रत्यय अयमे य वा ए लुप्त भऽ जाइत अछि। ओहिमे सँ पहिने अक उच्चारण दीर्घ भऽ जाइत अछि। ओकर आगाँ लोप-सूचक चिह्न वा विकारी (' / ऽ) लगाओल जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : पढ़ए (पढ़य) गेलाह, कए (कय) लेल, उठए (उठय) पड़तौक।

अपूर्ण रूप : पढ़' गेलाह, क' लेल, उठ' पड़तौक।
पढ़ऽ गेलाह, कऽ लेल, उठऽ पड़तौक।
(ख) पूर्वकालिक कृत आय (आए) प्रत्ययमे य (ए) लुप्त भऽ जाइछ, मुदा लोप-सूचक विकारी नहि लगाओल जाइछ। जेना-
पूर्ण रूप : खाए (य) गेल, पठाय (ए) देब, नहाए (य) अएलाह।
अपूर्ण रूप : खा गेल, पठा देब, नहा अएलाह।
(ग) स्त्री प्रत्यय इक उच्चारण क्रियापद, संज्ञा, ओ विशेषण तीनूमे लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-
पूर्ण रूप : दोसरि मालिनि चलि गेलि।
अपूर्ण रूप : दोसर मालिन चलि गेल।
(घ) वर्तमान कृदन्तक अन्तिम त लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-
पूर्ण रूप : पढ़ैत अछि, बजैत अछि, गबैत अछि।
अपूर्ण रूप : पढ़ै अछि, बजै अछि, गबै अछि।
(ङ) क्रियापदक अवसान इक, उक, ऐक तथा हीकमे लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-
पूर्ण रूप: छियौक, छियैक, छहीक, छौक, छैक, अबितैक, होइक।
अपूर्ण रूप : छियौ, छियै, छही, छौ, छै, अबितै, होइ।
(च) क्रियापदीय प्रत्यय न्ह, हु तथा हकारक लोप भऽ जाइछ। जेना-
पूर्ण रूप : छन्हि, कहलन्हि, कहलहुँ, गेलह, नहि।
अपूर्ण रूप : छनि, कहलनि, कहलौँ, गेलऽ, नइ, नञि, नै।

९.*ध्वनि स्थानान्तरण* : कोनो-कोनो स्वर-ध्वनि अपना जगहसँ हटि कऽ दोसर ठाम चलि जाइत अछि। खास कऽ ह्रस्व इ आ उक सम्बन्धमे ई बात लागू होइत अछि। मैथिलीकरण भऽ गेल शब्दक मध्य वा अन्तमे जँ ह्रस्व इ वा उ आबए तँ ओकर ध्वनि स्थानान्तरित भऽ एक अक्षर आगाँ आबि जाइत अछि। जेना- शनि (शइन), पानि (पाइन), दालि (दाइल), माटि (माइट), काछु (काउछ), मासु (माउस) आदि। मुदा तत्सम शब्द सभमे ई निअम लागू नहि होइत अछि। जेना- रश्मिकेँ रइश्म आ सुधांशुकेँ सुधाउंस नहि कहल जा सकैत अछि।

१०.*हलन्त()क प्रयोग* : मैथिली भाषामे सामान्यतया हलन्त ()क आवश्यकता नहि होइत अछि। कारण जे शब्दक अन्तमे अ उच्चारण नहि होइत अछि। मुदा संस्कृत भाषासँ जहिनाक तहिना मैथिलीमे आएल (तत्सम) शब्द सभमे हलन्त प्रयोग कएल जाइत अछि। एहि पोथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शब्दकेँ मैथिली भाषा सम्बन्धी निअम अनुसार हलन्तविहीन राखल गेल अछि। मुदा व्याकरण सम्बन्धी प्रयोजनक लेल अत्यावश्यक स्थानपर कतहु-कतहु हलन्त देल गेल अछि। प्रस्तुत पोथीमे मथिली लेखनक प्राचीन आ नवीन दुनू शैलीक सरल आ समीचीन पक्ष सभकेँ समेटि कऽ वर्ण-विन्यास कएल गेल अछि। स्थान आ समयमे बचतक सङ्गहि हस्त-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो सरल होबऽबला हिसाबसँ वर्ण-विन्यास मिलाओल गेल अछि। वर्तमान समयमे मैथिली मातृभाषी

पर्यन्तकेँ आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक ज्ञान लेबऽ पड़ि रहल परिप्रेक्ष्यमे लेखनमे सहजता तथा एकरूपतापर ध्यान देल गेल अछि। तखन मैथिली भाषाक मूल विशेषता सभ कुण्ठित नहि होइक, ताहू दिस लेखक-मण्डल सचेत अछि। प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. रामावतार यादवक कहब छनि जे सरलताक अनुसन्धानमे एहन अवस्था किन्नहु ने आबऽ देबाक चाही जे भाषाक विशेषता छाँहमे पडि जाए।

-(भाषाशास्त्री डा. रामावतार यादवक धारणाकेँ पूर्ण रूपसँ सङ्ग लऽ निर्धारित)

१.२. मैथिली अकादमी, पटना द्वारा निर्धारित मैथिली लेखन-शैली

१. जे शब्द मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आइ धरि जाहि वर्त्तनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि वर्त्तनीमे लिखल जाय- उदाहरणार्थ-

ग्राह्य

एखन

ठाम

जकर, तकर

तनिकर

अछि

अग्राह्य

अखन, अखनि, एखेन, अखनी

ठिमा, ठिना, ठमा

जेकर, तेकर

तिनकर। (वैकल्पिक रूपेँ ग्राह्य)

ऐछ, अहि, ए।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक रूप वैकल्पिकतया अपनाओल जाय: भऽ गेल, भय गेल वा भए गेल। जा रहल अछि, जाय रहल अछि, जाए रहल अछि। कर' गेलाह, वा करय गेलाह वा करए गेलाह।

३. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' लिखल जाय सकैत अछि यथा कहलनि वा कहलन्हि।

४. 'ऐ' तथा 'औ' ततय लिखल जाय जत' स्पष्टतः 'अइ' तथा 'अउ' सदृश उच्चारण इष्ट हो। यथा- देखैत, छलैक, बौआ, छौक इत्यादि।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द एहि रूपे प्रयुक्त होयत: जैह, सैह, इएह, ओऐह, लैह तथा दैह।

६. ह्रस्व इकारांत शब्दमे 'इ' के लुप्त करब सामान्यतः अग्राह्य थिक। यथा- ग्राह्य देखि आबह, मालिनि गेलि (मनुष्य मात्रमे)।

७. स्वतंत्र ह्रस्व 'ए' वा 'य' प्राचीन मैथिलीक उद्धरण आदिमे तँ यथावत राखल जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे वैकल्पिक रूपेँ 'ए' वा 'य' लिखल जाय। यथा:- कयल वा कएल, अयलाह वा अएलाह, जाय वा जाए इत्यादि।

८. उच्चारणमे दू स्वरक बीच जे 'य' ध्वनि स्वतः आबि जाइत अछि तकरा लेखमे स्थान वैकल्पिक रूपेँ देल जाय। यथा- धीआ, अढ़ैआ, विआह, वा धीया, अढ़ैया, बियाह।

९. सानुनासिक स्वतंत्र स्वरक स्थान यथासंभव 'ञ' लिखल जाय वा सानुनासिक स्वर। यथा:- मैञा, कनिञा, किरतनिञा वा मैआँ, कनिआँ, किरतनिआँ।

१०. कारकक विभक्तिक निम्नलिखित रूप ग्राह्य:- हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे। 'मे' मे अनुस्वार सर्वथा त्याज्य थिक। 'क' क वैकल्पिक रूप 'केर' राखल जा सकैत अछि।

११. पूर्वकालिक क्रियापदक बाद 'कय' वा 'कए' अव्यय वैकल्पिक

रूपेँ लगाओल जा सकैत अछि। यथा:- देखि कय वा देखि कए।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माङ, भाङ इत्यादि लिखल जाय।

१३. अर्द्ध 'न' ओ अर्द्ध 'म' क बदला अनुसार नहि लिखल जाय, किंतु छापाक सुविधार्थ अर्द्ध 'ङ' , 'ञ', तथा 'ण' क बदला अनुस्वारो लिखल जा सकैत अछि। यथा:- अङ्क, वा अंक, अञ्चल वा अंचल, कण्ठ वा कंठ।

१४. हलंत चिह्न निअमतः लगाओल जाय, किंतु विभक्तिक संग अकारांत प्रयोग कएल जाय। यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक।

१५. सभ एकल कारक चिह्न शब्दमे सटा क' लिखल जाय, हटा क' नहि, संयुक्त विभक्तिक हेतु फराक लिखल जाय, यथा घर परक।

१६. अनुनासिककेँ चन्द्रबिन्दु द्वारा व्यक्त कयल जाय। परंतु मुद्रणक सुविधार्थ हि समान जटिल मात्रापर अनुस्वारक प्रयोग चन्द्रबिन्दुक बदला कयल जा सकैत अछि। यथा- हिँ केर बदला हिं।

१७. पूर्ण विराम पासीसँ (।) सूचित कयल जाय।

१८. समस्त पद सटा क' लिखल जाय, वा हाइफेनसँ जोड़ि क' , हटा क' नहि।

१९. लिअ तथा दिअ शब्दमे बिकारी (ऽ) नहि लगाओल जाय।

२०. अंक देवनागरी रूपमे राखल जाय।

२१.किछु ध्वनिक लेल नवीन चिन्ह बनबाओल जाय। जा' ई नहि बनल अछि ताबत एहि दुनू ध्वनिक बदला पूर्ववत् अय/ आय/ अए/ आए/ आओ/ अओ लिखल जाय। आकि ऎ वा ऒ सँ व्यक्त कएल जाय।

ह./- गोविन्द झा ११/८/७६ श्रीकान्त ठाकुर ११/८/७६ सुरेन्द्र झा "सुमन" ११/०८/७६

२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

२.१. उच्चारण निर्देश: (बोल्ड कएल रूप ग्राह्य):-

*दन्त न क उच्चारणमे दाँतमे जीह सटत- जेना बाजू नाम , मुदा ण क उच्चारणमे जीह मूर्धामे सटत (नै सटैए तँ उच्चारण दोष अछि)- जेना बाजू गणेश। तालव्य **श**मे जीह तालुसँ , **ष**मे मूर्धासँ आ दन्त **स**मे दाँतसँ सटत। निशाँ, सभ आ शोषण बाजि कऽ देखू।*

*मैथिलीमे **ष** कें वैदिक संस्कृत जकाँ **ख** सेहो उच्चरित कएल जाइत अछि, जेना वर्षा, दोष। य अनेको स्थानपर ज जकाँ उच्चरित होइत अछि आ ण ड़ जकाँ (यथा संयोग आ गणेश **संजोग** आ*

***गड़ेस** उच्चरित होइत अछि)। मैथिलीमे व क उच्चारण ब, श क उच्चारण स आ य क उच्चारण ज सेहो होइत अछि।*

ओहिना ह्रस्व इ बेशीकाल मैथिलीमे पहिने बाजल जाइत अछि कारण देवनागरीमे आ मिथिलाक्षरमे ह्रस्व इ अक्षरक पहिने लिखलो जाइत आ बाजलो जएबाक चाही। कारण जे हिन्दीमे एकर दोषपूर्ण उच्चारण होइत अछि (लिखल तँ पहिने जाइत अछि मुदा बाजल बादमे जाइत अछि), से शिक्षा पद्धतिक दोषक कारण हम सभ ओकर उच्चारण दोषपूर्ण ढंगसँ कऽ रहल छी।

*अछि- अ इ छ **ऐछ (उच्चारण)***

*छथि- छ इ थ छैथ **(उच्चारण)***

*पहुँचि- प हुँ इ च **(उच्चारण)***

आब अ आ इ ई ए ऐ ओ औ अं अः ऋ ऐ सभ लेल मात्रा सेहो अछि, मुदा ऐमे ई ऐ ओ औ अं अः ऋ कें संयुक्ताक्षर रूपमे गलत रूपमे प्रयुक्त आ उच्चरित कएल जाइत अछि। जेना ऋ कें री रूपमे उच्चरित करब। आ देखियौ- ऐ लेल देखिऔ क प्रयोग अनुचित। मुदा देखिऐ लेल देखियै अनुचित। क् सँ ह् धरि अ सम्मिलित भेलासँ क सँ ह बनैत अछि, मुदा उच्चारण काल हलन्त युक्त शब्दक अन्तक उच्चारणक प्रवृत्ति बढ़ल अछि, मुदा हम

जखन मनोजमे ज् अन्तमे बजैत छी, तखनो पुरनका लोककँ बजैत सुनबन्हि- मनोजऽ, वास्तवमे ओ अ युक्त ज् = ज बजै छथि। फेर ज्ञ अछि ज् आ ञ क संयुक्त मुदा गलत उच्चारण होइत अछि- ग्य। ओहिना क्ष अछि क् आ ष क संयुक्त मुदा उच्चारण होइत अछि छ। फेर श् आ र क संयुक्त अछि श्र (जेना श्रमिक) आ स् आ र क संयुक्त अछि स्र (जेना मिस्र)। त्र भेल त+र ।

*उच्चारणक ऑडियो फाइल विदेह आर्काइव http://www.videha.co.in/ पर उपलब्ध अछि। फेर **कँ / सँ / पर** पूर्व अक्षरसँ सटा कऽ लिखू मुदा **तँ / कऽ** हटा कऽ। **ऐमे सँ** मे पहिल सटा कऽ लिखू आ बादबला हटा कऽ। अंकक बाद टा लिखू सटा कऽ मुदा अन्य ठाम टा लिखू हटा कऽ– जेना **छहटा** मुदा **सभ टा**। फेर ६अ म सातम लिखू- छठम सातम नै। घरबलामे **बला** मुदा घरवालीमे **वाली** प्रयुक्त करू।*

रहए-

***रहै** मुदा सकैए (उच्चारण सकै-ए)।*

*मुदा कखनो काल रहए आ रहै मे अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कम्मो जगहमे पार्किंग करबाक अभ्यास **रहै** ओकरा। पुछलापर पता लागल जे ढुनढुन नाम्ना ई ड्राइवर कनाट प्लेसक पार्किंगमे काज करैत **रहए**।*

छलै, छलए मे सेहो ऐ तरहक भेल। छलए क उच्चारण छल-ए सेहो।

*संयोगने- (उच्चारण **संजोगने**)*

कैँ/ कऽ

*केर- **क** (*

***केर** क प्रयोग गद्यमे नै करू , पद्यमे कऽ सकै छी।)*

क (जेना रामक)

***रामक** आ संगे (उच्चारण **राम के** / **राम कऽ** सेहो)*

सँ**- सऽ **(उच्चारण)

चन्द्रबिन्दु आ अनुस्वार- अनुस्वारमे कंठ धरिक प्रयोग होइत अछि मुदा चन्द्रबिन्दुमे नै। चन्द्रबिन्दुमे कनेक एकारक सेहो उच्चारण होइत अछि- जेना रामसँ- (उच्चारण राम सऽ) रामकैँ- (उच्चारण राम कऽ/ राम के सेहो)।

कैँ जेना रामकैँ भेल हिन्दीक को (राम को)- राम को= रामकैँ

क जेना रामक भेल हिन्दीक का (राम का) राम का= रामक

कऽ जेना जा कऽ भेल हिन्दीक कर (जा कर) जा कर= जा कऽ

सँ भेल हिन्दीक से (राम से) राम से= रामसँ

सऽ , तऽ , त , केर (गद्यमे) ऐ चारू शब्द सबहक प्रयोग अवांछित।

के दोसर अर्थेँ प्रयुक्त भऽ सकैए- जेना, के कहलक? विभक्ति "क"क बदला एकर प्रयोग अवांछित।

नञि, नहि, नै, नइ, नँइ, नइँ, नइं ऐ सभक उच्चारण आ लेखन - नै

त्त्व क बदलामे त्व जेना महत्वपूर्ण (महत्त्वपूर्ण नै) जतए अर्थ बदलि जाए ओतहि मात्र तीन अक्षरक संयुक्ताक्षरक प्रयोग उचित। सम्पति- उच्चारण स म्प इ त (सम्पत्ति नै- कारण सही उच्चारण आसानीसँ सम्भव नै)। मुदा सर्वोत्तम (सर्वोतम नै)।

राष्ट्रिय (राष्ट्रीय नै)

सकैए/ सकै (अर्थ परिवर्तन)

पोछैले**/ पोछै लेल/ **पोछए लेल

पोछैए**/ **पोछए**/ (अर्थ परिवर्तन) **पोछए**/ **पोछै

ओ लोकनि (हटा कऽ, ओ मे बिकारी नै)

***ओइ**/ ओहि*

***ओहिले**/*

ओहि लेल**/ **ओही लऽ

जएबेँ**/ **बैसबेँ

पँचभइयाँ

***देखियौक**/ (देखिऔक नै- तहिना अ मे ह्रस्व आ दीर्घक मात्राक प्रयोग अनुचित)*

***जकाँ** / जेकाँ*

*तँइ/ **तैँ**/*

*होएत / **हएत***

नञि/ नहि/ नँइ/ नइँ/ नै

साँसे/ साँसे

बड़ /

बड़ी (झोराओल)

गाए (गाइ नहि), मुदा गाइक दूध (गाएक दूध नै।)

रहलेँ/ पहिरतैँ

हमहीं/ अहीं

सब - सभ

सबहक - सभहक

धरि - तक

गप- बात

बूझब - समझब

बुझलौं/ समझलौं/ बुझलहुँ - समझलहुँ

हमरा आर - हम सभ

आकि- आ कि

सकैछ/ करैछ (गद्यमे प्रयोगक आवश्यकता नै)

होइन/ होनि

जाइन (जानि नै, जेना देल जाइन) मुदा जानि-बूझि (अर्थ परिवर्तन)

पइठ/ जाइठ

आउ/ जाउ/ आऊ/ जाऊ

*मे, कें, सँ, पर (शब्दसँ सटा कऽ) तँ कऽ धऽ दऽ (शब्दसँ हटा कऽ) मुदा दूटा वा बेसी विभक्ति संग रहलापर पहिल विभक्ति टाकेँ सटाऊ। जेना **ऐमे सँ** ।*

***एकटा** , **दूटा** (मुदा **कए टा**)*

*बिकारीक प्रयोग शब्दक अन्तमे, बीचमे अनावश्यक रूपेँ नै। आकारान्त आ अन्तमे अ क बाद बिकारीक प्रयोग नै (जेना **दिअ , आ**/ दिय' , आ', आ नै)*

अपोस्ट्रोफीक प्रयोग बिकारीक बदलामे करब अनुचित आ मात्र फॉन्टक तकनीकी न्यूनताक परिचायक)- ओना बिकारीक संस्कृत रूप ऽ अवग्रह कहल जाइत अछि आ वर्तनी आ उच्चारण दुनू ठाम एकर लोप रहैत अछि/ रहि सकैत अछि (उच्चारणमे लोप रहिते अछि)। मुदा अपोस्ट्रोफी सेहो अंग्रेजीमे पसेसिव केसमे होइत अछि आ फ्रेंचमे शब्दमे जतए एकर प्रयोग होइत अछि जेना raison d'etre एतए सेहो एकर उच्चारण रैजौन डेटर होइत अछि, माने अपोस्ट्रॉफी अवकाश नै दैत अछि वरन जोड़ैत अछि, से एकर प्रयोग बिकारीक बदला देनाइ तकनीकी रूपेँ सेहो अनुचित)।

*अइमे, एहिमे/ **ऐमे***

***जइमे**, जाहिमे*

*एखन/ **अखन**/ अइखन*

***कें** (के नहि) **मे** (अनुस्वार रहित)*

भऽ

मे

दऽ

तँ (तऽ, त नै)

सँ (सऽ स नै)

गाछ तर

गाछ लग

साँझ खन

जो (जो go, करै जो do)

तै/तइ जेना- तै दुआरे/ तइमे/ तइले

जै/जइ जेना- जै कारण/ जइसँ/ जइले

ऐ/अइ जेना- ऐ कारण/ ऐसँ/ अइले/ मुदा एकर एकटा खास प्रयोग- लालति कतेक दिनसँ कहैत रहैत अइ

लै/लइ जेना लैसँ/ लइले/ लै दुआरे

लहँ/ लौं

गेलौं/ लेलौं/ लेलँह/ गेलहुँ/ लेलहुँ/ लेलँ

जइ/ जाहि/ जै

जहिठाम/ जाहिठाम/ जइठाम/ जैठाम

एहि/ अहि/

अइ (वाक्यक अंतमे ग्राह्य) / ऐ

अइछ/ अछि/ ऐछ

तइ/ तहि/ तै/ ताहि

ओहि/ **ओइ**

सीखि/ **सीख**

जीवि/ जीवी/ **जीब**

भलेहीं/ **भलहिं**

तैं/ तँइ/ **तँए**

जाएब/ जएब

लइ/ **लै**

छइ/ **छै**

नहि/ **नै**/ नइ

गइ/ **गै**

छनि/ छन्हि ...

समए शब्दक संग जखन कोनो विभक्ति जुटै छै तखन समै जना समैपर इत्यादि। असगरमे **हृदए** आ विभक्ति जुटने हृदे जना हृदेसँ, हृदेमे इत्यादि।

जइ/ जाहि/

जै

जहिठाम/ जाहिठाम/ **जइठाम**/ जैठाम

एहि/ अहि/ अइ/ **ऐ**

अइछ/ **अछि**/ ऐछ

तइ/ तहि/ **तै**/ ताहि

ओहि/ **ओइ**

सीखि/ **सीख**

जीवि/ जीवी/

जीब

भले/ भलेहीं/

भलहिं

तैं*/ तँइ/* ***तँए***

जाएब*/ जएब*

लइ/ ***लै***

छइ/ ***छै***

नहि/ ***नै****/ नइ*

गइ/

गै

छनि/ छन्हि

चुकल अछि/ ***गेल गछि***

*२.२. **मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम***

नीचाँक सूचीमे देल विकल्पमेसँ लैंगुएज एडीटर द्वारा कोन रूप चुनल जेबाक चाही:

बोल्ड कएल रूप ग्राह्य:

*१.होयबला/ होबयबला/ होमयबला/ हेब’बला, हेम’बला/ होयबाक/**होबएबला** /**होएबाक***

२. आ’/आऽ

आ

*३. क’ लेने/**कऽ लेने**/**कए लेने**/कय लेने/ल’/**लऽ**/लय/**लए***

४. भ' गेल/भऽ ***गेल****/भय गेल/भए*

गेल

*५. कर' गेलाह/****करऽ***

गेलह*/****करए गेलाह****/करय गेलाह*

६.

लिअ/दिअ *लिय',दिय',लिअ',दिय'/*

*७. कर' बला/****करऽ बला****/ करय बला* ***करैबला****/क'र' बला /*

करैवाली

८. ***बला*** *वला (पुरूष), वाली (स्त्री) ९*

.

आङ्ल *आंग्ल*

१०. ***प्रायः*** *प्रायह*

११. ***दुःख*** *दुख १*

२. चलि गेल ***चल गेल****/चैल गेल*

१३. ***देलखिन्ह*** *देलकिन्ह,* ***देलखिन***

१४.

देखलन्हि देखलनि*/ देखलैन्ह*

१५. ***छथिन्ह****/ छलन्हि* ***छथिन****/ छलैन/* ***छलनि***

१६. ***चलैत/दैत*** *चलति/दैति*

१७. एखनो

अखनो

१८.

बढ़नि बढ़इन बढ़न्हि

१९. ओ'/ओऽ(सर्वनाम) ओ

२०

. ओ (संयोजक) ओ'/ओऽ

२१. फाँगि/फाङ्गि फाइंग/फाइङ

२२.

जे जे'/जेऽ २३. ना-नुकुर ना-नुकर

२४. केलन्हि/केलनि/कयलन्हि

२५. तखनतँ/ तखन तँ

२६. जा

रहल/जाय रहल/जाए रहल

२७. निकलय/निकलए

लागल/ लगल बहराय/ बहराए लागल/ लगल निकल'/बहरै लागल

२८. ओतय/ जतय जत'/ ओत'/ जतए/ ओतए

२९.

की फूरल जे कि फूरल जे

३०. जे जे'/जेऽ

३१. कूदि / यादि(मोन पारब) कूइद/याइद/कूद/याद/

यादि (मोन)

३२. इहो/ ओहो

३३.

हँसए/ हँसय हँसऽ

३४. **नौ आकि दस**/नौ किंवा दस/ नौ वा दस

३५. **सासु-ससुर** सास-ससुर

३६. **छह/ सात** छ/छः/सात

३७.

की की'/ कीऽ (दीर्घीकारान्तमे ऽ वर्जित)

३८. **जबाब** जवाब

३९. **करएताह/ करेताह** करयताह

४०. दलान दिशि दलान दिश/**दलान दिस**

४१

. **गेलाह** गएलाह/गयलाह

४२. **किछु आर**/ किछु और/ किछ आर

४३. **जाइ छल/ जाइत छल** जाति छल/जैत छल

४४. **पहुँचि/ भेट जाइत छल/ भेट जाइ छलए** पहुँच/ भेटि जाइत छल

४५.

जबान (युवा)/ **जवान**(फौजी)

४६. लय/ **लए** क'/ **कऽ/ लए कए** / **लऽ कऽ/ लऽ कए**

४७. ल'/**लऽ** कय/

कए

४८. एखन / एखने / **अखन / अखने**

४९.

अहींकेँ अहीँकेँ

५०. ***गहींर*** *गहींर*

५१.

धार पार केनाइ *धार पार केनाय/केनाए*

५२. *जेकाँ जेँकाँ/*

जकाँ

५३. ***तहिना*** *तेहिना*

५४. ***एकर*** *अकर*

५५. ***बहिनउ*** *बहनोइ*

५६. ***बहिन*** *बहिनि*

५७. *बहिन-बहिनोइ*

बहिन-बहनउ

५८. *नहि/* ***नै***

५९. ***करबा*** */ करबाय/* ***करबाए***

६०. ***तँ/*** *त ऽ तय/****तए***

६१. *भैयारी मे छोट-****भाए/****भै/, जेठ-****भाय/भाइ,***

६२. *गिनतीमे* ***दू*** *भाइ/भाए/****भाँइ***

६३. *ई पोथी दू* ***भाइक/*** *भाँइ/ भाए/ लेल। यावत* ***जावत***

६४. *माय मै /* ***माए*** *मुदा* ***माइक ममता***

६५. ***देन्हि/ दइन*** *दनि/ दएन्हि/ दयन्हि* ***दन्हि/*** *दैन्हि*

६६. *द'/* ***दऽ/ दए***

६७. ***ओ*** *(संयोजक) ओऽ (सर्वनाम)*

६८. ***तका*** *कए तकाय* ***तकाए***

६९. पैरे (on foot) पएरे कएक/ कैक

७०.

ताहुमे/ ताहूमे

७१.

पुत्रीक

७२.

बजा कय/ कए / कऽ

७३. बननाय/बननाइ

७४. कोला

७५.

दिनुका दिनका

७६.

ततहिसँ

७७. गरबओलन्हि/ गरबौलनि/

गरबेलन्हि/ गरबेलनि

७८. बालु बालू

७९.

चेन्ह चिन्ह(अशुद्ध)

८०. जे जे'

८१

. से/ के से'/के'

८२. एखुनका अखनुका

८३. भुमिहार **भूमिहार**

८४. **सुग्गर**

/ **सुगरक**/ सूगर

८५. **झठहाक** झटहाक ८६.

छूबि

८७. करइयो/ओ **करैयो ने देलक /करियौ**-करइयौ

८८. **पुबारि**

पुबाइ

८९. झगड़ा-झाँटी

झगड़ा-झाँटि

९०. **पएरे-पएरे** पैरे-पैरे

९१. **खेलएबाक**

९२. **खेलेबाक**

९३. **लगा**

९४. होए- हो **होअए**

९५. **बुझल** बूझल

९६.

बूझल (संबोधन अर्थमे)

९७. यैह **यएह** / **इएह**/ सैह/ **सएह**

९८. **तातिल**

९९. अयनाय- अयनाइ/ **अएनाइ**/ **एनाइ**

१००. **निन्न**- निन्द

१०१.

बिनु बिन

१०२. जाए जाइ

१०३.

जाइ (in different sense)-last word of sentence

१०४. छत पर आबि जाइ

१०५.

ने

१०६. खेलाए (play) खेलाइ

१०७. शिकाइत- शिकायत

१०८.

ढप- ढ़प

१०९

. पढ़- पढ

११०. कनिए/ कनिये कनिञे

१११. राकस- राकश

११२. होए/ होय होइ

११३. अउरदा-

औरदा

११४. बुझेलन्हि (different meaning- got understand)

११५. बुझएलन्हि/बुझेलनि/ बुझयलन्हि (understood himself)

११६. चलि- चल/ चलि गेल

११७. **खधाइ**- खधाय

११८.

मोन पाड़लखिन्ह/ मोन पाड़लखिन/ मोन पारलखिन्ह

११९. कैक- **कएक- कइएक**

१२०.

लग ल'ग

१२१. **जरेनाइ**

१२२. **जरौनाइ** जरओनाइ- जरएनाइ/

जरेनाइ

१२३. **होइत**

१२४.

गरबेलन्हि/ **गरबेलनि** गरबौलन्हि/ **गरबौलनि**

१२५.

चिखैत- (to test)चिखइत

१२६. **करइयो** (willing to do) करैयो

१२७. जेकरा- **जकरा**

१२८. **तकरा**- तेकरा

१२९.

बिदेसर स्थानेमे/ **बिदेसरे स्थानमे**

१३०. करबयलहुँ/ करबएलहुँ/ करबेलहुँ **करबेलौं**

१३१.

हारिक (उच्चारण हाइरक)

१३२. ओजन वजन आफसोच/ अफसोस कागत/ कागच/ कागज

१३३. आधे भाग/ आध-भागे

१३४. पिचा / पिचाय/पिचाए

१३५. नञ/ ने

१३६. बच्चा नञ

(ने) पिचा जाय

१३७. तखन ने (नञ) कहैत अछि। कहै/ सुनै/ देखै छल मुदा कहैत-कहैत/ सुनैत-सुनैत/ देखैत-देखैत

१३८.

कतेक गोटे/ कताक गोटे

१३९. कमाइ-धमाइ/ कमाई- धमाई

१४०

. लग ल'ग

१४१. खेलाइ (for playing)

१४२.

छथिन्ह/ छथिन

१४३.

होइत होइ

१४४. क्यो कियो / केओ

१४५.

केश (hair)

१४६.

केस (court-case)

१४७

. बननाइ/ बननाय/ बननाए

१४८. जरेनाइ

१४९. कुरसी कुर्सी

१५०. चरचा चर्चा

१५१. कर्म करम

१५२. डुबाबए/ डुबाबै/ डुमाबै डुमाबय/ डुमाबए

१५३. एखुनका/

अखुनका

१५४. लए/ लिअए (वाक्यक अंतिम शब्द)- लऽ

१५५. कएलक/

केलक

१५६. गरमी गर्मी

१५७

. वरदी वर्दी

१५८. सुना गेलाह सुना'/सुनाऽ

१५९. एनाइ-गेनाइ

१६०.

तेना ने घेरलन्हि/ तेना ने घेरलनि

१६१. नञि / नै

१६२.

डरो *ड'रो*

१६३. ***कतहु/ कतौ*** *कहीं*

*१६४. उमरिगर-**उमेरगर** उमरगर*

१६५. ***भरिगर***

*१६६. धोल/**धोअल** धोएल*

*१६७. गप/**गप्प***

१६८.

के *के'*

१६९. ***दरबज्जा/*** *दरबजा*

१७०. ***ठाम***

१७१.

धरि *तक*

१७२.

घूरि *लौटि*

१७३. ***थोरबेक***

१७४. ***बड्ड***

१७५. ***तोँ/ तूँ***

१७६. तोँहि(पद्यमे ग्राह्य)

१७७. ***तोँही / तोँहि***

१७८.

करबाइए *करबाइये*

१७९. ***एकेटा***

१८०. **करितथि** /करतथि

१८१.

पहुँचि/ पहुँच

१८२. राखलन्हि **रखलन्हि/ रखलनि**

१८३.

लगलन्हि/ लगलनि लागलन्हि

१८४.

सुनि (उच्चारण सुइन)

१८५. **अछि** (उच्चारण अइछ)

१८६. **एलथि गेलथि**

१८७. बितओने/ **बितौने/**

बितेने

१८८. करबओलन्हि/ **करबौलनि/**

करेलखिन्ह/ करेलखिन

१८९. करएलन्हि/ **करेलनि**

१९०.

आकि/ कि

१९१. **पहुँचि/**

पहुँच

१९२. बत्ती जराय/ **जराए जरा** (आगि लगा)

१९३.

से से'

१९४.

हाँ मे हाँ *(हाँमे हाँ विभक्तिमे हटा कए)*

१९५. ***फेल*** *फैल*

१९६. ***फइल(spacious)*** *फैल*

१९७. होयतन्हि/ होएतन्हि/ ***होएतनि/हेतनि/ हेतन्हि***

१९८. ***हाथ मटिआएब/*** *हाथ मटियाबय/हाथ मटियाएब*

१९९. ***फेका*** *फेंका*

२००. ***देखाए देखा***

२०१. ***देखाबए***

२०२. ***सत्तरि*** *सत्तर*

२०३.

साहेब *साहब*

२०४.गेलैन्ह/ ***गेलन्हि/ गेलनि***

२०५. ***हेबाक/ होएबाक***

*२०६.केलो/ कएलहुँ/****केलौं/*** *केलुँ*

२०७. किछु न किछु/

किछु ने किछु

२०८.घुमेलहुँ/ घुमओलहुँ/ ***घुमेलौं***

२०९. ***एलाक/*** *अएलाक*

२१०. ***अः/*** *अह*

२११.लय/

लए *(अर्थ-परिवर्त्तन) २१२.कनीक/* ***कनेक***

२१३.**सबहक/** सभक

२१४.मिलाऽ/ **मिला**

२१५.**कऽ**/ क

२१६.जाऽ/

जा

२१७.आऽ/ **आ**

२१८.भऽ /भ' (' फॉन्टक कमीक द्योतक)

२१९.**निअम**/ नियम

२२०

.**हेक्टेअर**/ हेक्टेयर

२२१.**पहिल अक्षर ढ/ बादक/ बीचक ढ़**

२२२.तहिं/**तहिँ**/ तञि/ **तैं**

२२३.कहिं/ **कहीं**

२२४.**तँइ**/

तैं / तइँ

२२५.नँइ/ नइँ/ नञि/ नहि/**नै**

२२६.है/ **हए** / **एलीहेँ**/

२२७.छञि/ **छै**/ छैक /छइ

२२८.**दृष्टिएँ**/ दृष्टियेँ

२२९.**आ** (come)/ आऽ(conjunction)

२३०.

आ (conjunction)/ आऽ(come)

२३१.**कुनो**/ **कोनो,** कोना/**केना**

२३२.गेलैन्ह-**गेलन्हि-गेलनि**

२३३.**हेबाक**- होएबाक

२३४.केलौँ- कएलौँ-कएलहुँ/**केलौँ**

२३५.किछु न किछ- **किछु ने किछु**

२३६.केहेन- **केहन**

२३७.आऽ (come)-**आ** (conjunction-and)/**आ**। आब'-आब' **/आबह-आबह**

२३८. **हएत**-हैत

२३९.घुमेलहुँ-घुमएलहुँ- **घुमेलौँ**

२४०.**एलाक**- अएलाक

२४१.होनि- **होइन/ होन्हि/**

२४२.**ओ**-राम ओ श्यामक बीच(conjunction), ओऽ कहलक (he said)/**ओ**

२४३.**की हए/ कोसी अएली हए/** की है। की हइ

२४४.**दृष्टिएँ**/ दृष्टियेँ

२४५

.**शामिल**/ सामेल

२४६.तैँ / **तेँए/** तञि/ तहिँ

२४७.**जौँ**

/ ज्योँ/ जँ/

२४८.**सभ**/ सब

२४९.सभक/ **सबहक**

२५०.कर्हि/ **कहीं**

२५१.**कुनो/ कोनो/** कोनहुँ/

२५२.**फारकती** भऽ **गेल/ भए गेल/** भय गेल

२५३.**कोना/ केना/** कन्ना/**कना**

२५४.**अः/** अह

२५५.**जनै/** जनञ

२५६.**गेलनि/**

गेलाह (अर्थ परिवर्तन)

२५७.केलन्हि/ कएलन्हि/ **केलनि/**

२५८.लय/ **लए/ लएह** (अर्थ परिवर्तन)

२५९.**कनीक/ कनेक/कनी-मनी**

२६०.**पठेलन्हि पठेलनि/** पठेलइन/ पपठओलन्हि/ **पठबौलनि/**

२६१.**निअम/** नियम

२६२.**हेक्टेअर/** हेक्टेयर

२६३.पहिल अक्षर रहने ढ/ बीचमे रहने ढ़

२६४.आकारान्तमे बिकारीक प्रयोग उचित नै/ अपोस्ट्रोफीक प्रयोग फान्टक तकनीकी न्यूनताक परिचायक ओकर बदला अवग्रह (बिकारी) क प्रयोग उचित

२६५.**केर (पद्यमे ग्राह्य)** / -**क/** कऽ/ के

२६६.छौन्हि- **छन्हि**

२६७.**लगैए/** लगैये

२६८.होएत/ **हएत**

२६९.**जाएत**/ जएत/

२७०.**आएत**/ अएत/ **आओत**

२७१

.**खाएत**/ खएत/ खैत

२७२.पिअएबाक/ **पिएबाक/पियेबाक**

२७३.**शुरु**/ **शुरुह**

२७४.**शुरुहे**/ **शुरुए**

२७५.अएताह/अओताह/ **एताह/ औताह**

२७६.जाहि/ जाइ/ **जइ**/ **जै/**

२७७.**जाइत**/ जैतए/ **जइतए**

२७८.**आएल**/ अएल

२७९.कैक/ **कएक**

२८०.आयल/ अएल/ **आएल**

२८१. **जाए**/ जअए/ जए (लालति जाए लगलीह।)

२८२. नुकएल/ **नुकाएल**

२८३. **कठुआएल**/ कठुअएल

२८४. ताहि/ **तै**/ **तइ**

२८५. गायब/ **गाएब**/ गएब

२८६. **सकै**/ **सकए**/ सकय

२८७.**सेरा/सरा**/ **सराए** (भात सरा गेल)

२८८.कहैत रही/देखैत रही/ कहैत छलौं/ कहै छलौं- अहिना चलैत/ पढ़ैत

(पढ़ै-पढ़ैत अर्थ कखनो काल परिवर्तित) - आर बुझै/ बुझैत (बुझै/ बुझै छी, मुदा बुझैत-बुझैत)/ सकैत/ सकै। करैत/ करै। दै/ दैत। छैक/ छै। बचलै/ बचलैक। रखबा/ रखबाक । बिनु/ बिन। रातिक/ रातुक बुझै आ बुझैत केर अपन-अपन जगहपर प्रयोग समीचीन अछि। बुझैत-बुझैत आब बुझलिऐ। हमहूँ बुझै छी।

२८९. दुआरे/ द्वारे

२९०.भेटि/ भेट/ भेँट

२९१.

खन/ खीन/ खुना (भोर खन/ भोर खीन)

२९२.तक/ धरि

२९३.गऽ/ गै (meaning different-जनबै गऽ)

२९४.सऽ/ सँ (मुदा दऽ, लऽ)

२९५.त्त्व,(तीन अक्षरक मेल बदला पुनरुक्तिक एक आ एकटा दोसरक उपयोग) आदिक बदला त्व आदि। महत्त्व/ महत्व/ कर्ता/ कर्त्ता आदिमे त्त संयुक्तक कोनो आवश्यकता मैथिलीमे नै अछि। वक्तव्य

२९६.बेसी/ बेशी

२९७.बाला/वाला बला/ वला (रहैबला)

२९८

.वाली/ (बदलैवाली)

२९९.वार्त्ता/ वार्ता
३००. अन्तर्राष्ट्रिय/ अन्तर्राष्ट्रीय
३०१. लेमए/ लेबए
३०२.लमछुरका, नमछुरका
३०२.लागै/ लगै (
भेटैत/ भेटै)
३०३.लागल/ लगल
३०४.हबा/ हवा
३०५.राखलक/ रखलक
३०६.आ (come)/ आ (and)
३०७. पश्चाताप/ पश्चात्ताप
३०८. ऽ केर व्यवहार शब्दक अन्तमे मात्र, यथासंभव बीचमे नै।
३०९.कहैत/ कहै
३१०.
रहए (छल)/ रहै (छलै) (meaning different)
३११.तागति/ ताकति
३१२.खराप/ खराब
३१३.बोइन/ बोनि/ बोइनि
३१४.जाठि/ जाइठ
३१५.कागज/ कागच/ कागत
३१६.गिरै (meaning different- swallow)/ गिरए (खसए)
३१७.राष्ट्रिय/ राष्ट्रीय

Festivals of Mithila

DATE-LIST (year- 2010-11)

(१४१८ साल)

Marriage Days:

Nov.2010- 19

Dec.2010- 3,8

January 2011- 17, 21, 23, 24, 26, 27, 28 31

Feb.2011- 3, 4, 7, 9, 18, 20, 24, 25, 27, 28

March 2011- 2, 7

May 2011- 11, 12, 13, 18, 19, 20, 22, 23, 29, 30

June 2011- 1, 2, 3, 8, 9, 10, 12, 13, 19, 20, 26, 29

Upanayana Days:

February 2011- 8

March 2011- 7

May 2011- 12, 13

June 2011- 6, 12

Dviragaman Din:

November 2010- 19, 22, 25, 26

December 2010- 6, 8, 9, 10, 12

February 2011- 20, 21

March 2011- 6, 7, 9, 13

April 2011- 17, 18, 22

May 2011- 5, 6, 8, 13

Mundan Din:

November 2010- 24, 26

December 2010- 10, 17

February 2011- 4, 16, 21

March 2011- 7, 9

April 2011- 22

May 2011- 6, 9, 19

June 2011- 3, 6, 10, 20

FESTIVALS OF MITHILA

Mauna Panchami-31 July

Somavati Amavasya Vrat- 1 August

Madhushravani-12 August

Nag Panchami- 14 August

Raksha Bandhan- 24 Aug

Krishnastami- 01 September

Kushi Amavasya- 08 September

Hartalika Teej- 11 September

ChauthChandra-11 September

Vishwakarma Pooja- 17 September

Karma Dharma Ekadashi-19 September

Indra Pooja Aarambh- 20 September

Anant Caturdashi- 22 Sep

Agastyarghadaan- 23 Sep

Pitri Paksha begins- 24 Sep

Jimootavahan Vrata/ Jitia-30 Sep

Matri Navami- 02 October

Kalashsthapan- 08 October

Belnauti- 13 October

Patrika Pravesh- 14 October

Mahastami- 15 October

Maha Navami - 16-17 October

Vijaya Dashami- 18 October

Kojagara- 22 Oct

Dhanteras- 3 November

Diyabati, shyama pooja- 5 November

Annakoota/ Govardhana Pooja-07 November

Bhratridwitiya/ Chitragupta Pooja-08 November

Chhathi- -12 November

Akshyay Navami- 15 November

Devotthan Ekadashi- 17 November

Kartik Poornima/ Sama Bisarjan- 21 Nov

Shaa. ravivratarambh- 21 November

Navanna parvan- 24 -26 November

Vivaha Panchmi- 10 December

Naraknivaran chaturdashi- 01 February

Makara/ Teela Sankranti-15 Jan

Basant Panchami/ Saraswati Pooja- 08 Februaqry

Achla Saptmi- 10 February

Mahashivaratri-03 March

Holikadahan-Fagua-19 March

Holi-20 Mar

Varuni Yoga- 31 March

va.navaratrarambh- 4 April

vaa. Chhathi vrata- 9 April

Ram Navami- 12 April

Mesha Sankranti-Satuani-14 April

Jurishital-15 April

Somavati Amavasya Vrata- 02 May

Ravi Brat Ant- 08 May

Akshaya Tritiya-06 May

Janaki Navami- 12 May

Vat Savitri-barasait- 01 June

Ganga Dashhara-11 June

Jagannath Rath Yatra- 3 July

Hari Sayan Ekadashi- 11 Jul

Aashadhi Guru Poornima-15 Jul

VIDEHA ARCHIVE

१.विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक ब्रेल, तिरहुता आ देवनागरी रूपमे Videha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

विदेह ई-पत्रिकाक पहिल ५० अंक

विदेह ई-पत्रिकाक ५०म सँ आगाँक अंक

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

३.मैथिली ऑडियो संकलन Maithili Audio Downloads

४.मैथिली वीडियोक संकलन Maithili Videos

५.मिथिला चित्रकला/ आधुनिक चित्रकला आ चित्र Mithila Painting/ Modern Art and Photos

"विदेह"क एहि सभ सहयोगी लिंकपर सेहो एक बेर जाऊ।

६.विदेह मैथिली क्विज :
http://videhaquiz.blogspot.com/

७.विदेह मैथिली जालवृत्त एग्रीगेटर :

http://videha-aggregator.blogspot.com/
८.विदेह मैथिली साहित्य अंग्रेजीमे अनूदित

http://madhubani-art.blogspot.com/
९.विदेहक पूर्व-रूप "भालसरिक गाछ" :

http://gajendrathakur.blogspot.com/
१०.विदेह इंडेक्स :

http://videha123.blogspot.com/
११.विदेह फाइल :

http://videha123.wordpress.com/

१२. विदेह: सदेह : पहिल तिरहुता (मिथिलाक्षर) जालवृत्त (ब्लॉग)

http://videha-sadeha.blogspot.com/

१३. विदेह:ब्रेल: मैथिली ब्रेलमे: पहिल बेर विदेह द्वारा

http://videha-braille.blogspot.com/

१४. *VIDEHA* IST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

http://videha-archive.blogspot.com/

१५. *विदेह* प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मैथिली पोथीक आर्काइव

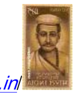
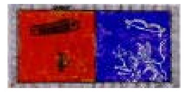
http://videha-pothi.blogspot.com/

१६. *विदेह* प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका ऑडियो आर्काइव

http://videha-audio.blogspot.com/

१७. *विदेह* प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका वीडियो आर्काइव

http://videha-video.blogspot.com/

१८. *विदेह* प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

http://videha-paintings-photos.blogspot.com/

१९. मैथिल आर मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जालवृत्त)

http://maithilaurmithila.blogspot.com/

२०.श्रुति प्रकाशन

http://www.shruti-publication.com/

२१.http://groups.google.com/group/videha

Google समूह

VIDEHA केर सदस्यता लिअ

ईमेल : ???? ???

एहि समूहपर जाऊ

२२.http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/

Subscribe to VIDEHA

enter email address Join Now!

Powered by us.groups.yahoo.com

२३.गजेन्द्र ठाकुर इडेक्स

http://gajendrathakur123.blogspot.com

२४.विदेह रेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल पोडकास्ट साइट

http://videha123radio.wordpress.com/

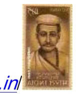
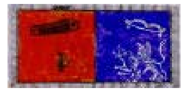
२५. नेना भुटका

http://mangan-khabas.blogspot.com/

महत्त्वपूर्ण सूचना:(१) 'विदेह' द्वारा धारावाहिक रूपे ई-प्रकाशित कएल गेल गजेन्द्र ठाकुरक निबन्ध-प्रबन्ध-समीक्षा, उपन्यास (सहस्रबाढ़नि) , पद्य-संग्रह (सहस्राब्दीक चौपड़पर), कथा-गल्प (गल्प-गुच्छ), नाटक(संकर्षण), महाकाव्य (त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन) आ बाल-किशोर साहित्य विदेहमे संपूर्ण ई-प्रकाशनक बाद प्रिंट फॉर्ममे। कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक खण्ड-१ सँ ७ Combined ISBN No.978-81-907729-7-6 विवरण एहि पृष्ठपर नीचाँमे आ प्रकाशकक साइट http://www.shruti-publication.com/ पर ।

महत्त्वपूर्ण सूचना (२):सूचना: विदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष (इंटरनेटपर पहिल बेर सर्च-डिक्शनरी) एम.एस. एस.क्यू.एल. सर्वर आधारित -Based on ms-sql server Maithili-English and English-Maithili Dictionary. विदेहक भाषापाक- रचनालेखन स्तंभमे।

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक- गजेन्द्र ठाकुर



 ISSN 2229-547X VIDEHA



गजेन्द्र ठाकुरक निबन्ध-प्रबन्ध-समीक्षा, उपन्यास (सहस्रबाढ़नि) , पद्य-संग्रह (सहस्राब्दीक चौपड़पर), कथा-गल्प (गल्प गुच्छ), नाटक(संकर्षण), महाकाव्य (त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन) आ बालमंडली-किशोरजगत विदेहमे संपूर्ण ई-प्रकाशनक बाद प्रिंट फॉर्ममे। कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, खण्ड-१ सँ ७

Ist edition 2009 of Gajendra Thakur's KuruKshetram-Antarmanak (Vol. I to VII)- essay-paper-criticism, novel, poems, story, play, epics and Children-grown-ups literature in single binding:

Language:Maithili

६९२ पृष्ठ : मूल्य भा. रु. 100/-(for individual buyers inside india)

(add courier charges Rs.50/-per copy for Delhi/NCR and Rs.100/- per copy for outside Delhi)

For Libraries and overseas buyers $40 US (including postage)

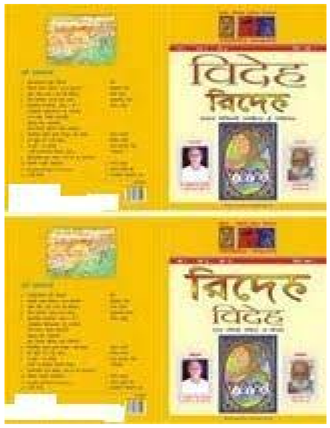
The book is AVAILABLE FOR PDF DOWNLOAD AT

https://sites.google.com/a/videha.com/videha/

http://videha123.wordpress.com/

Details for purchase available at print-version publishers's site
website: http://www.shruti-publication.com/
or you may write to
e-mail:shruti.publication@shruti-publication.com

विदेह: सदेह : १: २: ३: ४ तिरहुता : देवनागरी "विदेह" क, प्रिंट संस्करण :विदेह-ई-पत्रिका (http://www.videha.co.in/) क चुनल रचना सम्मिलित।



विदेह:सदेह:१: २: ३: ४

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।

Details for purchase available at print-version publishers's site http://www.shruti-publication.com or you may write to shruti.publication@shruti-publication.com

२. संदेश-

[विदेह ई-पत्रिका, विदेह:सदेह मिथिलाक्षर आ देवनागरी आ गजेन्द्र ठाकुरक सात खण्डक- निबन्ध-प्रबन्ध-समीक्षा,उपन्यास (सहस्रबाढ़नि) , पद्य-संग्रह (सहस्राब्दीक चौपड़पर), कथा-गल्प (गल्प गुच्छ), नाटक (संकर्षण), महाकाव्य (त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन) आ बाल-मंडली-किशोर जगत- संग्रह *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* मादेँ।]

१.श्री गोविन्द झा- विदेहकेँ तरंगजालपर उतारि विश्वभरिमे मातृभाषा मैथिलीक लहरि जगाओल, खेद जे अपनेक एहि महाभियानमे हम एखन धरि संग नहि दए सकलहुँ। सुनैत छी अपनेकेँ सुझाओ आ रचनात्मक आलोचना प्रिय लगैत अछि तेँ किछु लिखक मोन भेल। हमर सहायता आ सहयोग अपनेकेँ सदा उपलब्ध रहत।

२.श्री रमानन्द रेणु- मैथिलीमे ई-पत्रिका पाक्षिक रूपेँ चला कऽ जे अपन मातृभाषाक प्रचार कऽ रहल छी, से धन्यवाद । आगाँ अपनेक समस्त मैथिलीक कार्यक हेतु हम हृदयसँ शुभकामना दऽ रहल छी।

३.श्री विद्यानाथ झा "विदित"- संचार आ प्रौद्योगिकीक एहि प्रतिस्पर्धी ग्लोबल युगमे अपन महिमामय "विदेह"केँ अपना देहमे प्रकट देखि जतबा प्रसन्नता आ संतोष भेल, तकरा कोनो उपलब्ध "मीटर"सँ नहि नापल जा सकैछ? ..एकर ऐतिहासिक मूल्यांकन आ सांस्कृतिक प्रतिफलन एहि शताब्दीक अंत धरि लोकक नजरिमे आश्चर्यजनक रूपसँ प्रकट हैत।

४. प्रो. उदय नारायण सिंह "नचिकेता"- जे काज अहाँ कए रहल छी तकर चरचा एक दिन मैथिली भाषाक इतिहासमे होएत। आनन्द भए रहल अछि, ई जानि कए जे एतेक गोट मैथिल "विदेह" ई जर्नलकेँ पढ़ि रहल छथि।...विदेहक चालीसम अंक पुरबाक लेल अभिनन्दन।

५. डॉ. गंगेश गुंजन- एहि विदेह-कर्ममे लागि रहल अहाँक सम्वेदनशील मन, मैथिलीक प्रति समर्पित मेहनतिक अमृत रंग, इतिहास मे एक टा विशिष्ट फराक अध्याय आरंभ करत, हमरा विश्वास अछि। अशेष शुभकामना आ बधाइक सङ्ग, सस्नेह...अहाँक पोथी *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* प्रथम दृष्टया बहुत भव्य तथा उपयोगी बुझाइछ। मैथिलीमे तँ अपना स्वरूपक प्रायः ई पहिले एहन भव्य अवतारक पोथी थिक। हर्षपूर्ण हमर हार्दिक बधाई स्वीकार करी।

६. श्री रामाश्रय झा "रामरंग"(आब स्वर्गीय)- "अपना" मिथिलासँ संबंधित...विषय वस्तुसँ अवगत भेलहुँ।...शेष सभ कुशल अछि।

७. श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी- साहित्य अकादमी- इंटरनेट पर प्रथम मैथिली पाक्षिक पत्रिका "विदेह" केर लेल बधाई आ शुभकामना स्वीकार करू।

८. श्री प्रफुल्लकुमार सिंह "मौन"- प्रथम मैथिली पाक्षिक पत्रिका "विदेह" क प्रकाशनक समाचार जानि कनेक चकित मुदा बेसी

आह्लादित भेलहुँ। कालचक्रकेँ पकड़ि जाहि दूरदृष्टिक परिचय देलहुँ, ओहि लेल हमर मंगलकामना।

९.डॉ. शिवप्रसाद यादव- ई जानि अपार हर्ष भए रहल अछि, जे नव सूचना-क्रान्तिक क्षेत्रमे मैथिली पत्रकारिताकेँ प्रवेश दिअएबाक साहसिक कदम उठाओल अछि। पत्रकारितामे एहि प्रकारक नव प्रयोगक हम स्वागत करैत छी, संगहि "विदेह"क सफलताक शुभकामना।

१०. श्री आद्याचरण झा- कोनो पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन- ताहूमे मैथिली पत्रिकाक प्रकाशनमे के कतेक सहयोग करताह- ई तऽ भविष्य कहत। ई हमर ८८ वर्षमे ७५ वर्षक अनुभव रहल। एतेक पैघ महान यज्ञमे हमर श्रद्धापूर्ण आहुति प्राप्त होयत- यावत ठीक-ठाक छी/ रहब।

११. श्री विजय ठाकुर- मिशिगन विश्वविद्यालय- "विदेह" पत्रिकाक अंक देखलहुँ, सम्पूर्ण टीम बधाईक पात्र अछि। पत्रिकाक मंगल भविष्य हेतु हमर शुभकामना स्वीकार कएल जाओ।

१२. श्री सुभाषचन्द्र यादव- ई-पत्रिका "विदेह" क बारेमे जानि प्रसन्नता भेल। 'विदेह' निरन्तर पल्लवित-पुष्पित हो आ चतुर्दिक अपन सुगंध पसारय से कामना अछि।

१३. श्री मैथिलीपुत्र प्रदीप- ई-पत्रिका "विदेह" केर सफलताक भगवतीसँ कामना। हमर पूर्ण सहयोग रहत।

१४. डॉ. श्री भीमनाथ झा- "विदेह" इन्टरनेट पर अछि तेँ "विदेह" नाम उचित आर कतेक रूपेँ एकर विवरण भए सकैत अछि। आइ-काल्हि मोनमे उद्वेग रहैत अछि, मुदा शीघ्र पूर्ण सहयोग देब।*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* देखि अति प्रसन्नता भेल। मैथिलीक लेल ई घटना छी।

१५. श्री रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"- जनकपुरधाम- "विदेह" ऑनलाइन देखि रहल छी। मैथिलीकेँ अन्तर्राष्ट्रीय जगतमे पहुँचेलहुँ तकरा लेल हार्दिक बधाई। मिथिला रत्न सभक संकलन अपूर्व। नेपालोक सहयोग भेटत, से विश्वास करी।

१६. श्री राजनन्दन लालदास- "विदेह" ई-पत्रिकाक माध्यमसँ बड़ नीक काज कए रहल छी, नातिक अहिठाम देखलहुँ। एकर वार्षिक अंक जखन प्रिंट निकालब तँ हमरा पठायब। कलकत्तामे बहुत गोटेकेँ हम साइटक पता लिखाए देने छियन्हि। मोन तँ होइत अछि जे दिल्ली आबि कए आशीर्वाद दैतहुँ, मुदा उमर आब बेशी भए गेल। शुभकामना देश-विदेशक मैथिलकेँ जोड़बाक लेल।.. उत्कृष्ट प्रकाशन *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* लेल बधाइ। अद्भुत काज कएल अछि, नीक प्रस्तुति अछि सात खण्डमे। मुदा अहाँक सेवा आ से

निःस्वार्थ तखन बूझल जाइत जँ अहाँ द्वारा प्रकाशित पोथी सभपर दाम लिखल नहि रहितैक। ओहिना सभकेँ विलहि देल जइतैक। (स्पष्टीकरण- श्रीमान्, अहाँक सूचनार्थ विदेह द्वारा ई-प्रकाशित कएल सभटा सामग्री आर्काइवमे https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/ पर बिना मूल्यक डाउनलोड लेल उपलब्ध छै आ भविष्यमे सेहो रहतैक। एहि आर्काइवकेँ जे कियो प्रकाशक अनुमति लऽ कऽ प्रिंट रूपमे प्रकाशित कएने छथि आ तकर ओ दाम रखने छथि ताहिपर हमर कोनो नियंत्रण नहि अछि।- गजेन्द्र ठाकुर)... अहाँक प्रति अशेष शुभकामनाक संग।

१७. डॉ. प्रेमशंकर सिंह- अहाँ मैथिलीमे इंटरनेटपर पहिल पत्रिका "विदेह" प्रकाशित कए अपन अद्भुत मातृभाषानुरागक परिचय देल अछि, अहाँक निःस्वार्थ मातृभाषानुरागसँ प्रेरित छी, एकर निमित्त जे हमर सेवाक प्रयोजन हो, तँ सूचित करी। इंटरनेटपर आद्योपांत पत्रिका देखल, मन प्रफुल्लित भऽ गेल।

१८.श्रीमती शेफालिका वर्मा- विदेह ई-पत्रिका देखि मोन उल्लाससँ भरि गेल। विज्ञान कतेक प्रगति कऽ रहल अछि...अहाँ सभ अनन्त आकाशकेँ भेदि दियौ, समस्त विस्तारक रहस्यकेँ तार-तार कऽ दियौक...। अपनेक अद्भुत पुस्तक कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक विषयवस्तुक दृष्टिसँ गागरमे सागर अछि। बधाई।

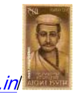
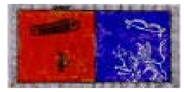
१९.श्री हेतुकर झा, पटना-जाहि समर्पण भावसँ अपने मिथिला-मैथिलीक सेवामे तत्पर छी से स्तुत्य अछि। देशक राजधानीसँ भय रहल मैथिलीक शंखनाद मिथिलाक गाम-गाममे मैथिली चेतनाक विकास अवश्य करत।

२०. श्री योगानन्द झा, कबिलपुर, लहेरियासराय- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पोथीकेँ निकटसँ देखबाक अवसर भेटल अछि आ मैथिली जगतक एकटा उद्भट ओ समसामयिक दृष्टिसम्पन्न हस्ताक्षरक कलमबन्द परिचयसँ आह्लादित छी। "विदेह"क देवनागरी सँस्करण पटनामे रु. 80/- मे उपलब्ध भऽ सकल जे विभिन्न लेखक लोकनिक छायाचित्र, परिचय पत्रक ओ रचनावलीक सम्यक प्रकाशनसँ ऐतिहासिक कहल जा सकैछ।

२१. श्री किशोरीकान्त मिश्र- कोलकाता- जय मैथिली, विदेहमे बहुत रास कविता, कथा, रिपोर्ट आदिक सचित्र संग्रह देखि आ आर अधिक प्रसन्नता मिथिलाक्षर देखि- बधाई स्वीकार कएल जाओ।

२२.श्री जीवकान्त- विदेहक मुद्रित अंक पढ़ल- अद्भुत मेहनति। चाबस-चाबस। किछु समालोचना मरखाह..मुदा सत्य।

२३. श्री भालचन्द्र झा- अपनेक *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* देखि बुझाएल जेना हम अपने छपलहुँ अछि। एकर विशालकाय आकृति अपनेक

सर्वसमावेशताक परिचायक अछि। अपनेक रचना सामर्थ्यमे उत्तरोत्तर वृद्धि हो, एहि शुभकामनाक संग हार्दिक बधाई।

२४.श्रीमती डॉ नीता झा- अहाँक *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़लहुँ। ज्योतिरीश्वर शब्दावली, कृषि मत्स्य शब्दावली आ सीत बसन्त आ सभ कथा, कविता, उपन्यास, बाल-किशोर साहित्य सभ उत्तम छल। मैथिलीक उत्तरोत्तर विकासक लक्ष्य दृष्टिगोचर होइत अछि।

२५.श्री मायानन्द मिश्र- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* मे हमर उपन्यास *स्त्रीधनक* जे विरोध कएल गेल अछि तकर हम विरोध करैत छी।... *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पोथीक लेल शुभकामना।(श्रीमान् समालोचनाकेँ विरोधक रूपमे नहि लेल जाए।-गजेन्द्र ठाकुर)

२६.श्री महेन्द्र हजारी- सम्पादक *श्रीमिथिला- कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़ि मोन हर्षित भऽ गेल..एखन पूरा पढ़यमे बहुत समय लागत, मुदा जतेक पढ़लहुँ से आह्लादित कएलक।

२७.श्री केदारनाथ चौधरी- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* अद्भुत लागल, मैथिली साहित्य लेल ई पोथी एकटा प्रतिमान बनत।

२८.श्री सत्यानन्द पाठक- विदेहक हम नियमित पाठक छी। ओकर स्वरूपक प्रशंसक छलहुँ। एम्हर अहाँक लिखल - *कुरुक्षेत्रम्*

अंतर्मनक देखलहुँ। मोन आह्लादित भऽ उठल। कोनो रचना तरा-उपरी।

२९.श्रीमती रमा झा-सम्पादक मिथिला दर्पण। *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* प्रिंट फॉर्म पढ़ि आ एकर गुणवत्ता देखि मोन प्रसन्न भऽ गेल, अद्भुत शब्द एकरा लेल प्रयुक्त कऽ रहल छी। विदेहक उत्तरोत्तर प्रगतिक शुभकामना।

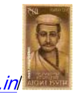
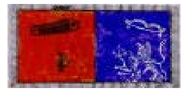
३०.श्री नरेन्द्र झा, पटना- विदेह नियमित देखैत रहैत छी। मैथिली लेल अद्भुत काज कऽ रहल छी।

३१.श्री रामलोचन ठाकुर- कोलकाता- मिथिलाक्षर विदेह देखि मोन प्रसन्नतासँ भरि उठल, अंकक विशाल परिदृश्य आस्वस्तकारी अछि।

३२.श्री तारानन्द वियोगी- विदेह आ *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* देखि चकबिदोर लागि गेल। आश्चर्य। शुभकामना आ बधाई।

३३.श्रीमती प्रेमलता मिश्र "प्रेम"- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़लहुँ। सभ रचना उच्चकोटिक लागल। बधाई।

३४.श्री कीर्तिनारायण मिश्र- बेगूसराय- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* बड्ड नीक लागल, आगांक सभ काज लेल बधाई।



मानुषीमिह संस्कृताम् ISSN 2229-547X VIDEHA

३५.श्री महाप्रकाश-सहरसा- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* नीक लागल, विशालकाय संगहि उत्तमकोटिक।

३६.श्री अग्निपुष्प- मिथिलाक्षर आ देवाक्षर विदेह पढ़ल..ई प्रथम तँ अछि एकरा प्रशंसामे मुदा हम एकरा दुस्साहसिक कहब। मिथिला चित्रकलाक स्तम्भकेँ मुदा अगिला अंकमे आर विस्तृत बनाऊ।

३७.श्री मंजर सुलेमान-दरभंगा- विदेहक जतेक प्रशंसा कएल जाए कम होएत। सभ चीज उत्तम।

३८.श्रीमती प्रोफेसर वीणा ठाकुर- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* उत्तम, पठनीय, विचारनीय। जे क्यो देखैत छथि पोथी प्राप्त करबाक उपाय पुछैत छथि। शुभकामना।

३९.श्री छत्रानन्द सिंह झा- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़लहुँ, बड्ड नीक सभ तरहेँ।

४०.श्री ताराकान्त झा- सम्पादक मैथिली दैनिक मिथिला समाद- विदेह तँ कन्टेन्ट प्रोवाइडरक काज कऽ रहल अछि। कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक अद्भुत लागल।

४१.डॉ रवीन्द्र कुमार चौधरी- कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक बहुत नीक, बहुत मेहनतिक परिणाम। बधाई।

४२.श्री अमरनाथ- कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक आ विदेह दुनू स्मरणीय घटना अछि, मैथिली साहित्य मध्य।

४३.श्री पंचानन मिश्र- विदेहक वैविध्य आ निरन्तरता प्रभावित करैत अछि, शुभकामना।

४४.श्री केदार कानन- कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल अनेक धन्यवाद, शुभकामना आ बधाइ स्वीकार करी। आ नचिकेताक भूमिका पढ़लहुँ। शुरूमे तँ लागल जेना कोनो उपन्यास अहाँ द्वारा सृजित भेल अछि मुदा पोथी उनटौला पर ज्ञात भेल जे एहिमे तँ सभ विधा समाहित अछि।

४५.श्री धनाकर ठाकुर- अहाँ नीक काज कऽ रहल छी। फोटो गैलरीमे चित्र एहि शताब्दीक जन्मतिथिक अनुसार रहैत तऽ नीक।

४६.श्री आशीष झा- अहाँक पुस्तकक संबंधमे एतबा लिखबा सँ अपना कए नहि रोकि सकलहुँ जे ई किताब मात्र किताब नहि थीक, ई एकटा उम्मीद छी जे मैथिली अहाँ सन पुत्रक सेवा सँ निरंतर समृद्ध होइत चिरजीवन कए प्राप्त करत।

४७.श्री शम्भु कुमार सिंह- विदेहक तत्परता आ क्रियाशीलता देखि आह्लादित भऽ रहल छी। निश्चितरूपेण कहल जा सकैछ जे समकालीन मैथिली पत्रिकाक इतिहासमे विदेहक नाम स्वर्णाक्षरमे

लिखल जाएत। ओहि कुरुक्षेत्रक घटना सभ तँ अठारहे दिनमे खतम भऽ गेल रहए मुदा अहाँक *कुरुक्षेत्रम्* तँ अशेष अछि।

४८.डॉ. अजीत मिश्र- अपनेक प्रयासक कतबो प्रशंसा कएल जाए कमे होएतैक। मैथिली साहित्यमे अहाँ द्वारा कएल गेल काज युग-युगान्तर धरि पूजनीय रहत।

४९.श्री बीरेन्द्र मल्लिक- अहाँक *कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* आ *विदेह:सदेह* पढ़ि अति प्रसन्नता भेल। अहाँक स्वास्थ्य ठीक रहए आ उत्साह बनल रहए से कामना।

५०.श्री कुमार राधारमण- अहाँक दिशा-निर्देशमे *विदेह* पहिल मैथिली ई-जर्नल देखि अति प्रसन्नता भेल। हमर शुभकामना।

५१.श्री फूलचन्द्र झा *प्रवीण*-विदेह:सदेह पढ़ने रही मुदा *कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* देखि बढ़ाई देबा लेल बाध्य भऽ गेलहुँ। आब विश्वास भऽ गेल जे मैथिली नहि मरत। अशेष शुभकामना।

५२.श्री विभूति आनन्द- विदेह:सदेह देखि, ओकर विस्तार देखि अति प्रसन्नता भेल।

५३.श्री मानेश्वर मनुज-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* एकर भव्यता देखि अति प्रसन्नता भेल, एतेक विशाल ग्रन्थ मैथिलीमे आइ धरि नहि देखने रही। एहिना भविष्यमे काज करैत रही, शुभकामना।

५४.श्री विद्यानन्द झा- आइ.आइ.एम.कोलकाता- *कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* विस्तार, छपाईक संग गुणवत्ता देखि अति प्रसन्नता भेल।

५५.श्री अरविन्द ठाकुर-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* मैथिली साहित्यमे कएल गेल एहि तरहक पहिल प्रयोग अछि, शुभकामना।

५६.श्री कुमार पवन-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* पढ़ि रहल छी। किछु लघुकथा पढ़ल अछि, बहुत मार्मिक छल।

५७. श्री प्रदीप बिहारी-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* देखल, बधाई।

५८.डॉ मणिकान्त ठाकुर-कैलिफोर्निया- अपन विलक्षण नियमित सेवासँ हमरा लोकनिक हृदयमे विदेह सदेह भऽ गेल अछि।

५९.श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि- अहाँक समस्त प्रयास सराहनीय। दुख होइत अछि जखन अहाँक प्रयासमे अपेक्षित सहयोग नहि कऽ पबैत छी।

६०.श्री देवशंकर नवीन- विदेहक निरन्तरता आ विशाल स्वरूप- विशाल पाठक वर्ग, एकरा ऐतिहासिक बनबैत अछि।

६१.श्री मोहन भारद्वाज- अहाँक समस्त कार्य देखल, बहुत नीक। एखन किछु परेशानीमे छी, मुदा शीघ्र सहयोग देब।

६२.श्री फजलुर रहमान हाशमी-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* मे एतेक मेहनतक लेल अहाँ साधुवादक अधिकारी छी।

६३.श्री लक्ष्मण झा "सागर"- मैथिलीमे चमत्कारिक रूपेँ अहाँक प्रवेश आह्लादकारी अछि।..अहाँकेँ एखन आर..दूर..बहुत दूरधरि जेबाक अछि। स्वस्थ आ प्रसन्न रही।

६४.श्री जगदीश प्रसाद मंडल-*कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* पढ़लहुँ । कथा सभ आ उपन्यास *सहस्रबाढ़नि* पूर्णरूपेँ पढ़ि गेल छी। गाम-घरक भौगोलिक विवरणक जे सूक्ष्म वर्णन सहस्रबाढ़निमे अछि, से चकित कएलक, एहि संग्रहक कथा-उपन्यास मैथिली लेखनमे विविधता अनलक अछि। समालोचना शास्त्रमे अहाँक दृष्टि वैयक्तिक नहि वरन् सामाजिक आ कल्याणकारी अछि, से प्रशंसनीय।

६५.श्री अशोक झा-अध्यक्ष मिथिला विकास परिषद- *कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* लेल बधाई आ आगाँ लेल शुभकामना।

६६.श्री ठाकुर प्रसाद मुर्मु- अद्भुत प्रयास। धन्यवादक संग प्रार्थना जे अपन माटि-पानिकेँ ध्यानमे राखि अंकक समायोजन कएल जाए। नव अंक धरि प्रयास सराहनीय। विदेहकेँ बहुत-बहुत धन्यवाद जे

एहेन सुन्दर-सुन्दर सचार (आलेख) लगा रहल छथि। सभटा ग्रहणीय- पठनीय।

६७.बुद्धिनाथ मिश्र- प्रिय गजेन्द्र जी,अहाँक सम्पादन मे प्रकाशित 'विदेह'आ 'कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक' विलक्षण पत्रिका आ विलक्षण पोथी! की नहि अछि अहाँक सम्पादनमे? एहि प्रयत्न सँ मैथिली क विकास होयत,निस्संदेह।

६८.श्री बृखेश चन्द्र लाल- गजेन्द्रजी, अपनेक पुस्तक *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़ि मोन गदगद भय गेल , हृदयसँ अनुगृहित छी । हार्दिक शुभकामना ।

६९.श्री परमेश्वर कापड़ि - श्री गजेन्द्र जी । *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* पढ़ि गदगद आ नेहाल भेलहुँ।

७०.श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर- विदेह पढ़ैत रहैत छी। धीरेन्द्र प्रेमर्षिक मैथिली गजलपर आलेख पढ़लहुँ। मैथिली गजल कत्तऽ सँ कत्तऽ चलि गेलैक आ ओ अपन आलेखमे मात्र अपन जानल-पहिचानल लोकक चर्च कएने छथि। जेना मैथिलीमे मठक परम्परा रहल अछि। (स्पष्टीकरण- श्रीमान्, प्रेमर्षि जी ओहि आलेखमे ई स्पष्ट लिखने छथि जे किनको नाम जे छुटि गेल छन्हि तँ से मात्र आलेखक लेखकक जानकारी नहि रहबाक द्वारे, एहिमे आन कोनो

कारण नहि देखल जाय। अहाँसँ एहि विषयपर विस्तृत आलेख सादर आमंत्रित अछि।-सम्पादक)

७१.श्री मंत्रेश्वर झा- विदेह पढ़ल आ संगहि अहाँक मैगनम ओपस *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* सेहो, अति उत्तम। मैथिलीक लेल कएल जा रहल अहाँक समस्त कार्य अतुलनीय अछि।

७२. श्री हरेकृष्ण झा- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* मैथिलीमे अपन तरहक एकमात्र ग्रन्थ अछि, एहिमे लेखकक समग्र दृष्टि आ रचना कौशल देखबामे आएल जे लेखकक फील्डवर्कसँ जुड़ल रहबाक कारणसँ अछि।

७३.श्री सुकान्त सोम- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* मे समाजक इतिहास आ वर्तमानसँ अहाँक जुड़ाव बड्ड नीक लागल, अहाँ एहि क्षेत्रमे आर आगाँ काज करब से आशा अछि।

७४.प्रोफेसर मदन मिश्र- *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* सन किताब मैथिलीमे पहिले अछि आ एतेक विशाल संग्रहपर शोध कएल जा सकैत अछि। भविष्यक लेल शुभकामना।

७५.प्रोफेसर कमला चौधरी- मैथिलीमे *कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक* सन पोथी आबए जे गुण आ रूप दुनूमे निस्सन होअए, से बहुत दिनसँ

आकांक्षा छल, ओ आब जा कऽ पूर्ण भेल। पोथी एक हाथसँ दोसर हाथ घुमि रहल अछि, एहिना आगाँ सेहो अहाँसँ आशा अछि।

७६.श्री उदय चन्द्र झा "विनोद": गजेन्द्रजी, अहाँ जतेक काज कएलहुँ अछि से मैथिलीमे आइ धरि कियो नहि कएने छल। शुभकामना। अहाँकेँ एखन बहुत काज आर करबाक अछि।

७७.श्री कृष्ण कुमार कश्यप: गजेन्द्र ठाकुरजी, अहाँसँ भेँट एकटा स्मरणीय क्षण बनि गेल। अहाँ जतेक काज एहि बएसमे कऽ गेल छी ताहिसँ हजार गुणा आर बेशीक आशा अछि।

७८.श्री मणिकान्त दास: अहाँक मैथिलीक कार्यक प्रशंसा लेल शब्द नहि भेटैत अछि। अहाँक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक सम्पूर्ण रूपेँ पढ़ि गेलहुँ। त्वञ्चाहञ्च बड़ड नीक लागल।

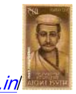
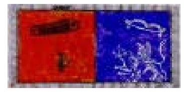
७९. श्री हीरेन्द्र कुमार झा- विदेह ई-पत्रिकाक सभ अंक ई-पत्रसँ भेटैत रहैत अछि। मैथिलीक ई-पत्रिका छैक एहि बातक गर्व होइत अछि। अहाँ आ अहाँक सभ सहयोगीकेँ हार्दिक शुभकामना।

विदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) ggajendra@videha.com कें मेल अटैचमेण्टक रूपमें .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकैत छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक अंतमे टाइप रहय, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकें देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत। 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका अछि आ एहिमे

मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमे मिथिला आ मैथिलीसँ संबंधित रचना प्रकाशित कएल जाइत अछि। एहि ई पत्रिकाकेँ श्रीमति लक्ष्मी ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।




सिद्धिरस्तु